हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● गुरुवार ● 24.10.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 93 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

ईडी ने बंगाल पीडीएस घोटाला मामले में 14 स्थानों पर मारे छापे

कोलकाता : पश्चिम बंगाल में करोड़ों के राशन वितरण घोटाले के मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को बड़े पैमाने पर छापेमारी की। ईडी की टीमों ने कोलकाता और हावड़ा के कई इलाकों में एक साथ 14 स्थानों पर छापेमारी और तलाशी अभियान चलाया। एक अधिकारी के अनुसार, ईडी के अधिकारियों ने कोलकाता और हावड़ा जिले में अधिकांश स्थानों पर छापेमारी की। ईडी की टीमों के साथ केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) के जवान मौजूद थे। ईडी ने सबसे पहले कोलकाता के दक्षिणी हिस्से में बांगुर एवेन्यू स्थित व्यापारी महेंद्र अग्रवाल के दो आवासों पर छापेमारी की। यहां छापेमारी के साथ ही ईडी की टीम अग्रवाल से पूछताछ भी कर रही है। दूसरी जगह, कोलकाता के पास हावड़ा जिले के पंचला में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के डीलर लोकनाथ साहा के आवास और गोदाम पर छापा मारा गया। इसके अलावा, ईडी के अधिकारी उन पीडीएस डीलरों के आवासों और दुकानों पर भी छापेमारी कर रहे हैं, जिनकी पिछले कुछ समय से इस घोटाले में संलिप्तता की जांच हो रही है। उल्लेखनीय है कि सितंबर के अंतिम सप्ताह में ईडी ने कोलकाता की एक विशेष अदालत में एक पूरक आरोप पत्र दाखिल किया था, जिसमें आठ नए नाम जोड़े गए थे। इन आठ नामों में उत्तर 24 परगना जिले के देगंगा से तृणमूल कांग्रेस के दो नेता, अनिसुर रहमान और उनके भाई अलिफ नूर उर्फ मुकुल रहमान, जो एक व्यवसायी हैं, शामिल हैं।

विश्व के 150 देशों में 29 को मनाया जाएगा 'आयुर्वेद दिवस'

नई दिल्ली : इस वर्ष दुनिया भर के 150 से अधिक देशों में आयुर्वेद दिवस मनाया जाएगा। आयुष मंत्रालय वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार थीम पर 29 अक्टूबर को 9वां आयुर्वेद दिवस मनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। बुधवार को आयुष मंत्रालय की तरफ से बताया गया है कि आयुर्वेद दिवस के दिन अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन की तैयारियों की समीक्षा के बाद केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रतापराव जाधव ने बताया कि आयुर्वेद दिवस अब वैश्विक अभियान बन चुका है। इस वर्ष 150 से अधिक देशों में आयुर्वेद दिवस समारोह मनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस वर्ष की थीम वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद नवाचार से वैश्विक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद के योगदान को नई दिशा देती है। दिवस का उद्देश्य जन कल्याण के लिए आयुर्वेद को सशक्त चिकित्सा प्रणाली के रूप में वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना है। इसके तहत अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान ने देशभर में एक महीने तक चलने वाले कार्यक्रमों की शुरूआत की है। मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने बताया कि आयुर्वेद दिवस उत्सव के माध्यम से आयुष गैर-संचारी रोगों, मानसिक स्वास्थ्य, एंटीमाइक्रोबियल रसिस्टेंस और वृद्धावस्था देखभाल (जीरिआर्टिक केयर) सहित महत्वपूर्ण स्वास्थ्य विषयों के लिए समकालीन विज्ञान के साथ आयुर्वेद को एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करता है। आयुर्वेद का ज्ञान विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से आम जनता के लिए आसानी से उपलब्ध कराया जा रहा है।

भारत ब्रिक्स के विस्तार का समर्थक, आम राय से हो फैसला : प्रधानमंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को विस्तारित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लिया। इस दौरान अपने वक्तव्य में नए सदस्यों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि भारत ब्रिक्स के विस्तार का समर्थक है। उन्होंने यह भी कहा कि विस्तार का निर्णय सर्वसम्मति से होना चाहिए। इसके अलावा संस्थापक सदस्य देशों की राय का सम्मान भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स एक विविधतापूर्ण और सर्वसमावेशी मंच है तथा यह विभाजनकारी नहीं बल्कि लोगों की भलाई के लिए प्रेरित समूह है। रूस के शहर कजान में आज आयोजित 16वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में अपने वक्तव्य में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बैठक एक ऐसे समय में हो रही है जब विश्व युद्धों, संघर्षों, आर्थिक अनिश्चितता, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद जैसी अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है। विश्व में नार्थ-साउथ और पूर्व-पश्चिम विभाजन की बात हो रही है। ऐसे में ब्रिक्स की सकारात्मक भूमिका को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि विश्व समस्याओं के बारे में हमारा रवैया मानव केंद्रित होना चाहिए। हमें विश्व को यह संदेश देना चाहिए कि ब्रिक्स विभाजनकारी नहीं बल्कि जनहितकारी समूह है। ब्रिक्स समय के साथ खुद को बदलने की इच्छा-शक्ति रखने वाला संगठन है। हमें अपना उदाहरण पूरे विश्व के सामने रखते हुए वैश्विक संस्थानों में

सुधार के लिए एकमत होकर आवाज उठानी चाहिए। आतंकवाद और युवाओं में बढ़ते उग्रवादी विचारों के प्रभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि इस चुनौती से निपटने के लिए हमें दोहरे मापदंड नहीं अपनाने चाहिए। आतंकवाद की फंडिंग से निपटने के लिए हम सभी को एक मत होकर दृढ़ता से सहयोग देना होगा। हमारे देशों के युवाओं में उग्रवाद को रोकने के लिए सक्रिय रूप से कदम उठाने चाहिए। उल्लेखनीय है कि विस्तारित ब्रिक्स का आज पहला शिखर सम्मेलन है। इसमें भारत, रूस, चीन, दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील के साथ ही नए सदस्य देशों में ईरान, इथोपिया, यूएई और मिस्र के नेता शिरकर कर रहे हैं। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मेजबान रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपने प्रारंभिक संबोधन में कहा था कि 30 से अधिक देश ब्रिक्स में शामिल होने के इच्छुक हैं। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स के सदस्य देश संगठन के विस्तार पर विचार करेंगे तथा इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि यह संगठन कार्यकुशल बना रहे। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, बहुपक्षीय विकास बैंक, डब्ल्यूटीओ जैसे वैश्विक संस्थानों में बदलाव के लिए समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए। ब्रिक्स के प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए हमें ध्यान रखना चाहिए कि इस संगठन की छवि ऐसी न बने कि हम वैश्विक संस्थान में बदलाव नहीं, बल्कि उन्हें बदलना चाहते हैं। ग्लोबल साउथ के देशों की आशाओं, आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। महंगाई की रोकथाम, फूड सिक्योरिटी, ऊर्जा सिक्योरिटी, हेल्थ सिक्योरिटी, जल सुरक्षा सिक्योरिटी, सभी देशों के लिए प्राथमिकता के विषय हैं।

कुछ अपने ही लोग बीजेपी का एजेंट बनकर आपसे वोट मांगने आयेंगे, उनसे सावधान रहिएगा : हेमन्त सोरेन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

घाटशिला : सीएम हेमन्त सोरेन आज घाटशिला में झामुमो उम्मीदवार रामदास सोरेन के नामांकन में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि कुछ अपने ही लोग अब भाजपा का एजेंट बनकर आपसे वोट मांगने आयेंगे, उनसे सावधान रहिएगा। सोरेन ने कहा, राज्य में केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच चुनावी जंग शुरू हो चुकी है। एक तरफ झारखंड मुक्ति मोर्चा की सरकार है और दूसरी तरफ बीजेपी की सरकार है। एक तरफ पूंजीपतियों की सरकार और दूसरी तरफ आदिवासी, दलित, पिछड़े और दबे कुचलों की सरकार। कहा, हमारे पूर्वजों ने लड़कर अपनी शहादत देकर अलग राज्य के लिए

संघर्ष किया। हमारा ध्यान पहले इसी बात रहता था कि कैसे हमको अपना राज्य मिलेगा। कैसे यहां आबुआ राज होगा। कैसे लेंगे झारखंड, लड़कर लेंगे झारखंड, यही नारा हर तरफ गूंजता था। हम अपने लोगों को विधायक और सांसद कैसे बनायेंगे ये हमको समझ में नहीं आता था। सीएम ने कहा, 2000 में अलग राज तो मिल गया, लेकिन हमने जो सोचा था कि राज्य मिल जायेगा तो सब ठीक हो जायेगा, ऐसा हुआ नहीं। कहा, अलग राज के लिए शहीद निर्मल महतो, शिबू सोरेन जैसे नेताओं ने अपना बचपन और जवानी सब न्योछावर किया। कहा कि हमारे नेता शहीद होते थे और बीजेपी के नेता विधायक और सांसद बनते थे। लड़कर झारखंड तो हमने लिया लेकिन सत्ता पर काबिज हो गये बीजेपी के लोग। इस राज्य में बीजेपी ने 20 साल तक ऐसा राज चलाया कि हाथ में लोग राशन कार्ड लेकर, इधर उधर भागते हुए मर गये। भूख से मौत किसी राज के लिए अभिशाप की तरह होती है। हेमंत ने कहा, 2019 में हमने गठबंधन की सरकार बनाई है। इसके लिए भी बहुत संघर्ष हुए हैं। सरकार बनाते ही हमारे सामने कोरोना की चुनौती आ गयी। दुनियाभर में ऐसा लगा कि मानव जीवन खत्म हो जायेगा। बीजेपी की सरकार ने बिना सोचे समझे, पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया। देश में दुकान, बाजार, हाट और फैक्ट्री सब बंद हो गये। हमारे जो भाई दूसरे राज्यों में काम करने गये थे, उनको काम से निकाल दिया गया। जबकि हमारे लोगों की हालत ऐसी है कि अगर वो एक दिन काम नहीं करे तो उसके घर में चूल्हा भी नहीं जलेगा। राज्य की गरीबी के बावजूद हमने इस स्थिति का सामना किया। हमने अपने मजदूर भाइयों को देश और विदेश तक से एयर लिफ्ट करके राज्य में बुलाया। ऐसी हालत में भी हमने एक भी आदमी को भूख से मरने नहीं दिया। झारखंड पहला ऐसा राज्य बना जो कोरोनकाल में अपने मजदूर भाइयों को हवाई मार्ग से उनके घर आने के प्रबंध किया। कहा कि कोरोना में लोगों को बचाने के लिए हमारे मंत्री और साथी दिन रात लगे रहे। उन्होंने राज्य के लोगों को तो बचा लिया लेकिन हमारे दो मंत्री इसमें नहीं रहे। हाजी हुसैन अंसारी और जगरनाथ महतो कोरोना काल में लोगों की सेवा के दौरान चल बसे।

धनबाद में इनोवा कार से 71 लाख 97 हजार रुपये बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : तेलमच्चो स्थित धनबाद-बोकारो इंटर डिस्ट्रिक्ट चेक पोस्ट पर बुधवार तड़के तीन बजे एक टोयोटा इनोवा क्रिस्टा कार (जेएच 10 बीवाई 9655) जो बोकारो से धनबाद में प्रवेश कर रही थी, उसकी जांच के दौरान 71 लाख 97 हजार रुपये बरामद हुए। इस संबंध में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त माधवी मिश्रा ने बताया कि तेलमच्चो से बरामद राशि को लेकर अब तक एक करोड़ 25 लाख रुपये से अधिक की नकदी जिला प्रशासन ने बरामद की है। उन्होंने कहा कि निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न कराना जिला प्रशासन का उद्देश्य है। इसके लिए जिले में 63 स्टेटिक सर्विलांस टीम, 18 वीडियो सर्विलांस टीम, 12 वीडियो व्यूइंग टीम, 63 फ्लाइंग स्क्वॉड टीम, 22 अकाउंटिंग टीम तथा 12 असिस्टेंट एक्सपेंडिचर ऑब्जर्वर हर गतिविधि पर पैनी नजर रख रहे हैं।

चक्रवाती तूफान के कारण आज और कल झारखंड में हो सकती है भारी बारिश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : बंगाल की खाड़ी के ऊपर बनने वाले चक्रवाती तूफान के कारण 24 और 25 अक्टूबर को झारखंड के कुछ हिस्सों में भारी बारिश का अनुमान है। मौसम विभाग के एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कुछ भागों (मुख्य रूप से झारखंड के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र) में 40-60 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से तेज हवाएं चल सकती हैं और आकाशीय बिजली गिरने की भी आशंका है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना कम दबाव का क्षेत्र मंगलवार को दबाव में बदल गया

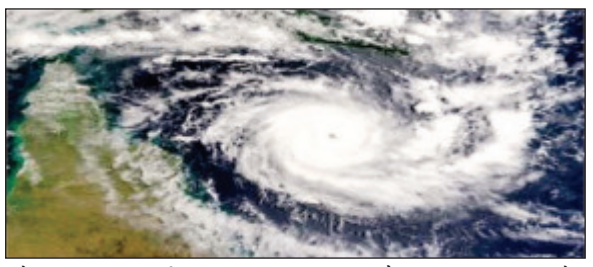

और पूर्वी तट की ओर बढ़ गया। उन्होंने बताया कि 23 अक्टूबर को इसके तीव्र चक्रवाती तूफान में बदलने की आशंका है। रांची मौसम विज्ञान केंद्र के प्रभारी अभिषेक आनंद ने मीडिया को बताया, झारखंड में मौसम में बदलाव बुधवार शाम से दिखने लगेगा। इसका वास्तविक असर 24 अक्टूबर से राज्य के दक्षिण-पूर्वी भागों में देखने को मिल सकता है, जहां बारिश और गरज के साथ छींटे पड़ सकते हैं। 25 अक्टूबर को पूरे झारखंड में बारिश हो सकती है। उन्होंने कहा कि दक्षिण-पूर्व झारखंड के कुछ इलाकों में भारी बारिश हो सकती है, जबकि कुछ हिस्सों में आंधी और तेज हवाएं चलने की भी संभावना है। मौसम विभाग ने लोगों से कहा है कि वे 24 और 25 अक्टूबर को सतर्क रहें।

चुनाव संबंधी जानकारी सार्वजनिक करने से पूर्व तथ्यों को जांच ले मीडिया : के रवि कुमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा है कि किसी भी प्रकार की चुनाव संबंधी जानकारी को सार्वजनिक करने से पूर्व समाचार पत्र, टीवी चैनल, रेडियो, सोशल मीडिया अथवा मीडिया के अन्य माध्यम तथ्यों को पूरी तरह से जांच कर लें। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की संशय की स्थिति में भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी की ऑफिसियल वेबसाईट पर दिशा निर्देश उपलब्ध है । इसके साथ सोशल मीडिया के माध्यम से भी दिशा निदेर्शों के अनुपालन से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराया जाता है। सोशल मीडिया के बढ़ते महत्व को देखते

हुए चुनाव आयोग ने अपने अनुदेश 25 अक्टूबर 2013 के माध्यम से चुनाव प्रचार के दौरान सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित निर्देश जारी किए हैं। मुख्य बिंदु-सोशल मीडिया को 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' की श्रेणी में परिभाषित किया गया है। इस प्रकार सोशल मीडिया पर किए जाने वाले सभी राजनीतिक विज्ञापन प्री-सर्टिफिकेशन (पूर्व-प्रमाणीकरण) के दायरे में आते हैं। नामांकन के दौरान प्रत्याशी को नामांकन के समय प्रपत्र-26 में अपने प्रमाणिक सोशल मीडिया अकाउंट की जानकारी प्रदान करनी है। प्रत्याशी और राजनैतिक दलों द्वारा सोशल मीडिया पर प्रसारित किए जाने वाले राजनीतिक विज्ञापन, सोशल मीडिया अकाउंट को संधारित करने, प्रचार-सामग्री बनवाने एवं उनके सोशल मीडिया के लिए काम करने वाले कर्मियों के वेतन पर आने वाले खर्च को प्रत्याशी के चुनाव-खर्च में शामिल किया जाएगा। प्रत्याशी और राजनीतिक दलों के लिए यह आवश्यक है कि इंटरनेट आधारित मीडिया-प्लेटफॉर्म या मीडिया-वेबसाइट पर किसी राजनीतिक विज्ञापन को जारी करने से पहले प्री-सर्टिफिकेशन (पूर्व-प्रमाणीकरण) प्राप्त करें। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदर्श आचार संहिता एवं संबंधित अन्य निर्देश प्रत्याशी या राजनीतिक दलों के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों एवं प्रयुक्त की जाने वाली सभी प्रचार सामग्री पर भी लागू हैं। किसी भी अस्पष्टता को दूर करने के लिए आयोग ने पुनः पत्रांक 491/एसएम /सीओएमएम / 2013 16 अप्रैल 2014 द्वारा स्पष्ट किया है कि ई-पेपर पर प्रकाशित होने वाले सभी राजनीतिक विज्ञापनों पर प्री-सर्टिफिकेशन (पूर्व-प्रमाणीकरण) आवश्यक है।

झारखंड में अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा : शिवराज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गढ़वा : केन्द्रीय कृषि मंत्री और झारखंड विधानसभा चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान ने बुधवार को गढ़वा विधानसभा सीट से भाजपा के उम्मीदवार सत्येन्द्र नाथ तिवारी के समर्थन में नामांकन कार्यक्रम में सहभागिता की और विशाल जनसभा को संबोधित किया। शिवराज ने जेएमएम और हेमंत सोरेन पर निशाना साधते हुए कहा कि हेमंत सोरेन और गठबंधन की सरकार ने वन संपदा, जल संपदा, खनिज संपदा और सौंदर्य से भरपूर राज्य को पूरी तरह तबाह और बर्बाद कर दिया है। बेईमान सरकार के घोटालों और भ्रष्टाचारों की लंबी फेहरिस्त है। इनके मंत्रियों के घरों से नोटों के पहाड़ बरामद हुए हैं और

गरीब जनता त्राही त्राही कर रही है। इसलिए अब झारखंड की जनता ने जेएमएम की भ्रष्ट सरकार को उखाड़ फेंकने का मन बना लिया है। झारखंड में भाजपा की सरकार ही सुशासन स्थापित करेगी। उन्होंने कहा कि झारखंड में अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा और कमल खिलेगा। शिवराज ने कहा कि जेएमएम और उनके मंत्रियों ने पूरे झारखंड को लूट लिया है। हमने सुना है कि रावण का भाई कुम्भकरण 6 महीने सोता था और जब छह महीने के बाद उठता था तो केवल खाता ही रहता था। कुम्भकरण तो छह महीने ही खाता था लेकिन यहां मंत्री 12 महीने ही खाते रहते हैं। ये ईंट, पत्थर, बालू, कोयला खा जाते हैं, जल जीवन मिशन का पैसा खा जाते हैं। मनरेगा का पैसा खा जाते हैं। मैं आज वचन देने आया हूं कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते ही पक्के मकान बनाने के लिए बालू मुफ्त दी जाएगी। कोई भी गरीब कच्ची छत के नीचे नहीं रहेगा ये मोदी का संकल्प है। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि इस बेईमान गठबंधन की सरकार ने झारखंड को विदेशी घुसपैठियों का गढ़ बना दिया। बांगलादेश से घुसपैठिएं आ रहे हैं। घुसपैठिए बेटियों से विवाह भी कर लेते हैं और विवाह करके उनके नाम पर जमीन भी खरीद लेते हैं। ये हमारी बेटियों के सम्मान के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। सोरेन सरकार में सात हजार 400 बेटियों के साथ बलात्कार हुए हैं। रुबिका पहाड़िया जैसी बेटियों की निर्मम हत्या की गई है। बलात्कार हो रहे हैं, हत्याएं हो रही है, लूट हो रही है, डकैती हो रही है। यदि हम आज भी चुप रहे तो समझ लेना ये झारखंड नहीं बचेगा। ये बंगलादेशी घुसपैठियों का घर हो जाएगा। इसलिए ये चुनाव केवल विधायक चुनने का चुनाव नहीं है। ये चुनाव झारखंड में माटी बचाने का चुनाव है। शिवराज कहा कि पांच साल पहले विधानसभा चुनाव के दौरान जेएमएम ने महिलाओं से वादा किया था कि, उन्हें हर महीने चूल्हा खर्च के लिए दो हजार रुपये दिए जाएंगे लेकिन 4 साल 10 महीने हेमंत सोरेन को माताओ-बहनों की याद नहीं आई और अब चुनाव आते ही उनके खाते में महज एक हजार रुपये डाले जा रहे हैं।

बाबा सिद्दीकी हत्याकांड में कैथल से एक और आरोपी गिरफ्तार

एजेंसी

कैथल : बाबा सिद्दीकी के मामले में मुंबई क्राइम ब्रांच ने कैथल के एक और आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी अमित उर्फ नाथी कलायत के बाता गांव का रहने वाला है। जिस पर पहले भी कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। गिरफ्तार किए गए युवक पर आरोप है कि उसने जाशीन अख्तर को फरारी के दौरान करनाल में एक मकान किराए पर लेकर उसे पनाह दी थी। जानकारी के अनुसार बाबा सिद्दीकी हत्याकांड से दो महीने पहले दोनों 15 से अधिक दिन इकट्ठे रहे थे। मुंबई क्राइम ब्रांच आरोपी को हिरासत में लेकर तीन दिन पहले मुंबई चली गई थी और पूछताछ के बाद अब उसे गिरफ्तार किया गया है।आरोपी जाशीन अख्तर कैथल जेल में करीब 15 महीने तक रहा। उसके खिलाफ कलायत थाने में शूटरों को हथियार सप्लाई करने के दो मामले दर्ज हैं। कैथल सीआईए उसको कलायत के एक व्यापारी पर गोली चलाने के मामले में 21 अगस्त 2022 को पंजाब की कपूरथला जेल से प्रोटेक्शन वारंट पर लेकर आई थी। जो सिद्दीकी हत्याकांड के आरोपी गुरमेल के साथ लगभग 15 महीने जेल की स्पेशल सेल (चक्की) में रहा। यहीं पर दोनों की अच्छी दोस्ती हुई थी। इसके अलावा जेल में बंद अन्य युवकों से भी इसने दोस्ती की थी।

एक नजर

एनएचएआई निर्माण कंपनी के कैंप से लोहा चोरी करते एक व्यक्ति गिरफ्तार

चौपारण : चौपारण प्रखंड पंचायत पाण्डेयबारा में संचालित कौशल इंजिनियरिंग लिमिटेड कम्पनी कैम्प पाण्डेयबारा में तैनात सुरक्षागार्ड के कुछ व्यक्तियों द्वारा कैम्प में रखे रोड निर्माण से संबंधित लोहे का जैक एवं अत्य सामग्रियों को चोरी करने का प्रयास कर रहे थे। इसकी सूचना मिलते ही थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश त्वरीत कार्रवाई करते हुए रात्री गश्ती के पदाधिकारी एवं सशस्त्र बल के साथ पाण्डेयबारा स्थित उक्त कैम्प में पहुँचा तो कम्पनी के मैनेजर द्वारा बताया गया कि दो मोटरसाइकिल पर कैम्प में रखा सामानो को चोरी किया जा रहा था। जिसे एक व्यक्ति को चोरी करते हुए रंगे हाथ पकड लिया गया तथा अन्य दो-तीन व्यक्ति जो साथ में था वह भाग गया। पकडाये व्यक्ति से पुछताछ करने पर अपना नाम आलोक साह पिता चन्द्रमणी साव ग्राम- पवई थाना- चौपारण जिला- हजारीबाग बताया। इस संबंध में रोड निर्माण कम्पनी के मैनेजर राहुल देव उपाध्याय पिता स्व० रामेश्वर उपाध्याय ग्राम इन्द्रपुरी थाना सुखदेवनगर जिला राँची के लिखित आवेदन पर चौपारण थाना कांड सं0 362/24, धारा 303 (2)/317(2)/3(5) भा०न्या०सं० अंकित कर पकडाये अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में भेजी गयी एवं अन्य अभियुक्तों के विरुद्ध छापामारी की जा रही है।

अवैध बालू कारोबार को लेकर पुलिस ने की कार्रवाई, बालू लदे ट्रैक्टर को किया जब्त

बड़कागांव : बड़कागांव पुलिस ने अवैध बालू कारोबार को लेकर कार्रवाई की है।अवैध बालू कारोबार को लेकर कार्रवाई करते हुए बड़कागाँव पुलिस ने छापामारी कर एक अवैध बालू लदा ट्रैक्टर को जप्त कर बड़कागांव थाना लाकर सुरक्षित रखी है।मामले को लेकर बड़कागाँव थाना प्रभारी कुंदन कांत विमल ने बताया कि गुप्त सूचना मिली की एक ट्रैक्टर अवैध बालू लोड कर बादाम से मोतरा घाटी की ओर जा रही है।सूचना के आधार पर थाना प्रभारी के आदेश अनुसार सा.आ.नी हादी खान ने अवैध लगभग 100 सेफ्टी बालू लदा ब्लू रंग का पावर ट्रैक्टर को जप्त कर बड़कागांव थाना लाया।मामले को लेकर बड़कागांव थाना कांड संख्या 263 / 24 धारा 54 जेएमएमसी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की गई है। छापामारी दल में मुख्य रूप से सअनि हादी खान , हवलदार गोवर्धन यादव एवं अकलू राम पुलिस सशस्त्र बल शामिल थे।

बालेश्वर कुमार ने महापुरुषों पर किया माल्यार्पण, कल करेंगे नामांकन

बड़कागांव : बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र से जेकेएलएम के प्रत्याशी केरेडारी ग्राम निवासी बालेश्वर कुमार ने बड़कागांव का दौरा किया। उन्होंने सूर्य मंदिर स्थित जगदेव प्रसाद, काली मंदिर स्थित डॉ भीमराव अंबेडकर एवं जीडीएम चौक स्थित स्वर्गीय प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दिया। इस दौरान उनके समर्थकों ने उन्हें माला पहनकर स्वागत किया। कल शुक्रवार 25 अक्टूबर को नामांकन करने के लिए रामगढ़ रवाना होंगे। मौके पर उन्होंने कहा कि मैं बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र को पूरे राज्य में एक आदर्श विधानसभा क्षेत्र बनाने का प्रयास करूंगा। ताकि बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र का पूरा नाम पूरे देश में रोशन हो। मौके पर उपस्थित लोगों में मुख्य रूप से मिथिलेश कुमार ,राकेश मेहता, मोहम्मद इब्राहिम, ,कृष्णा ,प्रदीप महतो ,दिलेश्वर महतो, गुरदयाल राणा ,अमेरिका महतो, बैजनाथ महतो के अलावा कई उपस्थित थे।

युवा नेता हर्ष अजमेरा 25 को करेंगे नामांकन दाखिल, समर्थकों ने लिया नामांकन पत्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सदर विधानसभा के युवा नेता हर्ष अजमेरा 25 अक्टूबर को आगामी विधानसभा चुनाव 25 हजारीबाग के लिए अपना नामांकन दाखिल करेंगे। उनके समर्थकों ने बुधवार को नामांकन पत्र लिया है,हर्ष अजमेरा ने हमेशा से समाज के हर वर्ग के लिए काम किया है और अब वे इस चुनाव में अपनी मजबूत दावेदारी पेश करने जा रहे हैं।

समर्थकों का जोश और उमंग भरपूर

हर्ष अजमेरा के समर्थकों में भारी उत्साह देखा गया। बड़ी संख्या में लोग उनके समर्थन में इकट्ठा हुए और नामांकन पत्र लेने पहुंचे इस अवसर पर समर्थक अनीश सिंह ने हर्ष अजमेरा की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे एक सशक्त और योग्य नेता हैं, जो हमेशा क्षेत्र की जनता के हित में कार्य करते हैं। उनके नेतृत्व में क्षेत्र का चहुंमुखी विकास होगा और वे

आगामी चुनाव में भारी मतों से जीत दर्ज करेंगे

हर्ष अजमेरा ने सभी समर्थकों और क्षेत्र की जनता का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा,यह चुनाव केवल एक राजनीतिक दायित्व नहीं है, बल्कि यह जनता के विश्वास और भरोसे की जीत होगी। मैं सदैव समाज के हर वर्ग के लिए समर्पित रहा हूं और भविष्य में भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने का प्रयास करूंगा। हम सब मिलकर एक बेहतर और समृद्ध भविष्य का निर्माण करेंगे। उन्होंने क्षेत्र के विकास और समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए अपने प्रयासों को जारी रखने का वादा किया। श्री अजमेरा ने विशेष रूप से शिक्षा,स्वास्थ्य,किसान युवाओं और महिलाओं के लिए अपनी योजनाओं का जिक्र किया, जिनसे क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और सामाजिक सुरक्षा मजबूत होगी।

जनसमर्थन की लहर

लोगों में हर्ष अजमेरा के प्रति काफी उत्साह और उमंग नजर आ रहा है,जो उनके प्रति जनता के गहरे विश्वास और समर्थन को दशार्ता है। हर उम्र और वर्ग के लोग उनके साथ खड़े हैं और उन्हें एक कुशल और ईमानदार नेता के रूप में देखते हैं, जो क्षेत्र का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित कर सकते हैं। हर्ष अजमेरा और उनकी टीम ने नामांकन दाखिल करने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। नामांकन के दिन भी बड़ी संख्या में उनके समर्थकों के इकट्ठा होने वाले है,इस अवसर पर वे एक बार फिर से जनता को अपनी योजनाओं और एजेंडे के बारे में बताएंगे और सभी से समर्थन की अपील करेंगे।

संक्षिप्त खबरें

बीडीओ, सीओ ने बड़कागांव के बूथों का किया निरीक्षण

बड़कागांव : विधानसभा चुनाव को निष्पक्ष एवं शांति तरीके से सफल बनाने को लेकर अंचलाधिकारी मनोज कुमार एवं प्रखंड विकास अधिकारी जितेंद्र कुमार मंडल ने साँढ के उत्क्रमित मध्य विद्यालय , चौपदार बलिया मध्य विद्यालय एवं हरली में मध्य विद्यालय , नयाटांड़ मध्य विद्यालय का निरीक्षण किया. साांढ के मध्य विद्यालय में दो बूथ 161 एवं 162 है। इन बूथों का भी निरीक्षण किया ।इस संबंध में अंचलाधिकारी मनोज कुमार एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी जितेंद्र मंडल ने बताया कि प्रथम चरण का चुनाव 13 नवंबर को विधानसभा का चुनाव है। चुनाव को शांतिपूर्वक सफल बनाने के लिए मतदाताओं को सुरक्षा के लिए मिलिट्री फोर्स तैनात रहेंगे। इन मिलट्री फोर्स की सुविधा के लिए बिजली ,पानी, शौचालय आदि का निरीक्षण किया ।इसके बाद उत्क्रमित मध्य विद्यालय में निष्पक्ष चुनाव कराने को लेकर बीएलओ आरती कुमारी एवं लीला कुमारी के नेतृत्व में शपथ दिलाई गई। इस शपथ समारोह में प्रधानाध्यापिका उचित्रा देवी, शिक्षिका सविता देवी, लक्ष्मी देवी , बीपीओ हीरो महतो, प्रखंड कोऑर्डिनेटर विकास कुमार समेत अन्य शिक्षकों ने भाग लिया।

भाजपा नेता बटेश्वर मेहता ने छोड़ा भाजपा का साथ, लड़ेंगे निर्दलीय चुनाव

हजारीबाग : भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य बटेश्वर प्रसाद मेहता ने बुधवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया। इसके साथ ही उन्होंने बरकट्ठा विधानसभा से निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी। संवाददाता सम्मेलन करते हुए कहा कि आज मेरे साथ हजारों की संख्या में कार्यकर्ता भाजपा छोड़ रहे हैं। भाजपा अब पैसों वालों की पार्टी बन कर रह गई है। इसमें सिर्फ पैसों वालों की पूछ होती है। कार्यकर्ता सिर्फ पार्टी का झंडा ढोते हैं। बरकट्ठा में चुनाव मैं नहीं बल्कि जनता लड़ेगी। यहां चाचा भतीजा के साम्राज्य को ध्वस्त करना है। इस बार जनता ने ही तय कर लिया है कि बदलाव लाना है। यहां 15 साल से चाचा भतीजा ने लोगों को ठगा है। कभी चाचा आते है और लोगों को सब्ज बाग दिखाते है तो कभी भतीजा यहां के लोगों को बेवकूफ बनाते हैं। इस बार के चुनाव में निर्दलीय की जीत होगी, क्योंकि आम जनता इस बार चुनाव में आई है। बता दें कि इचाक प्रखंड के किसी नेता को राष्ट्रीय या क्षेत्रीय पार्टी ने अपना उम्मीदवार नहीं बनाया है इसको लेकर जनता काफी रोष में था और सर्वसम्मति बना कर एक उम्मीदवार उतारने की बात कही जा रही थी।

उत्पाद विभाग की छापामारी में 350 लीटर स्प्रिट लदे इनोवा के साथ दो गिरफ्तार

हजारीबाग : हजारीबाग उत्पाद विभाग की बड़ी कार्यवाही में 350 लीटर अवैध स्पिरिट ,इनोवा कार के साथ दो व्यक्ति की हुई गिरफ्तारी जेल भेजा गया बताते चलें कि हजारीबाग उत्पाद विभाग को गुप्त सूचना मिली कि इनोवा कार से अवैध शराब की खेप भेजा जा रहा है। इसके खिलाफ छापामार दल का गठन किया गया और सघन छापामारी अभियान चलाया गया। जिसमें इनोवा कार और 350 लीटर अवैध स्पिरिट नौ जरकिंग में पकड़ा।जिसका मूल्य 24000 रुपया और कार का मूल्य 10,00,000 रुपया बताया गया। कार चालक भागने में सफल रहा किन्तु दो अभियुक्त 1 रितेष कुमार, साकिन बारीडीह, बरही,हजारीबाग एंव प्रमोद सिंह ,साकिन नारायणपुर जिला गया की गिरफ्तारी की गई। अभियुक्त को उत्पाद विभाग के सुसंगत धाराओं में केन्द्रीय कारा भेजा गया।

बरही और बरकट्ठा से तीन-तीन उम्मीदवारों ने दाखिल किए नामांकन

बरही : चुनावी सरगर्मी तेज हो चुकी है और विभिन्न दल के प्रत्याशियों ने अपने-अपने नामांकन दाखिल कर दिए हैं। बरकट्ठा 20 से निर्दलीय कुमकुम देवी, जेएलकेएम के प्रत्याशी महेंद्र मंडल, निर्दलीय नितिका कुमारी ने अपना नामांकन प्रपत्र जमा कर दिया हैं। इसी तरह बरही से जेएलकेएम के प्रत्याशी कृष्णा यादव, निर्दलीय उम्मीदवार अर्जुन प्रसाद केशरी और डॉ बालेश्वर राम ने भी नामांकन प्रक्रिया पूरी की। इसके अलावा बरकट्ठा से बहुजन समाज पार्टी से सरजू प्रसाद वर्मा, निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में बटेश्वर प्रसाद मेहता, सुजीत कुमार, रामचंद्र प्रसाद, गौतम कुमार, राजकुमार यादव एवं भाकपा माले से मोहम्मद इब्राहिम ने नामांकन प्रपत्र खरीदा। वहीं बरही कांग्रेस से उमाशंकर अकेला, अरुण साहू, जयप्रकाश जनता दल से दिलीप कुमार चंद्रवंशी ने नामांकन प्रपत्र खरीदा। बरही और बरकट्ठा में चुनावी मैदान में कूदने वाले कुछ और उम्मीदवारों ने नामांकन प्रपत्र खरीदे हैं, जो अगले दो दिनों में नामांकन दाखिल कर सकते हैं। बरकट्ठा के उम्मीदवारों ने अपने निवार्ची पदाधिकारी सह भूमि सुधार उपसमाहर्ता अजय कुमार भगत के समक्ष अपने नामांकन दाखिल किए। वहीं, बरही के प्रत्याशियों ने निवार्ची पदाधिकारी सह एसडीओ जोहन टुडू के समक्ष अपने दस्तावेज जमा किए। जैसे-जैसे नामांकन प्रक्रिया आगे बढ़ रही है, क्षेत्र में चुनावी माहौल और अधिक गरम होता जा रहा है। उम्मीदवारों के समर्थकों में जोश और उमंग देखने को मिल रही है, जबकि विभिन्न दल अपने अपने उम्मीदवारों के लिए प्रचार की रणनीति बना रहे हैं।

भाजपा प्रत्याशी मनोज यादव ने अफीम कोठी में चलाया जनसंपर्क अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर भाजपा प्रत्याशी और पूर्व विधायक मनोज यादव ने बरही पश्चिमी पंचायत के अफीम कोठी क्षेत्र में जनसंपर्क अभियान चलाया। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र के लोगों से मुलाकात की और अपनी पार्टी की नीतियों और योजनाओं को साझा किया। मनोज यादव ने जनता से समर्थन की अपील करते हुए कहा कि भाजपा सरकार क्षेत्र के विकास और जनहित के कार्यों को प्राथमिकता देती है। उन्होंने स्थानीय समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया और क्षेत्र के विकास के लिए ठोस कदम उठाने का वादा किया। मनोज यादव ने कहा कि भाजपा की सरकार बनने पर क्षेत्र की बुनियादी सुविधाओं को और बेहतर बनाया जाएगा। इस जनसंपर्क अभियान में कई स्थानीय नेताओं और समर्थकों की उपस्थिति रही। मौके पर मुखिया समशेर आलम, मोती सिंह, भोली पासवान, अजित राम, टिंकू आलम, युवा नेता अमित सिंह उर्फ छोटू, अशोक राम, सोनू राम, छोटी राम, मुंशी राम, विमला देवी, रिंकी देवी, मुन्नी देवी, ज्योतिष रविदास, सूरज रविदास और राहुल राम सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सांसद मनीष जायसवाल ने बीजेपी प्रत्याशी प्रदीप के समर्थन में किया धुआंधार जनसंपर्क

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद के समर्थन में उनके साथ बुधवार को सदर विधानसभा क्षेत्र के कटकमसांडी और कटकमदाग प्रखंड के दर्जनों पंचायतों का तूफानी दौरा किया और 24 अक्टूबर यानी गुरुवार को भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद के नामांकन रैली में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर इसे सफल और ऐतिहासिक बनाने का आग्रह किया । हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल और सदर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद ने सुबह कटकमसांडी प्रखंड क्षेत्र के रेबार पंचायत स्थित हरिया गांव से अपने दौरे की शुरूआत की जो कटकमसांडी प्रखंड क्षेत्र के होरिया, रेबर, डाटो खुर्द, बाझा, कटकमसांडी, बरगड्डा, डांड, लूपुंग, असधीर, जैलमा, और गदोखर सहित कुल 8 पंचायतों के करीब 20 गांवों का दौरा करते हुए ग्राम

सलगांवा, नावाडीह, पकरार, मेयातु, कटकमदाग, बानादाग, मसरातु, रेवाली, कूद, सिरसी, दामोडीह, ढ़ेंगुरा, नवादा, कुण्डलीबागी और खपरीयाँवा में समापन हुआ। इस दौरान नेताद्वय का कटकमसांडी और कटकमदाग प्रखंड के भाजपा कार्यकताओं और उनके समर्थकों ने गाजे- बाजे के साथ फूल माला पहनाकर जबरदस्त स्वागत किया । सांसद मनीष जायसवाल ने अपने दौरे के दौरान लोगों से कहा कि उन्होंने बतौर विधायक हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए आजादी के बाद पहली बार सदर विधानसभा क्षेत्र में विकास की एक नई गाथा लिखी है। विकास की इसी कड़ी को आगे बढ़ाने के लिए आप सबों के बीच वर्षों से सुलभता से उपलब्ध रहने वाले भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद को आने वाले विधानसभा चुनाव में आपको अपना आशीर्वाद और समर्थन अवश्य देना चाहिए। उन्होंने कहा कि झारखंड को गठबंधन की सरकार से मुक्ति दिलाकर एक सशक्त डबल इंजन की सरकार बनाएं ताकि राज्य के साथ राज्यवासियों का भविष्य बेहतर हो सके। भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद ने कहा कि जिस प्रकार आपके हर एक सुख-दुख में आपके बीच रहा हूं आगे भी पूरी तन्मयता से आपके बीच रहकर हजारीबाग को आगे बढ़ाने का काम करूंगा बस आप सभी अपना आशीर्वाद और समर्थन दें ।

कांग्रेस प्रत्याशी मुन्ना सिंह आज दाखिल करेंगे नामांकन, समर्थकों में उत्साह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : आगामी झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र से इंडिया गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी मुन्ना सिंह आज अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। नामांकन कार्यक्रम आज दोपहर 2 बजे हजारीबाग स्थित कांग्रेस पार्टी कार्यालय में आयोजित होगा। इस महत्वपूर्ण अवसर पर बड़ी संख्या में पार्टी के कार्यकर्ता, समर्थक और कांग्रेस के वरिष्ठ अधिकारी गण मौजूद रहेंगे। मुन्ना सिंह के नामांकन यात्रा की शुरूआत सुबह 10 बजे उनके आवास, चानो से होगी। नामांकन यात्रा हजारीबाग के महत्वपूर्ण स्थानों जैसे लाखे, मटवारी, डिस्ट्रिक्ट मोड़ होते हुए झंडा चौक के रास्ते हजारीबाग कांग्रेस कार्यालय पहुंचेगी। इस दौरान हजारों की संख्या में समर्थकों और कार्यकताओं के जुटने की उम्मीद है, जो इस यात्रा को एक भव्य शोभायात्रा का रूप देंगे। मुन्ना सिंह का नामांकन कार्यक्रम, पार्टी के लिए एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जब उन्हें कांग्रेस का आधिकारिक प्रत्याशी घोषित किया गया था, तो हजारीबाग में उनके समर्थकों द्वारा बड़े उत्साह के साथ उनका स्वागत किया गया था। पूरे हजारीबाग क्षेत्र में उनका स्वागत जिस गर्मजोशी और धूमधाम से हुआ, उससे यह स्पष्ट हो गया है कि उनके प्रति जनता और कार्यकताओं में गहरा विश्वास और समर्थन है। इंडिया गठबंधन के इस मजबूत प्रत्याशी की उम्मीदवारी से हजारीबाग में चुनावी माहौल और भी गरम हो गया है। मुन्ना सिंह, जो एक दशक से भी अधिक समय से सामाजिक कार्यों में जुटे हुए हैं, पूरे क्षेत्र में एक लोकप्रिय और भरोसेमंद नेता के रूप में जाने जाते हैं। उनकी छवि एक ऐसे जनसेवक की है, जो न केवल जनता की समस्याओं को समझते हैं, बल्कि उन्हें समाधान भी प्रदान करते हैं।

आयुक्त ने प्रशासनिक व पुलिस पदाधिकारियों के साथ की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड विधानसभा आम चुनाव 2024 के पूर्व शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव की तैयारियों के अंतर्गत प्रमंडलीय आयुक्त उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल हजारीबाग की अध्यक्षता में आज बुधवार को 203 कोबरा बटालियन, बरही, हजारीबाग के सभागार कक्ष में अंतरराज्यीय उच्च स्तरीय संयुक्त समीक्षात्मक बैठक की गई। बैठक में विधानसभा चुनाव के दौरान सीमावर्ती क्षेत्रों तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित मतदान केन्द्रों के संवेदीकरण एवं अंतरराज्यीय सीमा चेक पोस्ट का संचालन के विषय पर चर्चा की गई। साथ ही असंवैधानिक गतिविधियों पर विशेष निगरानी करते हुए रोक लगाकर कानून व्यवस्था बनाए रखने को कहा गया। बैठक में उपस्थित अधिकारियों ने हाल ही में जमानत पर छूटे नक्सलियों, अपराधियों तथा वार्रटियों की जानकारी, अपराधियों तथा असामाजिक तत्वों, सीमावर्ती क्षेत्र के उपद्रवियों एवं सीमावर्ती मार्गों की जानकारी साझा की तथा इस पर निगरानी रखने की बात कही। सीमावर्ती क्षेत्रों पर विस्तृत चर्चा करते हुए निगरानी व सुरक्षा को लेकर किए जा रहे प्रबंध के बारे में बात रखते हुए विस्तार से जानकारियां साझा की गईं। जिस पर सभी जिलों के डीसी, एसपी एवं उनके प्रतिनिधियों ने आवश्यक कार्रवाई हेतु सहमति जताते हुए अपनी-अपनी बातें रखीं। बैठक में अंतरराज्यीय एवं अंतर जिला सीमा पर कानून व्यवस्था बनाए रखने एवं चुनाव को प्रभावित करने हेतु शराब, गांजा, अफीम, कोरेक्स सिरप, नगदी, ड्रग्स, उपहार की वस्तु आदि अवैध परिवहन पर रोकथाम हेतु कड़े कदम उठाने को कहा गया। साथ ही महुआ या अवैध शराब की तैयारी पर अंकुश लगाने के लिए अंतरराज्यीय नदी किनारे गश्त करने को कहा गया।

पतरातु को अनुमंडल का दर्जा दिलाना है लक्ष्य : विधायक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : बड़कागांव विधायक अम्बा प्रसाद ने अपने बड़कागांव स्थित समाधान भवन में प्रेसवार्ता किया इस दौरान उन्होंने अपने कार्यकाल का ब्यौरा पेश किया प्रेसवार्ता में उपस्थित पत्रकारों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मैं बड़कागांव की बेटी हूँ और पूरे क्षेत्र की सेवा एक बेटी बन कर की हूं बड़कागांव विधानसभा से मुझे भरपूर प्यार और आशीर्वाद मिला है और आगे भी मिलता रहेगा इसी आशीर्वाद से बड़कागांव की बेटी को राज्य के साथ साथ देश में भी सम्मान मिला मैं बड़कागांव के लोगों का सम्मान कम नहीं होने दूंगी बताते चलें कि बड़कागांव विधायक अम्बा प्रसाद को फेम इंडिया एशिया पोस्ट में देश भर के 3958 विधायकों में यूथ आइकॉन चुना गया था। कार्यकाल में नहीं हो सके

बड़े कार्य के बारे में पूछे जाने पर श्री प्रसाद ने कहा कि बड़कागांव , पतरातु को अनुमंडल का दर्जा दिलाने साथ ही भुरकुंडा को प्रखंड का दर्जा दिलाने की पहल की गई है जो अभी नहीं हो सका बड़कागांव के लोगों का आशीर्वाद रहा तो निश्चित है मैं ये लक्ष्य पूरा करूंग । कार्यकाल में विकास के बारे में पूछे जाने पर प्रसाद ने कहा कि मैने विधायक मद की राशि शत प्रतिशत खर्च किया जिसके माध्यम से विधानसभा क्षेत्र के सैकड़ों पुल पुलिया, सड़क, विद्यालय , शौचालय का उन्नयन किया गया वहीं विभिन्न विभागों से करोड़ों की लागत से दर्जनों सड़कों का कायाकल्प किया गया साथ ही साथ बड़कागांव में 34 करोड़ की लागत से डिग्री कॉलेज , पतरातु में डिग्री कॉलेज , पतरातु में डिग्री कॉलेज, पॉलिटेक्निक कॉलेज, तारामंडल निर्माण , बड़कागांव - केरेडारी में बिजली व्यवस्था दुरुस्त कराने व डी भी सी पर निर्भरता खत्म करते हुए 24 घंटे विद्युत सेवा बहाल करने के लिए 35 करोड़ की लागत से 220/33 केबी विद्युत सबस्टेशन निर्माण सहित अन्य दर्जनों बड़ी योजनाओं का मंजूरी मिली क महत्वपूर्ण एजेंडा के बारे में अम्बा प्रसाद ने कहा कि बड़कागांव विस्थापन का मार झेल रहा है यहां के किसान खास कर इससे प्रभावित हुए हैं बड़कागांव में बहुफसलीय जमीन है लेकिन विभिन्न कम्पनी के उत्खनन से कृषि प्रभावित हुआ है यहां के युवा बाहर जाकर काम करने को विवश हैं और कम्पनी में बाहरी लोग कार्य कर रहे हैं आने वाले कुछ माह में स्थानीय युवकों को कम्पनी में रोजगार सुनिश्चित कराया जाएगा।

एक नजर

गैंगस्टर अमन साहू गैंग के शंकर यादव की जमानत याचिका खारिज

रांची : एनआईए के विशेष न्यायाधीश एमके वर्मा की अदालत ने टेरर फंडिंग की जांच के दौरान गिरफ्तार कुख्यात गैंगस्टर अमन साहू के गुर्गे शंकर यादव की जमानत याचिका सुनवाई के बाद बुधवार को खारिज कर दी है। एनआईए ने लातेहार के बालूमाथ स्थित तेतरियाखाड़ कोलियरी में गोलीबारी मामले में टेरर फंडिंग की जांच के दौरान उसे नौ फरवरी को गिरफ्तार किया था। गिरफ्तारी के बाद उसे ट्रांजिट रिमांड पर लेकर रांची लाया गया था। तब से वह जेल में ही है। गिरफ्तारी के दौरान उसके ठिकाने से एक करोड़ 30 लाख रुपये भी बरामद किए गए थे, जिसे अमन साहू के जरिये लेवी-रंगदारी से वसूला गया पैसा बताया जा रहा है। एनआईए को छापेमारी में पांच मोबाइल फोन, एक हार्ड डिस्क, एक राइफल (30-06 बोर) एक मैगजीन, एक पिस्तौल (7.65 एमएम), दो मैगजीन और विभिन्न बोर के 63 कारतूस मिले हैं। कुछ संदिग्ध दस्तावेज भी मिले हैं। इस घटना पर 18 दिसंबर, 2020 को दर्ज केस को एनआईए ने 04 मार्च, 2021 को अपने हाथ में ले लिया था। इस मामले में एनआईए ने अब तक कुल 29 आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है।

युवक की संदिग्ध हालात में मौत हत्या की आशंका

रांची : रांची के सुखदेव नगर थाना क्षेत्र के यमुना नगर में रहने वाले निरंजन प्रसाद की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। उसके परिजनों ने आरोप लगाया कि कुछ लोगों ने उनके बेटे की जहरीला पदार्थ देकर हत्या की है। मृतक के पिता बिहारी प्रसाद ने कहा कि उनका बेटा मंगलवार की रात करीब 12 बजे घर लौटा था। सुबह चार बजे के करीब जब निरंजन का छोटा भाई उसे उठाने गया, तो देखा की निरंजन के मुंह से झाग निकल रहा है और वह अचेत पड़ा हुआ है। इसके बाद निरंजन को तुरंत रिम्स अस्पताल ले जाया गया लेकिन अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस बाबत सुखदेव नगर थाना प्रभारी मनोज कुमार ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया गया है। पूरे मामले की गहन जांच-पड़ताल की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही पूरा मामला स्पष्ट हो सकेगा।

रांची और हटिया विधानसभा क्षेत्रों के दिग्गज 24 को करेंगे नामांकन

रांची : झारखंड विधानसभा के पहले चरण में रांची और हटिया में मतदान होना है। पहले चरण में नॉमिनेशन करने का अंतिम दिन 25 अक्टूबर है। लगभग सभी पॉलिटिक्टिकल पार्टियों ने प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है। समाहरणालय में सीपी सिंह, महुआ माजी, अजयनाथ शाहदेव, नवीन जायसवाल गुरुवार को नॉमिनेशन करेंगे। रांची विधानसभा सीट से एनडीए प्रत्याशी सीपी सिंह भी गुरुवार को नामांकन करेंगे। दिन के 10 बजे दीनदयाल चौक से कार्यकर्ताओं के साथ समाहरणालय पहुंचेंगे जबकि महागठबंधन से जेएमएम प्रत्याशी महुआ माजी अपने बरियातू स्थित आवास से सुबह 10 :30 बजे कार्यकर्तों के साथ समाहरणालय के लिए निकलेंगी। हटिया विधानसभा सीट से एनडीए प्रत्याशी नवीन जायसवाल गुरुवार को दिन के 11 बजे हरमू मैदान से कार्यकर्ताओं के साथ नॉमिनेशन के लिए निकलेंगे। महागठबंधन से कांग्रेस प्रत्याशी अजयनाथ शाहदेव दिन के 10 बजे पुराना विधानसभा मैदान से कार्यकर्ताओं के साथ नॉमिनेशन करने समाहरणलय के लिए निकलेंगे।

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने की बैठक

आदर्श आचार संहिता के अनुपालन में राजनीतिक दलों का सहयोग अपेक्षित : के. रवि कुमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा कि सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल विधानसभा निर्वाचन में अपने स्टार प्रचारकों के लिए वाहनों की सूची उपलब्ध करते हुए उनके पास संग्रहित कर लें। उन्होंने कहा कि स्टार प्रचारकों द्वारा इस्तेमाल में लाए जाने वाले वाहनों की सूची भी अवश्य उपलब्ध करा दें। वह बुधवार को निर्वाचन सदन में सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर रहे थे। कुमार ने कहा कि राजनीतिक दल अपने प्रत्याशियों एवं कार्यकर्ताओं तक आदर्श आचार संहिता के दिशा निदेर्शों की वृहत जानकारी उपलब्ध कराएं । स्वच्छ, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान में सभी राजनीतिक दलों से सहयोग अपेक्षित है। उन्होंने कहा कि नामांकन के साथ ही प्रत्याशियों के द्वारा प्रचार- प्रसार में किए जाने वाले खर्च की गणना करते हुए भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा जारी दिशा-निदेर्शों का अनुपालन करना सुनिश्चित करें। बैठक में कुमार ने सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों द्वारा विधानसभा निर्वाचन में आने वाली किसी प्रकार की समस्या अथवा संशय की स्थिति के बारे में जाना। इसके बाद भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निदेर्शों का अनुपालन करते हुए उसके निराकरण संबंधी जानकारी भी उपलब्ध कराई। इस अवसर पर स्टार प्रचारकों द्वारा विमानों के इस्तेमाल से संबंधित सभी तरह के संशय के समाधान हेतु एयरपोर्ट आथोरिटी के पदाधिकारियों के साथ बैठक में समन्वय स्थापित कराते हुए सभी आवश्यक दिशा-निदेर्शों से राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को अवगत कराया। बैठक में अगले मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की बैठक 30 अक्टूबर को अपराह्न तीन बजे से की जाएगी इसका भी निर्णय लिया गया। इस अवसर पर अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी डॉ. नेहा अरोड़ा, ओएसडी गीता चौबे, सहायक मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी देव दास दत्ता सहित सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

राज्यपाल से झारखंड अगेंस्ट करप्शन का प्रतिनिधिमंडल मिला, सौंपा ज्ञापन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड अगेंस्ट करप्शन के एक प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल संतोष गंगवार से बुधवार को राजभवन में मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल ने एक ज्ञापन सौंपते कहा कि राज्य में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण जनता त्राहिमाम है। सरकार और ब्यूरोक्रेसी में व्याप्त करप्शन के कारण राज्य का विकास बाधित हो रहा है। कालांतर से भ्रष्टाचार की कलंक कथाओं से रत्नगर्भा झारखंड कराह रहा है। राजभवन के दखल से राज्य को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने में मदद मिलेगी। झारखंड में होने वाली नियुक्तियां अक्सर विवादों में ही रही हैं, जिसके कारण राज्य के युवाओं में निराशा का भाव व्याप्त है। राज्यपाल से आग्रह किया गया कि पारदर्शिता के साथ भर्ती प्रक्रिया झारखंड में पूरी हो, इसके लिए राजभवन भी समय-समय पर इसमें हस्तक्षेप करे। ज्ञापन में यह भी कहा गया कि वर्तमान ज़िला मुख्यालय पलामू से 50 किमी की दूरी पर स्थित छतरपुर अनुमण्डल को जिला बनाने की पहल राज्यपाल द्वारा की जाए। ज्ञापन में बताया गया है कि वर्षों तक नक्सलवाद का दंश झेल रहे छतरपुर के जिला बनने से इलाके का विकास और उत्थान तेजी से सम्भव हो पायेगा। राज्यपाल को यह भी बताया गया कि झारखंड एक अत्यंत रमणीक और रत्नगर्भा धरती है जहां के जर्रे-जर्रे में स्वाधीनता के नायकों की वीरता के गीत गाये जाते हैं। लेकिन इस राज्य को राष्ट्र के फलक पर जहां होना चाहिए था, आजतक वहां नहीं पहुंच पाया है। राज्यपाल से आग्रह किया गया कि उनकी निगहबानी में झारखंड का विकास सुनिश्चित हो, राज्य भ्रष्टाचार से मुक्त हो।

मतदान के दिन कामगारों और मजदूरों को मिलेगा सवैतनिक अवकाश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड विधानसभा आम चुनाव-2024 के मतदान की तिथि के दिन कारबार, व्यवसाय, औद्योगिक उपक्रम या किसी अन्य स्थापना में नियोजित व्यक्ति को, जो लोकसभा या विधानसभा चुनाव में मतदान के लिए हकदार है उनके लिए सवैतनिक अवकाश मंजूर किया जायेगा। कार्मिक विभाग ने बुधवार को इस संबंध में निर्धारित प्रावधानों का अनुपालन कराने का निर्देश संबंधित प्राधिकारों को निर्देश दिया है। अवकाश मंजूर किए जाने के कारण किसी भी व्यक्ति की मजदूरी से कोई कटौती नहीं की जायेगी या उसमें कोई कमी नहीं की जायेगी। साथ ही ऐसा व्यक्ति इस आधार पर नियोजित किया जाता है कि उसे सामान्यता किसी ऐसे दिन के लिए मजदूरी प्राप्त नहीं होगी तो इस बात के होत हुए भी तो ऐसे दिन के लिए मजदूरी दी जायेगी। कार्मिक विभाग ने यह स्पष्ट किया है कि इस निर्देश के बाद भी यदि कोई नियोजक प्रावधानों का उल्लंघन किया है तो उनसे पांच सौ रुपये जुमार्ना व दंडनीय भी होगा। हालांकि, यह धारा ऐसे निर्वाचक पर लागू नहीं होगी, जिसकी अनुपस्थिति से नियोजन के संबंध में, जिसमें वह लगा हुआ है, कोई खतरा उत्पन्न होगा।

चुनावी सरगर्मी के बीच होटवार जेल में छापेमारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में मंगलवार की देर रात छापेमारी हुई है। कहा जा रहा है कि यह छापेमारी झारखंड विधानसभा चुनाव के मद्देनजर हुई है। सिटी एसपी और सदर एसडीओ के नेतृत्व में जेल में तीन घंटे तक सभी कैदियों के वार्डों की तलाशी ली गयी। हालांकि जेल से किसी प्रकार की आपत्तिजनक सामान नहीं मिला है। जेल में सब कुछ सामान्य था। इस छापेमारी में पुलिस उपाधीक्षक (सदर), कार्यपालक दंडाधिकारी (रांची), थाना प्रभारी (सदर), थाना प्रभारी खेलगांव के अलावा 12 एसआई और पुलिस बल शामिल थे। बता दें कि झारखंड विधानसभा चुनाव को लेकर हर तरह के सुरक्षा इंतजाम किए जा रहे हैं। झारखंड में शांतिपूर्ण निष्पक्ष चुनाव के लिए वैसे लोगों पर नजर रखी जा रही है जो विधि व्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं। कई बार जेल से भी असामाजिक तत्व व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। इसलिए जेल पर भी नजर रखी जाती है।

रांची लोकसभा की सभी विधानसभा सीटों पर जीतेगा एनडीए : संजय सेठ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची सांसद और केंद्रीय मंत्री संजय सेठ ने दावा करते हुए है कि वर्तमान राज्य सरकार से त्रस्त यहां की जनता विधानसभा चुनाव में बदलाव को तैयार है। उन्हें पूरा भरोसा है कि रांची लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली सभी सीटों पर एनडीए उम्मीदवार जीतेंगे। रक्षा राज्य मंत्री ने बताया कि रांची हटिया और कांके विधानसभा क्षेत्र का नामांकन कल 24 अक्टूबर को किया जाएगा। रांची विधानसभा सुबह 10:00 बजे पंडित दीनदयाल उपाध्याय मूर्ति के समक्ष, हटिया विधानसभा 11 बजे हरमू मैदान कांके विधानसभा एवं मांडर विधानसभा में 11:00 बजे मोराबादी मैदान में एकत्रित होकर रांची समाहरणालय में नामांकन के लिए जाएंगे। इस अवसर पर भारत सरकार के कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। जबकि खिजरी विधानसभा क्षेत्र का नामांकन 28 अक्टूबर को किया जाएगा। 28 अक्टूबर को दिन के 12:00 बजे मोराबादी मैदान में सभी एकत्रित होकर रांची समाहरणालय में नामांकन किया जायेगा। सेठ बुधवार को अरगोड़ा चौक स्थित कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि चुनाव को लेकर भाजपा कार्यकताओं के साथ आम जनता में भी उत्साह है। हर तरफ परिवर्तन की लहर है। पिछले पांच साल में झामुमो और कांग्रेस की सरकार ने जो भ्रष्टाचार किए हैं, बेरोजगारों पर जो अत्याचार किए हैं, महिला उत्पीड़न और प्रताड़ना पर जो चुप्पी साधी है। इन सबका जवाब इस चुनाव में देने के लिए जनता तैयार है। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता सिर्फ कार्यकर्ता के रूप में काम करते हैं। मंत्री, विधायक, सांसद यह सब कुछ भाजपा में सिर्फ दायित्व है। यह कोई पद नहीं है। हम सब भाजपा कार्यकर्ता के रूप में ही पूरी मजबूती के साथ इस चुनाव में काम करेंगे और राज्य में सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण करने वाली सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड को हमेशा से विशेष स्नेह दिया है। पांच साल हेमंत सोरेन की सरकार के बावजूद प्रधानमंत्री ने झोलियां भर भर के झारखंड के विकास के लिए योजनाएं दी।

नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडी एंड रिसर्च इन लॉ रांची में डायन प्रथा पर परिचर्चा का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडी एंड रिसर्च इन लॉ (NUSRL) रांची में विश्वविद्यालय के पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण केंद्र ने "Echoes of Injustice against Women: Unveiling Dark Testimony of Witch Hunts in Rural Jharkhand" विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता के रूप में पद्मश्री छुटनी महतो ने भाग लिया। अन्य प्रतिभागियों में आकृति लकड़ा (स्वतंत्र शोधकर्ता), जेनी टोप्पो (सेंट जेवियर कॉलेज, रांची में जनजातीय अध्ययन की व्याख्याता) और शिवानी प्रिया (सामाजिक कार्यकर्ता, बाल कल्याण संघ एनजीओ) शामिल थीं। परिचर्चा की अध्यक्षता डॉ. संगीता लाहा ने की, जबकि विश्वविद्यालय के सहायक रजिस्ट्रार डॉ. जिसु केतन पटनायक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्ज्वलन से हुई, जिसमें बच्चों ने एक नाटक प्रस्तुत किया, जो गांवों में महिलाओं को डायन बताकर हत्या करने की वास्तविकता पर केंद्रित था। डॉ. संगीता लाहा ने बताया कि पंचायती राज विभाग में कई कार्य होते हैं, और इस केंद्र का उद्देश्य गांवों और पंचायतों की समस्याओं को समझना है। उन्होंने वीसी प्रो. अशोक आर. पाटिल का भी धन्यवाद किया जिन्होंने इस कार्यक्रम में सहायता की। पद्मश्री छुटनी महतो ने अपने संबोधन में अपने संघर्ष की कहानी साझा की। उन्होंने बताया कि कैसे गांव वालों ने उन्हें डायन घोषित कर हत्या की योजना बनाई, जिसके चलते उन्हें अपने बच्चों के साथ भागना पड़ा। उन्होंने कहा, आज जिसे समाज ने डायन घोषित किया, उसे ही पद्मश्री पुरस्कार मिला। आकृति लकड़ा ने बताया कि उन्होंने इस विषय पर काफी काम किया है और कहा, समाज में मजबूत महिलाओं को स्वीकार नहीं किया जाता।ह जेनी टोप्पो ने आंकड़ों के माध्यम से बताया कि झारखंड में आज भी डायन प्रथा जीवित है और कई मामले दर्ज नहीं होते हैं। शिवानी प्रिया ने बताया कि डायन के नाम पर की गई हत्या में केवल महिलाएं ही नहीं, बच्चे भी प्रभावित होते हैं। उन्होंने एक परिवार के उदाहरण के माध्यम से यह बताया कि कैसे एक बच्चे को अपनी मां की देखभाल करनी पड़ी जब गांव वालों ने उसे डायन बताया।

संक्षिप्त खबरें

राजद ने चुनावी समर में लालू सहित 40 स्टार प्रचारकों को उतारा

रांची : विधानसभा चुनाव को लेकर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने 40 स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर राज्य चुनाव आयोग को अगवत कराया है। साथ ही प्रचार-प्रसार के लिए अनुमति कार्ड उपलब्ध कराने का आग्रह किया है। प्रदेश राजद महासचिव सह मीडिया प्रभारी कैलाश यादव ने बुधवार को कहा कि राजद झारखंड में काफी मजबूती से चुनाव लड़ रहा है। ये हैं राजद के स्टार प्रचारक- लालू प्रसाद यादव, तेजस्वी प्रसाद यादव, अब्दुल बारी सिद्दीकी, मो.अली अशरफ फातमी, तेजप्रताप यादव, डॉ.रामानंद यादव, जयप्रकाश नारायण यादव, भोला यादव, ललित कु यादव, प्रो.चंद्रशेखर, अर्जुन राय, रितु जायसवाल, आलोक कुमार मेहता, भूदेव चौधरी, डॉ रामचंद्र पूर्वे, अभय कुशवाहा, शिवचंद्र राम, जितेन्द्र कु राय, संजय कु गुप्ता, कांति सिंह, जावेद इकबाल अंसारी, उदय नारायण चौधरी, स्वीटी सीमा हेंब्रम, तनवीर हसन फैयाज अहमद, कारी सोहेब, शक्ति सिंह यादव, समीर कु महासेठ, मो.महबूब, अली कैंसर, सत्यानंद भोक्ता, गौतम सागर राणा, अभय सिंह, रंजन कुमार यादव, गिरधारी गोप, अनीता यादव, जमीरुद्दीन अंसारी, कुमार सर्वजीत, ममता भुइयां, आबिद अली और रानी कुमारी।

रांची विस सीट से झामुमो उम्मीदवार महुआ माजी लड़ेंगी चुनाव

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने रांची विधानसभा सीट से उम्मीदवार की घोषणा कर दी है। पार्टी ने महुआ माजी को रांची विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया है। अब महुआ माजी रांची सीट पर भाजपा उम्मीदवार सीपी सिंह को टक्कर देंगी। बुधवार को झामुमो के महासचिव विनोद पांडे ने इस संबंध में जानकारी दी। उल्लेखनीय है कि मंगलवार देर रात झामुमो ने 35 उम्मीदवारों की सूची जारी की थी।

विधानसभा चुनाव में जेएलकेएम ने नौ उम्मीदवारों की सूची जारी की

रांची : विधानसभा चुनाव को लेकर जयराम महतो की पार्टी झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) ने बुधवार को नौ उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। पार्टी अब तक 58 उम्मीदवारों को चुनाव में उतार चुकी है। इन नौ उम्मीदवारों में चतरा से अशोक भरती, तोरपा से विल्सन भेंगरा, कोलेबिरा से पुनित कुमार, जमशेदपुर पश्चिमी से तपन कुमार, बाघमारा से दीपक कुमार रवानी, गिरिडीह से नवीन आनंद चौरसिया, बगोदर से डॉ सलीम अंसारी, गुमला से निशा कुमारी भगत और लोहरदगा किशकोर उरांव शामिल हैं।

पूर्व आईपीएस राजीव रंजन सिंह ने बीजेपी से दिया इस्तीफा, परिवारवाद का लगाया आरोप

रांची : पूर्व आईपीएस अधिकारी राजीव रंजन सिंह ने बीजेपी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि टिकट बंटवारे में परिवारवाद हावी रहा है। बीजेपी अपने नीतियों और विचारों से बिल्कुल विपरीत काम कर रही है। बता दें कि राजीव रंजन को बीजेपी ने झारखंड विधानसभा का टिकट नहीं दिया है। हालांकि राजीव रंजन ने साफ किया है कि वह टिकट ना दिए जाने के कारण इस्तीफा नहीं दे रहे। उन्होंने बाबूलाल मरांडी के नाम अपने इस्तीफा पत्र में लिखा, "इस्तीफा का कारण यह नहीं है कि मुझे भारतीय जनता पार्टी द्वारा विधानसभा चुनाव का टिकट नहीं दिया गया। मुख्य कारण यह है कि बीजेपी के टिकट बंटवारे में जिस तरह से परिवारवाद हावी रहा, यह दशार्ता है कि बीजेपी अपने नीतियों एवं विचारों से और संघ के मूल्यों एवं आदर्शों के बिल्कुल विपरीत कार्य कर रही है। " मैं भारतीय जनता पार्टी प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रहा हूं।

राज्यहित में हिंदू समाज करे शत-प्रतिशत मतदान : विहिप

रांची : विश्व हिंदू परिषद झारखण्ड प्रांत कार्यकारिणी की एक दिवसीय बैठक बुधवार को दो सत्रों में स्टेशन रोड स्थित होटल ग्रीन होरिजन में हुई। बैठक में विगत माहों में संपन्न हुए कार्यक्रमों की समीक्षा की गई। साथ ही आगामी कार्यक्रमों की योजना बनाई गई। बैठक में नौ नवंबर को गोपाष्टमी तथा 15 दिसंबर से 31 दिसंबर तक धर्मरक्षा दिवस कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। झारखंड के सभी जिलों के विद्यालयों से संपर्क कर नैतिक शिक्षा के तहत रामायण ज्ञान की पुस्तकों को पढ़ाकर बच्चों को भगवान राम के जीवनमूल्यों से परिचय कराने पर बल दिया गया। बैठक में लोकतंत्र के महापर्व में समस्त हिंदू समाज को राज्यहित में शत-प्रतिशत मतदान करने का आह्वान किया गया। इस महापर्व को सफल बनाने के लिए सभी स्तरीय कार्यकर्ताओं को गांव-गांव तक जोड़कर संपन्न करने पर बल दिया गया। वक्ताओं ने कहा सनातन हिंदू समाज की संस्कृति एवं परंपरा निरंतर निर्बाध रूप से भारतीय भू-धरा पर बनी रहे इसके लिए राष्ट्रीय चिंतन करने वाले समूह को अपना मतदान करें। बैठक में क्षेत्र मंत्री वीरेंद्र विमल, क्षेत्र सहमंत्री डॉ. वीरेंद्र साहू, झारखंड प्रांत अध्यक्ष चंद्रकांत रायपत, प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र, प्रांत संगठन मंत्री देवी सिंह, प्रांत उपाध्यक्ष गंगा प्रसाद यादव, सुनील गुप्ता, प्रांत धमार्चार्य संपर्क प्रमुख युगल किशोर सहित अन्य उपस्थित थे।

आचार संहिता तक सीएसआर फंड से होगा बैद्यनाथ धाम में क्यू कॉम्प्लेक्स के दूसरे फेज का निर्माण : हाई कोर्ट

रांची : झारखंड हाई कोर्ट में देवघर में बाबा बैद्यनाथ मंदिर के निकट क्यू कॉम्पलेक्स के फेज दो का निर्माण कार्य शुरू नहीं होने को लेकर सांसद निशिकांत दुबे की अवमानना याचिका पर बुधवार को सुनवाई हुई। मामले में हाई कोर्ट की खंडपीठ ने राज्य सरकार को निर्देश दिया कि राज्य में आदर्श आचार संहिता खत्म होने पर नवयुग कंपनी लिमिटेड को देवघर में क्यू कॉम्पलेक्स के फेज दो के काम करने को लेकर कैबिनेट की अप्रूवल की शर्त को हटाए। क्योंकि, हाई कोर्ट ने नवयुग कंपनी लिमिटेड को सीएसआर फंड से देवघर में क्यू कॉम्पलेक्स के फेज दो निर्माण पूरा करने के संबंध में पूर्व में ही आदेश पारित किया है। इससे पूर्व याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता शिवानी जालूका ने कोर्ट को बताया कि राज्य सरकार ने नवयुग कंपनी लिमिटेड को पत्र लिखकर कहा है कि वह अभी सीएसआर फंड से देवघर में क्यू कॉम्पलेक्स के फेज दो का काम शुरू कर सकती है लेकिन कंपनी के समक्ष शर्त यह रखी है कि राज्य में विधानसभा चुनाव को लेकर लगी आदर्श आचार संहिता के खत्म होने के बाद कैबिनेट के समक्ष इस प्रपोजल को अप्रूवल के लिए रखा जाएगा। मामले की अगली सुनवाई 28 अक्टूबर को होगी। हाई कोर्ट की खंडपीठ ने दिसंबर, 2023 में निशिकांत दुबे की ओर जनहित याचिका को स्वीकृत करते हुए देवघर में बाबा बैद्यनाथ मंदिर के क्यू कॉम्पलेक्स का निर्माण जल्द करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने अपने पूर्व के आदेश में कहा था कि नवयुग कंपनी लिमिटेड के द्वारा सीएसआर के तहत देवघर में क्यू कॉम्पलेक्स के द्वितीय फेज के निर्माण के लिए 120 करोड़ देने का जो आग्रह किया था, उसे राज्य सरकार स्वीकार करें।

एक नजर

धनबाद विधानसभा के लिए एक अभ्यर्थी ने किया नॉमिनेशन

धनबाद : बुधवार को धनबाद विधानसभा के लिए निर्दलीय उम्मीदवार जनक शाह गोंड ने 40 धनबाद विधानसभा के निवार्ची पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी राजेश कुमार के समक्ष नामांकन पत्र दाखिल किया। वहीं जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा द्वारा विधानसभा चुनाव 2024 की अधिसूचना जारी करने के दूसरे दिन 20 अभ्यर्थियों ने नामांकन पत्र खरीदे। आज 38 सिंदरी विधानसभा के लिए सामान्य वर्ग के 1, 39 निरसा के लिए सामान्य वर्ग व अनुसूचित जाति/ जनजाति के एक-एक, 40 धनबाद के लिए सामान्य वर्ग के 4 व अनुसूचित जाति / जनजाति का 1, 41 झरिया विधानसभा के लिए सामान्य वर्ग में 3, 42 टुंडी के लिए सामान्य वर्ग व अनुसूचित जाति/ जनजाति के तीन-तीन तथा 43 बाघमारा विधानसभा के लिए सामान्य वर्ग में 3 अभ्यर्थियों ने नामांकन पत्र खरीदे।

बिना चालान बालू का परिवहन करते दो हाइवा जब्त

धनबाद : उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा के निर्देश पर जिले में खनिज संपदा के अवैध खनन, भंडारण व परिवहन के विरुद्ध कार्रवाई जारी रखते हुए जिला खनन टास्क फोर्स ने बीती रात बलियापुर व सरायढेला थाना क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए 2 हाइवा जब्त किया है। इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए खान निरीक्षक श्री बिनोद बिहारी प्रमाणिक ने बताया कि बीती रात 1:10 बजे से 3:00 बजे तक उनके नेतृत्व में श्री बसंत उरांव, श्री विजय करमाली, श्री सुमित प्रसाद एवं आवंटित सशस्त्र पुलिस बल के साथ संयुक्त रूप से खनिजों के अवैध खनन, परिवहन के विरूद्ध जांच अभियान चलाया। जांच के क्रम में बलियापुर थाना अंतर्गत हाइवा संख्या जेएच 10 सी.यू. 9341 को एवं सरायढेला थाना अंतर्गत हाइवा संख्या जेएच 10 बी.एल. 1282 को बिना परिवहन चालान के बालू का परिवहन करते हुए जब्त किया। दोनों हाइवा को संबंधित थाना को सुपुर्द कर सुसंगत धाराओं के अंतर्गत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

कसमार थाना के एसआई ने पत्रकार के साथ किया दुर्व्यवहार

कसमार : प्रखंड के पत्रकारों की एक बैठक बुधवार को कसमार स्थित शिवाजी चौक में आयोजित हुई। बैठक में कसमार थाना क्षेत्र के बरईकला निवासी वरिष्ठ पत्रकार नागेश्वर महतो के साथ कसमार थाना के एसआई रोजिद आलम के द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने की कड़ी निंदा की गयी। बैठक में श्री महतो ने बताया कि मंगलवार को शाम करीब सात बजे एएसआई रजिद आलम दो अन्य पुलिस कर्मियों के साथ उनके घर पहुंचे। रोजिद आलम ने खुद को कसमार का थाना प्रभारी बताया और धौंस दिखाना शुरू कर दिया। बार-बार पूछे जाने के बावजूद घर आने का कोई कारण नहीं बताया।वह घर के अंदर प्रवेश कर गये तथा परिवार के महिला-पुरुष सदस्यों के साथ दुर्व्यवहार किया। बैठक में पत्रकारों ने सर्वसम्मति से निंदा प्रस्ताव पारित किया।कहा कि श्री महतो क्षेत्र के वरिष्ठ, ईमानदार व सरल स्वभाव के पत्रकार हैं। उनके साथ इस तरह की घटना को किसी भी तरह से बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पत्रकारों ने बोकारो एसपी से दोषी पुलिस कर्मियों पर कार्रवाई करने की मांग की है। बैठक में निर्णय लिया गया कि दोषी पुलिस कर्मियों पर अगर कार्रवाई नहीं होती है तो कसमार एवं पेटरवार के पत्रकार आंदोलन का रास्ता अपनाने के लिए मजबूर हो जाएंगे।बैठक की अध्यक्षता पत्रकार दीपक सवाल एवं संचालन शेखर शरदेंदु ने किया।

विधानसभा चुनाव की तैयारियों का पुलिस उप-महानिरीक्षक ने लिया जायजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : विधानसभा आम निर्वाचन-2024 के मद्देनजर पुलिस उप-महानिरीक्षक कोयला क्षेत्र बोकारो की अध्यक्षता में विधानसभा चुनाव की जा रही तैयारियों के दृष्टिपथ से बैठक आहूत की गयी। उक्त आहूत बैठक मे पुलिस अधीक्षक बोकारो, सभी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सभी पुलिस उपाधीक्षक, सभी अंचल पुलिस निरीक्षक, सभी थाना,ओ०पी० प्रभारी शामिल हुए। बैठक के क्रम में अधोहस्ताक्षरी द्वारा अब तक की गयी तैयारियों की समीक्षा की गयी, तदोपरांत आगामी विधानसभा आम निर्वाचन- 2024 के मद्देनजर चुनाव के शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं स्वच्छ वातावरण मे संपन्न कराने से संबंधित विचार-विमर्श किया गया एवं निम्नांकित बिन्दुओं पर आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया । अपने-अपने थाना,ओ०पी० में लंबित जमानतीय तथा गैर जमानतीय वारण्ट, ईश्तेहार एवं कुर्की का त्वरित निष्पादन हेतु निर्देशित किया गया। फरारी / वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया। जिलान्तर्गत शस्त्र अनुज्ञप्तिधारियों का सत्यापन व शस्त्रों का ससमय जमा करना सुनिश्चित करने बीएनएसएस, 2023 की सुसंगत धाराओं 126, 127, 128, 129, आर/डबल्यू 170, 2023 & आर/डबल्यू 135 (3) , 2023 के तहत वैसे व्यक्ति जो चुनाव कार्य को बाधित कर सकते हैं, के विरूद्ध निरोधात्मक कार्रवाई करने। सक्रिय अपराधियों के विरूद्ध सीसीए प्रस्ताव भेजने, शांति भंग करने वाले व्यक्तियों का पहचान कर गुण्डा पंजी मे नाम प्रविष्टि करने, संपत्ति मूलक कांडो मे संलिप्त अभियुक्तों का निगरानी प्रस्ताव भेजना, दागियो ं का भौतिक सत्यापन कर निरोधात्मक कार्रवाई करने इत्यादि विषयों पर निर्देशित किया गया। एमसीसी (आदर्श आचार संहिता) का उल्लंधन करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध कांड दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई करने । मतदान भवनों, सी०ए०पी०एफ० एवं अन्य बाय बलों के आवासन स्थलों का भौतिक निरीक्षण करना सुनिश्चित करेंगे। साथ ही इन भवनो में आवश्यकता का आकलन कर अग्रतर कार्रवाई करने हेतु निर्देशित किया गया। जिलान्तर्गत अवस्थित 8 अन्तरर्राज्यीय चेकनाका व 6 अन्तरजिला चेकनाका को सक्रिय कर कैश, अवैध शराब, ड्रग्स, नारकोटिक्स एवं अन्य अवैध वस्तुओं तस्करी के रोकथाम व जप्ती करने व अवैध शराब एवं अवैध आग्नेयास्त्र के विरूद्ध लगातार छापामारी कर जप्ती / बरामदगी सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया। इसके अलावे अन्य बिन्दुओं पर विचार-विमर्श व आवश्यक निर्देश दिया गया।

स्टेशन से 178 नशीली गोलियों के साथ एक गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : धनबाद स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या दो के कालका छोर से नशा की दवाओं के साथ 24 परगना निवासी सुरजीत पोद्दार उर्फ खोखन पोद्दार को पकड़ा गया है। उसके पास से नशाखुरानी के उपयोग में की जाने वाली 178 गोलियां बरामद हुई। दिव्यांग शौचालय के पास रेलयात्री के साथ सुरजीत बैठा था. गुप्त सूचना के आधार पर मंगलवार की रात में आरपीएफ के इंस्पेक्टर पंकज कुमार के नेतृत्व में रिजर्व कंपनी धनबाद तथा राजकीय रेल थाना धनबाद के अधिकारियों ने उसे पकड़ लिया। मामला एनडीपीएस एक्ट की होने की संभावना को देखते हुए वरीय अधिकारी को सूचना दी गयी। डिप्टी एसआरपी रेल धनबाद जय गोविन्द प्रसाद गुप्ता देर रात पहुंचे। तत्पश्चात उक्त व्यक्ति से उसके आसमानी रंग के पिट्ठू बैग के आगे वाले चैन को खुलवाकर चेक किया गया, तो उसमें 12 पत्ता में 120 पीस नशीली गोली व सफेद कागज के पुड़ियों में 58 पीस नशीली गोली मिली। कोलकाता से खरीद कर लाया था दवा उसने बताया कि कोलकाता में किसी मेडिकल दुकान से उक्त औषधी खरीदी है. इसे वह नशाखुरानी में इस्तेमाल करता है। धनबाद से खुलने वाली ट्रेन संख्या 13307 गंगा सतलज एक्सप्रेस में अकेले यात्री को शिकार बनाने के लिए तथा उसके साथ नशाखुरानी कर उसका सामान चोरी करने के लिए धनबाद स्टेशन आया था। वह धनबाद से मुगलसराय के बीच वर्ष 2018 से 30-35 बार नशाखुरानी की घटना को अंजाम दे चुका है. इसी कारण वह कई बार जेल भी गया है।

लोडेड कट्टा के साथ एक गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बालीडीह थाना अंतर्गत 24 वर्षीय शुभम-कुमार लोडेड कट्टा के साथ धराया जिसे जेल भेज दिया गया है। इस संदर्भ में मंगलवार को डीएसपी, हेडक्वार्टर ने प्रेस वार्ता कर जानकारी दी कि बालडीह थाना को गुप्त सूचना मिली की बालीडीह थाना अंतर्गत विशुनपुर के पास एक व्यक्ति अपने पास एक देशी लोडेड कटटा अपने कमर में रखकर धुम रहा है।इस संदर्भ में पुलिस अधीक्षक को सूचित किया गया। जिनके द्वारा पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय के नेतृत्व में एक छापामारी दल का गठन किया गया। उक्त सूचना के आलोक में गठित टीम द्वारा विशुनपुर बालीडीह के पास एक व्यक्ति संदिग्ध हालत में घुमते हुए दिखा, जो पुलिस गाड़ी को देखते ही भागने का प्रयास किया। सशस्त्र बल के सहयोग से उसे खदेड़ कर पकड़ा गया। पुछताछ करने पर अपना नाम शुभम कुमार राय उर्फ शम्भु, पिता-संतोष कुमार राय, सा०-विशुनपुर बालीडीह, थाना बालीडीह, जिला बोकारो बताया। पकड़ाये व्यक्ति के बाएं कमर से तलाशी के दौरान एक देशी लोडेड क?ट्टा बरामद हुआ। पकड़ाया व्यक्ति शुभम कुमार राय एक शातिर अपराधकर्मी है, जिसके उपर पूर्व से भी कई अपराधिक मामले दर्ज हैं। इनके विरुद्ध बालीडीह थाना काण्ड सं0 317/24, दिनांक 23.10.24, धारा 25 (1-बी) ए/26 आर्म्स एक्ट दर्ज कर अग्रतर कारवाई की जा रही है। युवक से एक देशी कट्टा, एक जिंदा कारतुस, एक लोहे का पंच फाईटर व एक भिभो कम्पनी का मिल बरामद की गई। छापामारी दल में अनिमेश कुमार गुप्ता पुलिस उपाधीक्षक (मु०), नवीन कुमार सिंह, पु०नि० सह थाना प्रभारी, बालीडीह थाना, पु०अ०नि० वीरमणि कुमार, बालीडीह थाना, सअनि नवीन कुमार, बालीडीह थाना, पु०अ०नि० अभिशेक कुमार रंजन, बालीडीह थाना, पु०अ०नि० जितेन्द्र कुमार यादव, बालीडीह थाना, पु०अ०नि० शशिकान्त ठाकुर, बालीडीह थाना,स०अ०नि० धनेश्वर महतो, बालीडीह थाना ,पु०अ०नि० अजय कुमार राय, बालीडीह थाना, आरक्षी बैजनाथ राउत,आरक्षी 612 जबरा मुण्डू व आरक्षी मरियानुस जोजो शामिल थे।

एकीकृत झारखंड-बिहार-बंगाल के अग्रणी क्रांतिकारी नेता रहे हैं रघुनाथ महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : रघुनाथ महतो का जन्म ग्राम नरकोपी उर्फ दुमदुमी, प्रखंड तोपचांची, तत्कालीन जिला मानभूम में हुआ था। इनके पिता का नाम मेघलाल महतो था जो पेशा से कृषक थे। उनकी पत्नी का नाम माँदरी देवी था। वे तीन भाई थे - रघुनाथ महतो, चैतो महतो व महावीर महतो. भाइयों में सबसे बड़े थे। इनके दो संतान थे एक बेटा और एक बेटी।बेटा का नाम खगेनंद्र महतो तथा बेटी का नाम देवकी था। रघुनाथ महतो की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा नरकोपी से 37 किलोमीटर दूर एच ई हाई स्कूल धनबाद में हुई थी।यहीं रहकर माध्यमिक तक की शिक्षा पूरी की थी। इनके स्कूली सहपाठी स्वर्गीय विनोद बिहारी महतो थे। उन्होंने माध्यमिक (मैट्रिक) परीक्षा 1942 ईस्वी में पास कर ली थी। वे पढ़ने - लिखने में बहुत तेज थे। अपने गांव तक ही नहीं बल्कि आस पास के गांव के लोग इनका खूब आदर और सम्मान करते थे। उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को बड़ी महत्व दिया था। इनका मानना था कि बिना पढे लिखे समाज को सही दिशा देना काफी मुस्किल काम है। उस समय जमींदारी और महाजनी प्रथा का बोलबाला था। समाज में अन्धविश्वास चरम पर था।लोग सूदखोर और महाजन के चंगुल में जकड़े हुए थे। इसी वजह से समाज में सुधार लाने का संकल्प लिया। वे अच्छे खासे सरकारी नौकरी में थे। कोर्ट में पेशकार थे।यहाँ उन्होंने गांव ग्राम के लोगों को बेबजह परेशान होते बहुत नजदीक से देखा। यह नौकरी उन्हें रास नहीं आई। उन्होंने पेशकार की नौकरी त्याग करना उचित समझा।वे गांव में शिक्षा का अलख जगाने के लिये वापस अपने गांव चले आए। कुछ वर्षों तक तोपचांची में वे शिक्षक की नौकरी में रहे। फिर उन्होंने त्यागपत्र देकर समाज की सेवा में जीवन अर्पित करने का मन बना लिया।वे देश दुनिया की खबरों से हमेशा अपडेट रहते। आमलोगों को उनकी भाषा में सरल अंदाज में समझाते रहते थे।शाम को इनके पास हमेशा लोगों की मंडली बैठी रहती थी। वे अपने पास रेडियो रखते थे। राष्ट्रीय, अतर्राष्ट्रीय और प्रादेशिक समाचार को नियमित सुनते। बीबीसी लंदन इनका पसंदीदा चेनल था।

चेंबर ऑफ कॉमर्स ने पुलिस अधीक्षक से की मुलाकात, विधि-व्यवस्था के संबंध में सौंपा ज्ञापन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का एक प्रतिनिधिमंडल अध्यक्ष मनोज चौधरी के नेतृत्व में मनोज स्वर्गियारी आरक्षी अधीक्षक बोकारो से उनके कार्यालय में मुलाकात कर बोकारो जिला के विधि व्यवस्था के संबंध में ज्ञापन सौंपा। अध्यक्ष मनोज चौधरी ने नव पद स्थापित आरक्षी अधीक्षक मनोज स्वर्गियारी को बोकारो एसपी के रूप में पदस्थापना पर स्वागत करते हुए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। अध्यक्ष ने कहा की चास के जोधाडीह मोड़ ,महावीर चौक,धर्मशाला मोड़, चेक पोस्ट सहित बोकारो स्टील सिटी के सिटी सेंटर में ट्रैफिक जाम की स्थिति बनी रहती है। बोकारो जिले के जैना मोड़, फुसरो के बैंक मोड़ के पास हमेशा जाम लगा रहता है। आग्रह है कि यातायात व्यवस्था को दुरुस्त करवाया जाए। जमीन विवाद भी विधि व्यवस्था के खराब होने का बड़ा कारण है इस विषय पर भू माफियाओं पर अंकुश लगाने का कार्य किया जाए। थाना में गए आवेदकों के साथ उचित व्यवहार होना चाहिए और उनकी शिकायतों का यथाशीघ्र निवारण होना चाहिए। महामंत्री राजकुमार जायसवाल ने कहा की सिटी सेंटर बोकारो का प्रमुख व्यावसायिक केंद्र है यहां पर भारत के लगभग सभी प्रमुख बैंकों की शाखाएं अवस्थित है। आए दिन बैंकों से नगद राशि लेकर निकलते हुए ग्राहकों से पैसे छीन लिए जाते हैं। ऐसी ठोस व्यवस्था की जाए जिससे इस तरह की घटनाओं की पुनरावृति ना हो सके।

व्यय प्रेक्षकों ने की एफएसटी, एसएसटी टीम के साथ बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : विधानसभा चुनाव के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा धनबाद में नियुक्त व्यय प्रेक्षक आर.ए. ध्यानी एवं कुमार आदित्य ने बुधवार को न्यू टाउन हॉल में असिस्टेंट इलेक्शन ऑब्जर्वर, फ्लाइंग स्क्वायड टीम, स्टेटिक सर्विलांस टीम, वीडियो व्यूइंग टीम, वीडियो सर्विलेंस टीम, इंटर स्टेट तथा इंटर डिस्ट्रिक्ट चेक पोस्ट पर प्रतिनियुक्त पदाधिकारी तथा पुलिस पदाधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान उन्होंने निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव संपन्न कराने के लिए दिशा निर्देश दिए। इस अवसर पर व्यय प्रेक्षक श्री आर.ए. ध्यानी ने वीडियो सर्विलांस टीम को हर कार्यक्रम का वीडियो रिकॉर्ड करने से पहले तिथि, समय, स्थान, संबंधित पार्टी या अभ्यर्थी के नाम के साथ वीडियो रिकॉर्डिंग शुरू करने और कार्यक्रम की हर गतिविधि की बारीकी से रिकॉर्डिंग करने का निर्देश दिया। उन्होंने जिले के सभी दो पहिया वाहन डीलरों को एक साथ बड़ी संख्या में टू व्हीलर खरीदने वालों की सूचना व्यय कोषांग को देने का निर्देश दिया। साथ ही फ्लाइंग स्क्वायड टीम तथा स्टेटिक सर्विलांस टीम को एक्सपेंडिचर सेंसिटिव धनबाद, झरिया व बाघमारा विधानसभा में सतर्क रहकर नगद राशि, मादक पदार्थ, शराब सहित मुफ्त में बांटे जाने वाली सामग्रियों की हेरफेर पर तथा इंटर स्टेट चेक पोस्ट पर पैनी नजर रखने का निर्देश दिया। वहीं व्यय प्रेक्षक कुमार आदित्य ने कहा कि सभी अभ्यर्थियों का अपना अलग बैंक अकाउंट होना अनिवार्य है। इसी बैंक अकाउंट से अभ्यर्थी चुनाव से संबंधित ऑनलाइन, ऑफलाइन या नगद राशि खर्च करेंगे। उन्होंने कहा कि आगामी त्यौहारों को देखते हुए कई अभ्यर्थी मतदाताओं को प्रलोभन देने के लिए अपनी मॉडस ऑपरेंडी में परिवर्तन कर सकते हैं। इसलिए सभी एजेंसियां पैनी नजर रखकर अपने दायित्व का निर्वाहन करें। बैठक के दौरान व्यय प्रेक्षकों ने स्टार प्रचारक, पेड न्यूज, वीवीआइपी के आगमन के दौरान किए जाने वाले खर्च सहित अन्य बिंदुओं पर दिशा निर्देश दिए। इस मौके पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा ने सभी टीम को व्यय प्रेक्षकों के निदेर्शों का पालन करने तथा नगद राशि के हेर फेर पर सतर्क रहने का निर्देश दिया। वहीं वरीय पुलिस अधीक्षक श्री हृदीप पी जनार्दनन ने अन्य राज्यों से आने वाले सामग्रियों, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया पर नजर रखने तथा एसएसटी को स्थान बदल बदल कर सघन जांच करने का निर्देश दिया। बैठक में व्यय प्रेक्षक आर.ए. ध्यानी, व्यय प्रेक्षक कुमार आदित्य, उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा, वरीय पुलिस अधीक्षक हृदीप पी जनार्दनन, व्यय लेखा कोषांग के वरीय प्रभारी सह उपायुक्त अन्वेषण ब्यूरो गालिब अंसारी, व्यय लेखा कोषांग के नोडल पदाधिकारी सह राज्य कर सहायक आयुक्त ध्रुव नारायण राय, डीएसपी डी.एन. बंका, सुमित कुमार, उप निर्वाचन पदाधिकारी कालिदास मुंडा सहित अन्य लोग मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

जिला डेकोरेटर संगठन व धनबाद जिला विद्युत संघ की बकाए भुगतान को लेकर हुई बैठक

धनबाद : बुधवार को बरवाअड्डा में धनबाद जिला डेकोरेटर एसोसिएशन और धनबाद जिला विधुत संघ की बैठक प्रदीप कुमार सिंह और महादेव मंडल के संयुक्त अध्यक्षता में की गई। बैठक में दोनो संगठनो के केंद्रीय पदाधिकारी और बरवाअड्डा शाखा के सदस्यों ने भाग लिए। बैठक में निर्णय लिया गया की बरवाअड्डा के पानडुकी दूर्गा पूजा कमिटी के द्वारा पिछले वर्ष 2023 के दुर्गा पूजा कमेटी में एक सदस्य इमरान अहमद के द्वारा काम करवा कर अभी तक पचास हजार (50000) रूपए अभी तक भुगतान नही हो पाया। इस वर्ष भी कमिटी को इसकी सूचना ऐसोंशियसन के द्वारा दी गई। परन्तु इस विषय को नजरअंदाज करते हुए कमिटी ने नकद भुगतान की, ना ऐसोंशियसन के साथ कोई वार्ता की। मजबूरन बुधवार 23 अक्टूबर को दोनो ऐसोंशियसन के द्वारा निर्णय लिया गया की बरवाअड्डा के पनडुकी क्षेत्र मे किसी भी घर में और दुर्गा पूजा कमेटी में कोई भी एसोसिएशन के सदस्य काम नही करेंगे जबतक की बरवाअड्डा शाखा के सदस्य का पिछले बकाए राशी का भुगतान नही हो जाती है। यह सूचना दोनो संगठनो के पदाधिकारियों और सदस्यों को पत्र के माध्यम से दे दी गई है।

एमजीएम विद्यालय सेक्टर चार में युवा सांसद सत्र का हुआ आयोजन

बोकारो : चौथा युवा संसदीय सत्र का आयोजन एम जी एम विद्यालय सेक्टर चार में किया गया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में फादर डॉ. जोशी वर्गीस प्राचार्य एम जी एम स्कूल उपस्थित थे। संसदीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित की जाने वाले इस कार्य सत्र का उद्देश्य विद्यालय के युवाओं में संसदीय प्रणाली को बेहतर ढंग से जानने तथा उसके कार्य करने की प्रक्रिया से अवगत होना होता है। अतिथि एवं छात्र-छात्राओं का स्वागत उपप्राचार्या राखी बनर्जी ने किया ने किया। अतिथि प्राचार्य ने अपने संबोधन में बच्चों के इस कार्य की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के संसदीय कार्य गतिविधि में भाग लेकर के बच्चे देश के संसदीय कार्य प्रणाली से अवगत होते हैं तथा इस क्षेत्र में आगे बढ़ाने की अपनी रुचि को और मजबूत बनाते हैं। संसद सत्र की शुरूआत प्रोटेम स्पीकर का चुनाव तथा साथ ही संसदीय मंत्रियों के शपथ से की गई। प्रोटेम स्पीकर की भूमिका में कक्षा ग्यारहवीं की अथर्व झा ने नवनिर्वाचित सांसदों को सदस्यता की शपथ दिलवाई। कक्षा 12वीं की रायमा मंडल ने प्रधानमंत्री के पद की भूमिका निभाई । वहीं विपक्ष के नेता के रूप में कक्षा दसवीं की सक्षम झा थे। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री की भूमिका में अंशिका सिंघानिया थी। वहीं लोकसभा के उपाध्यक्ष की भूमिका अध्ययन कुमार सिंह कक्षा 11वीं ने निभाई। सत्र के प्रश्न काल के दौरान सांसद रोणित तिर्की ने वित्तीय मामलों को उठाया जिसका जवाब वित्त मंत्री की भूमिका में काजल ओझा दिया। वही सांसद अयान अजहर ने रेलवे के रख रखाव का मुद्दा उठाया जिसका जवाब मीरीनाल विनायक झा ने रेल मंत्री की भूमिका में दिया । सत्र के अंत में स्पीकर ने उपस्थिति एवं चर्चा में भाग लेने के लिए सभी युवा संसद सदस्यों को की सराहना।

बोकारो विधायक बिरंची नारायण का भाजपा के वरीय नेता डॉ प्रकाश सिंह ने किया अभिनंदन

बोकारो : विधानसभा के भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ प्रकाश सिंह अपने आदिवासी समर्थकों के साथ आज बोकारो विधायक सह बोकारो विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी बिरंची नारायण को तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी का उम्मीदवार बनने पर बोकारो नया मोड़ स्थित बिरसा आश्रम में भव्य स्वागत किया। आदिवासी समाज के लोगों ने परंपरा के अनुसार ढोल- नगाड़े, मंदार और आदिवासी नृत्य के माध्यम से स्वागत किया। वहीं दूसरी ओर डॉ प्रकाश ने फूल-माला, पुष्प वर्षा,गाजा- बाजा, चांदी का मुकुट, हाथों में तलवार और अंग वस्त्र दे कर पूरे उत्साह के साथ विधायक बिरंची नारायण का स्वागत किया । आदिवासी समाज ने यह शपथ लिया कि चुनाव में भाजपा उम्मीदवार को भारी मतों से विजय बनाकर बाबूलाल मरांडी जी के नेतृत्व में राज्य में भय,भूख, भ्रष्टाचार मुक्त सरकार बनानी है। इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए विधायक बिरंची नारायण ने कहा कि हेमंत सरकार की तुष्टिकरण कि नीतियों के कारण आज आदिवासियों की संख्या लगातार झारखण्ड में घटती जा रही है । झारखण्ड के संथाल और कोल्हान कि जनसांख्यिकी बहुत तेजी से बदल रही है । उन लोगों ने लैंड जिहाद कर रखा है । दिल्ली से आयुष्मान भारत योजना के लिए मोदी जी पैसा भेज रहे हैं परंतु उन पैसों को राज्य सरकार बंदर बांट कर रही है और झारखण्ड में लोगों का आयुष्मान भारत योजना से इलाज नहीं हो पा रहा है । उनहाने कहा कि बोकारो विधानसभा में गांव गांव को सड़क से जोड़ने और वहां बिजली पहुँचाने का काम उन्होंने किया है।

एनजेसीएस के सभी घटक यूनियनों ने हड़ताल को सफल बनाने हेतु की बैठक

बोकारो : सेल प्रबंधन की आधा अधुरा वेतन समझौता के खिलाफ आगामी 28 अक्टूबर की सेल व्यापी हड़ताल को सफल बनाने के लिए एनजेसीएस घटक युनियनों की ओर से एसएमएस 2 सीसीएस विभाग के डिस्पैचर के समक्ष कर्मचारियों की सभा की गई। सभा की अध्यक्षता सीसीएस के कर्मचारी प्रवेश कुमार ने किया। मजदूर सभा को सम्बोधित करते हुए एनजेसीएस नेताओं ने कहा कि सेल प्रबंधन पिछले तीन वर्षों से वेतन समझौता को लटका कर रखी है। आधा-अधूरा वेतन समझौता के तहत मजदूरों को दिया गया नया वेतन का 39 माह का एरियर भी प्रबंधन देना नहीं चाहती है। वेतन समझौता करना हीं नहीं चाहती है जो हमारी द्विपक्षीय एनजेसीएस कमिटी द्वारा स्थापित परम्परा और मयार्दा के खिलाफ है। सेल मजदूरों का ग्रैच्युटी पर एकतरफा निर्णय लेकर सिलिंग लगा दिया गया है। 2021 से हमारा बकाया पर्क्स का एरियर भी नहीं देना चाहती है। प्लांट का उत्पादन-उत्पादकता , मुनाफा मजदूरों के कठीन परिश्रम से लगातार बढ़ता जा रहा है फिर भी सम्मान जनक बोनस मजदूरों को नहीं दिया जा रहा है। सभी युनियनो ने प्रबंधन द्वारा तय किया गया बोनस राशि को ठुकराते हुए मांग किया है कि 40,500/- रूपए से ज्यादा बोनस मजदूरों को देना ही होगा। ठेका मजदूरों को एडब्लूए के रूप में दी जाने वाली राशि को बेसिक पे में शामिल करना होगा।

लोकतंत्र के महापर्व में सभी की भागीदारी आवश्यक, 13 को सभी करें मतदान : डीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : विधानसभा चुनाव को लेकर पलामू में उत्सव का माहौल बनने लगा है। मतदान को लेकर मतदाता भी तैयार हो रहें हैं। स्थानीय प्रशासन द्वारा मतदाताओं को मतदान के लिए लगातार प्रेरित किया जा रहा है। स्वीप कार्यक्रम के तहत प्रतिदिन विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है, ताकि मतदाता अपने संबंधित मतदान केंद्रों पर पहुंचकर मतदान करें। इसी कड़ी में आज 78-छतरपुर निर्वाचन क्षेत्र के पाटन प्रखंड अंतर्गत कसवाखांड़ पंचायत के होमिया गांव में लोकतंत्र का उत्सवी माहौल देखने को मिला। गांव में निवास कर रहे विलुप्त प्राय परहिया जनजातियों को स्थानीय प्रशासनिक पदाधिकारियों ने मतदान के लिए प्रेरित/जागरूक किया। स्वीप कार्यक्रम के तहत गांव

के उत्क्रमित मध्य विद्यालय होमिया में अवस्थित मतदान केंद्र संख्या 276 के मतदाताओं के लिए विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त शशि रंजन ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। उपायुक्त ने मतदाताओं से 13 नवंबर 2024 को मतदान कर लोकतंत्र के इस महापर्व में भागीदार बनने की अपील की। उन्होंने कहा कि मतदान हमारा अधिकार है और इसमें सभी को भागीदार बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि मतदान दिवस के दिन सभी मतदाता अपने-अपने संबंधित मतदान केंद्र पर पहुंचे और मतदान करें। साथ ही दूसरे मतदाताओं को भी मतदान करने हेतु प्रेरित करें। विदित हो कि पाटन प्रखंड का कसवाखांड़ पंचायत के होमिया गांव पाटन के अति दुर्गम क्षेत्र में अवस्थित है। यहां विलुप्तप्राय परहिया जनजाति निवास करती है और यहां पिछले लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत कम रहा था। यह पाटन प्रखंड का एकमात्र पीवीटीजी चिन्हित मतदान केंद्र है। शासन-प्रशासन के वरीय पदाधिकारियों को अपने बीच देखकर यहां के मतदाता काफी उत्साहित थे और सभी ने मतदान करने की शपथ ली। कार्यक्रम में जिला निर्वाचन पदाधिकारी -सह-उपायुक्त शशि रंजन, नगर आयुक्त जावेद हुसैन, प्रखंड विकास पदाधिकारी अमित कुमार झा, अंचल अधिकारी, सदर एसडीपीओ, नावा जयपुर के थाना प्रभारी आदि उपस्थित रहे। स्वीप कार्यक्रम के तहत विभिन्न गतिविधियों का हुआ आयोजन परहिया जनजातियों के लिए चिन्हित उत्क्रमित मध्य विद्यालय होमिया अवस्थित मतदान केंद्र संख्या 276 परिसर में विभिन्न मनोरंजक खेलों एवं विभिन्न गतिविधियों का आयोजन हुआ। मुख्य रूप से आंखों में पट्टी बांधकर मटका फोड़ प्रतियोगिता, हैंडबॉल से ग्लास का पिलर गिराओ प्रतियोगिता, गुलेल से निशाना लगाने संबंधी प्रतियोगिता, बच्चों के लिए ड्राइंग बुक में रंग भरो कार्यक्रम, प्लास्टिक बॉल को बाल्टी में डालकर गोल करो प्रतियोगिता, चक्कर खाओ-दौड़ लगाओ प्रतियोगिता सहित अन्य गतिविधियों का आयोजन किया गया।

विश्रामपुर की जनता ने ठाना है, न सहेंगे न कहेंगे, बदल के रहेंगे : विकास दुबे

मेदिनीनर (पलामू) : विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र से झारखंड युवा विकास पार्टी, के उम्मीदवार जागृति दुबे अपने हजारों समर्थकों के साथ किया अपना नामांकन पत्र दाखिल नामांकन दाखिल करने के बाद प्रेस से वार्ता करते हुए, जागृति दुबे ने कहा कि विश्रामपुर विधानसभा के विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र के गरीब जनता को यहां के जनप्रतिनिधियों ने बारी-बारी से लूटने का सिर्फ काम किया है सरकारी योजनाओं में लूट और खसोट और भ्रष्टाचार जनप्रतिनिधियों का ही देन है अगर जनप्रतिनिधि ईमानदार होगा तो किसी की हिम्मत नहीं है कि गरीब गुरुओं से किसी सरकारी योजना का लाभ देने में पैसा ले, लेकिन विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र में सरकारी योजनाओं में लूट और भ्रष्टाचार का बोलबाला है मैं राजनीति में नहीं उतारना चाहती थी लेकिन जनता के दुख दर्द को देखकर और जनता के मांग पर विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने जा रही हूं ,अगर मुझे जनता का आशीर्वाद प्यार और समर्थन मिला तो फिर विश्रामपुर विधानसभा की तकदीर और तस्वीर बदलकर रख दुगी ,हर लोगों को वाजिब हक मिलेगा।

एसएस हाई स्कूल में डेलेक्सीया जागरूकता अभियान चलाया गया

अनगड़ा : रांची जिला अनगडा चिलदाग एस एस हाई स्कूल प्लस टू में डेलक्सीया जागरूकता अभियान चलाया गया इसका मुख्य उद्देश्य है कि इस बीमारी के बारे में लोगो को बताना और कैसे इन बीमारी का इलाज कराए और पड़ने उच्चारण में सुनने में अक्सर गलतियां होती है इस तरह के बच्चो काफी परेशानी होती हैं इसको लेकर टीचर पैरेंट्स बहुत चिंतित होते हैं क्योंकि उच्चारण बोलने सुनने में गलती होती है जिससे उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते और पैरेंट्स गुसा हो जाते है बच्चे को मार पिट करते हैं उसके लिए बच्चे को चेकअप कराने कि जरूरत हैमौके पर प्रिंसीपल मेडम संगीता देवी ओर स्कूल के टीचर स्टाफ आदि शामिल थे।

खिजरी विधानसभा के पूर्व विधायक राजेश कच्छप आज करेंगे नामांकन दाखिल

अनगड़ा : इंडिया महागठबंधन के खिजरी विधानसभा क्षेत्र के अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी राजेश कच्छप 24 अक्टूबर समय 1:00 बजे अपना नामांकन दाखिल करेंगे। नामांकन के पूर्व सुबह 8:00 बजे अपने पैतृक आवास लुपुंगटोली, नामकुम से अपने माता-पिता से आशीर्वाद लेकर प्रस्थान करेंगे।

संत माइकल स्कूल में ड्राइंग तथा निबंध लेखन प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : मुरी संत माइकल + 2 स्कूल, मुरी में ड्राइंग, पेंटिंग एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित कि गई। इस प्रतियोगिता में बच्चों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया तथा बहुत सुंदर- सुंदर ड्राइंग तथा पेंटिग बनाए। बहुत अच्छी तरह से कविता वाचन किए तथा सरल शब्दों में ज्ञानवर्धक निबंध भी लिखें। बच्चे काफी उत्साहित थे। इस प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र एवं मेडल देकर सम्मानित किया गया। स्कूल निर्देशक श्री राकेश कुमार ने इस मौके पर विजेता बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि इस तरह प्रतियोगिता परीक्षाओं में भाग लेने से छात्र छात्राओं का स्वर्णिम विकास होता है एवं उन्हें खुद को बेहतर साबित करने का अवसर भी मिलता है। स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सी. एल. प्रजापति ने कहा जितना अधिक बच्चे प्रतियोगिता में भाग लेगे उतने ही अधिक अपनी छिपी प्रतिभा को निखारेंगे और अधिक सफलता मिलेगी। स्कूल प्रबंधक डॉ. रूपेश कुमार ने खुशी जाहिर करते हुए सभी विजेताओ को बधाई एवं उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दिए एवं सभी शिक्षको को प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिए। इस मौके पर स्कूल के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ वि. वेनेकेट राव,किशोर कुमार, मनीषा सिंह, रमेश गोराई, सुशील कुमार, शिमा झा,प्रीति नंदा, श्वेता रेजिस भेंगरा,सोमंशी कुमारी तिवारी, हनी कश्यप एवं सभी छात्र छात्राएं उपस्थित थे ।

एसएसबी के महानिरीक्षक ने किया मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण का शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : रांची नक्सल प्रभावित क्षेत्र में तैनात 26वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल, अनगड़ा में महानिरीक्षक नैय्यर हसनैन खान ने तीन दिवसीय दौरे के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। दौरे के पहले दिन, खान ने वाहिनी परिसर का निरीक्षण किया, जहां कमांडेंट श्री एस.डी. शेरखाने ने जवानों के लिए किए गए कल्याणकारी कार्यों और सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। महानिरीक्षक ने इन प्रयासों की सराहना करते हुए भविष्य में और कल्याणकारी योजनाओं की शुरूआत के लिए निर्देशित किया। महानिरीक्षक ने जवानों से संवाद करते हुए उनके मनोबल को बढ़ाया और नक्सल विरोधी अभियानों में तेजी लाने का आह्वान किया। इस अवसर पर, एक बड़े सहभोज का आयोजन भी किया गया, जिसमें सभी अधिकारी और जवान शामिल हुए। इसके बाद, महोदय ने 26वीं वाहिनी की ऋ समवाय अड़की, जिला-खूंटी में चार दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में अड़की समवाय क्षेत्र के 25 ग्रामीणों और 25 बलकर्मियों ने भाग लिया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए लेखन सामग्री का वितरण भी किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ के साथ ही, महोदय ने अड़की समवाय में नवनिर्मित शहद पुष्प वाटिका का उद्घाटन भी किया और सभी प्रशिक्षुओं से नागरिक कल्याण एवं कौशल विकास कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी की अपील की।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त का कार्यालय, सिमडेगा

(उत्पाद शाखा)

-: आदेश :-

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी –सह– सचिव, मंत्रिमंडल (निर्वाचन) विभाग, झारखंड, रॉची के पत्रांक– 01/नि0 (वि0स0) –16–23/24/5488 दिनांक– 15.10.2024 एवं संयुक्त आयुक्त उत्पाद, उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग, झारखंड, रॉची के पत्रांक– 2207 दिनांक–18.10.2024 के द्वारा दिये गये निदेश के आलोक में 59 तोरपा (ST), 70 सिमडेगा (ST) विधान सभा क्षेत्र तथा 71 कोलेबिरा (ST), विधान सभा क्षेत्रों में झारखण्ड विधान सभा सामान्य निर्वाचन, 2024 के अवसर पर सिमडेगा जिलान्तर्गत सभी प्रकार की मदिरा तथा मादक पेय पदार्थो की बिक्री को प्रतिबंधित करते हुए झारखंड उत्पाद अधिनियम, 1915 की धारा 26(1) के अन्तर्गत प्रदत शक्तियों का उपयोग करते हुए मैं अजय कुमार सिंह, भा0प्र0से0, जिला निर्वाचन पदाधिकारी–सह–उपायुक्त, सिमडेगा लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 135(ग) के आलोक में आदेश देता हूँ कि उक्त निर्वाचन के अवसर पर निम्नांकित अवधि हेतु मतदान क्षेत्रों में मतदान समाप्ति के लिये नियत समय के 48 घंटा पूर्व एवं मतगणना की तिथि को सम्पूर्ण सिमडेगा जिला में शुष्क दिवस (Dry Day) घोषित किया जाता है।

	मतदान/मतगणना की निर्धारित तिथि	शुष्क दिवस	मतदान का क्षेत्र	शुष्क दिवस (ड्राई डे) की अवधि
प्रथम चरण, निर्वाचन	13.11.2024	सम्पूर्ण सिमडेगा जिला	59 तोरपा (ST), 70 सिमडेगा (ST) विधान सभा क्षेत्र तथा 71 कोलेबिरा (ST) विधान सभा क्षेत्र	दिनांक–11.11.2024 के 5:00 बजे अपराहन से दिनांक–13.11.2024 के अपराहन 5:00 बजे तक।
मतगणना	23.11.2024	सम्पूर्ण सिमडेगा जिला	–	सम्पूर्ण दिन (23.11.2024)

शुष्क दिवस की उक्त अवधि में सिमडेगा जिले की सभी शराब दुकानें, होटल, सहित अन्य उत्पाद अनुज्ञप्ति प्राप्त परिसर पूर्णतः बंद रहेंगे तथा किसी प्रकार के होटल, भोजनालय, पाकशाला, दुकान तथा शराब बेचने या परोसने वाले प्रतिष्ठान में अथवा निजी या सार्वजनिक स्थल पर कोई भी स्प्रिटयुक्त, मादक लिकर या वैसी प्रकृति का कोई अन्य पदार्थ न तो विक्रय किया जायेगा, न परोसा जाएगा और न ही वितरित किया जायेगा।

ह0/–
जिला निर्वाचन पदाधिकारी,
–सह–उपायुक्त,सिमडेगा

PR 339464 Simdega (24-25)_D

प्रेम वाटिका में चुनाव को लेकर भाजपा की बैठक का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली/मुरी: सिल्ली प्रखंड अंतर्गत बुधवार के दिन प्रेम वाटिका में भाजपा ग्रामीण जिला अध्यक्ष विनय महतो धीरज की अध्यक्षता में आगामी विधानसभा चुनाव में एनडीए प्रत्याशी सुदेश कुमार महतो के साथ भारतीय जनता पार्टी सिल्ली विधानसभा स्तरीय परिचयात्मक बैठक का आयोजन किया गया। सभा को संबोधित करते हुए सिल्ली विधायक सुदेश कुमार महतो ने कहा कि हमें आपसी तालमेल और सामंजस्य के साथ चुनाव लड़ना है। वर्तमान में एनडीए गठबंधन ही झारखंड का कायाकल्प कर सकती है। इसके लिए हम लोगों को परिश्रम कर पूरे राज्य में एनडीए की सरकार बनाने में एकजुटता का परिचय देना होगा और पूर्ण बहुमत की सरकार बनानी होगी साथ ही साथ हमें किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाना है बल्कि सभी को साथ लेकर काम करने की आवश्यकता है। वहीं पटना के विधायक संजीव चौरसिया ने संबोधित करते हुए कहा कि कार्यकर्ता ही पार्टी की रीढ़ की हड्डी होते हैं। कार्यकर्ता के परिश्रम से ही अच्छे परिणाम आने की प्रबल संभावनाएं रहती हैं। एकजुट होकर संगठन का कार्य में अभी से लग जाए ताकि पूरे प्रदेश में एनडीए गठबंधन की सरकार बन सके। अंत में सभा का समापन प्रखंड अध्यक्ष अंबुज रजक ने की। बैठक में सिल्ली विधानसभा चुनाव प्रभारी जितेंद्र सिंह पटेल, धनंजय पांडे, भाजपा के वरिष्ठ नेता राजाराम महतो, रेखा देवी भी मंच पर उपस्थित थी।

आरटीसी पब्लिक स्कूल को मिली सीबीएसई से प्लास टू की मान्यता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : आरटीसी पब्लिक स्कूल को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ल से प्लास टू तक की तीनो संकाय साइंस, कॉमर्स और आर्ट्स की मान्यता मिल गई है। यह जानकारी विद्यालय के चेयरमैन एवं पूर्व सांसद राम टहल चौधरी ने बुधवार को प्रेस वार्ता कर दी। उन्होंने कहा की यह अनगड़ा क्षेत्र के लिए गर्व की बात है अब बच्चों की बारहवीं तक की पढ़ाई स्कूल में ही होगी अब उन्हें पढ़ाई के लिए के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। स्कूल में प्लास टू के तीनो संकाय साइंस, कॉमर्स और आर्ट्स में नामांकन और उनकी सभी कक्षाएं पूर्ण रूप से संचालित होगी। जी ए वी एस सोसाइटी के प्रेसिडेंट प्यारेलाल महतो ने कहा कि छात्रों को आई आई टी खएए, ठएएळ, की पूर्ण तैयारी

अनुभवी शिक्षकों के द्वारा कराई जाएगी। उन्होंने बतलाया की आरटीसी पब्लिक स्कूल की स्थापना 2016 में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को आधुनिक एवं बेहतर शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से खोला गया था। विगत आठ वर्षों से स्कूल ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान कर रही है। और क्षेत्र में एक अलग पहचान बना ली है। विद्यालय के सचिव डॉ पारसनाथ महतो ने बताया कि स्कूल में अत्याधुनिक कंप्यूटर लैब, बड़ी और पांच हजार से अधिक पुस्तकों की लाइब्रेरी,फिजिक्स लैब, केमेस्ट्री लैब, बायोलॉजी लैब, कंपोजित लैब, मैथ लैब, स्मार्ट कलास, खेलकूद की सभी सुविधा उपलब्ध है। उन्होंने कहा की इतने कम समय में ही स्कूल इस ऊंचाई तक पहुंच गया है यह शिक्षा के प्रति दृढ़ संकल्प और शिक्षकों की कड़ी मेहनत अभिभावकों एवं बच्चों के विश्वास और सहयोग के कारण ही हो पाया है।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त का कार्यालय, लातेहार

(जिला निर्वाचन शाखा)

(E-mail id:- dy.colatehar1@gmail.com

-:: आदेश ::-

लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 160 के तहतप्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मैं **उत्कर्ष गुप्ता (भा0प्र0से0)** जिला निर्वाचन पदाधिकारी–सह–उपायुक्त, लातेहार विधानसभा आम निर्वाचन–2024 के निमित्त दिनांक 04.11.2024 से मतदान प्रक्रिया की समाप्ति तक लातेहार जिलाअन्तर्गत अधोलिखित भवनों को विभिन्न प्रयोजनार्थ उनके कैम्पस/उपस्कर सहित अधिग्रहण करता हूँ :–

क्र0 स0	प्रखण्ड का नाम	अधिग्रहित भवन
1	चंदवा	चंदवा ब्लॉक कैम्प
2		मध्य विद्यालय सांसग
3		उ0म0वि0 महुआमिलानरोल
4		लोहरसी पी0एच0सी0
5		परियोजना +2 विद्यालय सासंग
6		आई0टी0आई0 चंदवा
7	लातेहार	उ0उ0वि0/रेलवे स्टेशनरिचुगुटा
8		डिग्री कॉलेज विशुनपुर
9		मॉडल स्कूल गोवा
10		मध्य विद्यालय आश्रम
11		+2 उच्चविद्यालय, चंदनडीह
12		उच्चविद्यालय, उदयपुरा
13		सी0एम0 एक्सीलेंस, बालिका +2 धर्मपुर
14		एकलव्य विद्यालय, लातेहार
15		केन्द्रीय विद्यालय, किनामाड, मॉगरमोड, लातेहार
16		नर्सिंगहॉस्टल, माको
17		माकोडाक बंगला, लातेहार
19	बालूमाथ	+2 उच्च विद्यालय, बालूमाथ
20		उच्च विद्यालय, मुरपा
21		बुनियादी विद्यालय, झाबर
22		उच्चविद्यालय, शेरेगढा
23		बुनियादी विद्यालय, बालूमाथ
24		उच्च विद्यालय, झाबर
25		उच्च विद्यालय, बसिया
26	बारियातु	उ0 उच्च विद्यालय, फुलसु
27		उ0 उच्च विद्यालय, गोनिया
28		प्रोजेक्ट उच्च विद्यालय, बारियातु
29		उ0उच्च विद्यालय, टॉटीहेसला
30		PWD गेस्टहाउस, बारियातु
31	हेरहंज	उच्च विद्यालय, घुरै
32	बरवाडीह	उ0मध्य विद्यालय, हेहेगडा
33		परियोजना उच्च विद्यालय, छिपादोहर
34	मनिका	स्वास्थ्य उपकेन्द्र, जेरूवा
35		सी0एम0 एक्सिलेंस स्कूल, मनिका,
36		उच्चविद्यालय, मनिका
37		डिग्री कॉलेज मनिका।
38	गारु	मध्य विद्यालय, सरयु
39		एकलव्य विद्यालय, गारु
40		मिशन स्कूल, मायापुर
41	महुआडांड	श्रा0उ0म0वि0 बासकरचा
42		प्रोजेक्ट उच्च विद्यालय, महुआडांड
43		एस0टी0एस0सी0 आवासीय विद्यालय, महुआडांड
44		बालिका आवासीय उच्च विद्यालय, महुआडांड
45		जेवियर उच्च विद्यालय, गोठगाव
46		आश्रम, बोहटा
47		उपस्वास्थ्य केन्द्र, बरदौनीकलां
48		रा0उ0वि0, लोहर
49		रा0म0वि0, बराही
50		मिशन स्कूल, पकरीपाट
51		जिला परिषद गेस्टहाउस, महुआडांड़

उपरोक्त सभी संबंधित कार्यालय प्रधान को आदेशित करता हूँ कि वे संबंधित भवनों को चुनाव कार्यहेतु उपरांकित अवधि के लिए जिला प्रशासन, लातेहार को (उपस्कर सहित) उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी
–सह–उपायुक्त, लातेहार

PR 339431 Election (24-25)_D

जनता करे बदलाव तभी डालटेनगंज का होगा विकास : रूचिर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू): भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव कर राष्ट्रीय परिषद सदस्य रुचिर तिवारी ने आज डाल्टनगंज विधानसभा से विधायक के रूप में अपना नामांकन हजारों कार्यकताओं के साथ मांदर के ताप पर थिरकते हुए नामांकन दाखिल किया इससे पहले हजारों कार्यकताओं सहित युवा बिजनेसमैन मनीष दुबे ने उनका फूल माला पहनकर स्वागत किया मौके पर नामांकन से पहले विधायक उम्मीदवार रुचिर तिवारी ने जनसभा को संबोधित होते करते हुए कहा कि पलामू के विकास गरीब मजदूर किसान दलित आदिवासियों और मिडिल क्लास के विकास के लिए मैं डाल्टनगंज विधानसभा से चुनाव लड़ रहा हूं लेकिन ठीक इसके

विपरीत जो भी भाजपा और कांग्रेस एवं अन्य व्यक्ति विधायक के उम्मीदवारी भर रहे हैं वह सिर्फ अपना विकास चाह रहे हैं और आज तक ऐसे जनप्रतिनिधियों ने सिर्फ अपना ही विकास किया है तभी तो उनका दिन दोगुना रात चौगुन संपत्ति बढ़ रहा है लेकिन डाल्टनगंज विधानसभा क्षेत्र के वासियो का कोई विकास नहीं हुआ आज भी युवा बेरोजगारी का दंश झेल रहे हैं ऐसी स्थिति में मैं आम अवाम से यह अपील करता हूं कि युवा छात्र नौजवान किसान मजदूर दलित आदिवासियों एवं मिडिल क्लास के लोगों को बदलाव के इस बेयार में साथ दे। एवं धोखेबाज भ्रष्ट व्यक्ति को सबक सिखाएं। नामांकन रैली में सभा को संबोधित करते हुए राज्य सचिव महेंद्र पाठक ने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी हमेशा से किसान मजदूर छात्र नौजवानों के हितों के रक्षा के लड़ाई के लिए लड़ते आई है आप सभी रुचिर कुमार तिवारी का साथ दें एवं डाल्टनगंज विधानसभा की तकदीर को बदलें।

झूठ की बुनियाद पर टिका भाजपा का सदस्यता अभियान

निर्मल रानी

भाजपा इस सदस्यता अभियान के माध्यम से यह साबित करना चाहती है कि भारतीय जनता पार्टी ही विश्व का सबसे बड़ा व सबसे अधिक सदस्यों वाला राजनैतिक दल है। और इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये पार्टी के नेताओं व कार्यकताओं द्वारा झूठ व अनैतिकता की सभी हदों को पार किया जा रहा है।

भारतीय जनता पार्टी द्वारा आजकल राष्ट्रीय स्तर पर सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है। इसी दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्य नाथ साहित भाजपा के अनेक बड़े नेता पार्टी के सदस्य अथवा सक्रिय सदस्य बन चुके हैं। परन्तु एक बार फिर भाजपा का यह सदस्यता अभियान विवादों में पड़ गया है। भाजपा इस सदस्यता अभियान के माध्यम से यह साबित करना चाहती है कि भारतीय जनता पार्टी ही विश्व का सबसे बड़ा व सबसे अधिक सदस्यों वाला राजनैतिक दल है। और इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये पार्टी के नेताओं व कार्यकताओं द्वारा झूठ व अनैतिकता की सभी हदों को पार किया जा रहा है। आश्चर्य है कि हाल में हुये लोकसभा चुनावों में 63 लोकसभा सीटें गंवाने के बावजूद अभी भी भाजपा न जाने किस आधार पर अपने सदस्यों की संख्या में इजाफा करना चाह रही है?

दरअसल कई राज्यों में भाजपा, सदस्यता अभियान में निर्धारित अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर पा रही है। इसके लिये उसके नेता व कार्यकर्त्ता साम दाम दंड भेद सभी हथकंडे अपनाकर किसी भी तरह से सदस्यों की संख्या में बढ़ोत्तरी करना चाह रहे हैं। मिसाल के तौर पर गुजरात में 2 करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य पार्टी द्वारा निर्धारित किया गया था। गुजरात भाजपा ने सदस्यता अभियान के तहत पिछली बार से ज्यादा सदस्य बनाने के लिए खास योजना बनाई है। सरपंच से लेकर सांसद तक सभी 100-100 प्राथमिक सदस्य बनाएंगे। परन्तु इस लक्ष्य तक पहुंचना संभव नहीं था। एक रिपोर्ट के अनुसार भावनगर में स्थानीय नेता 100 सदस्य जोड़ने के लिए 500 रुपये भी ऑफर कर रहे हैं क्योंकि निर्धारित तिथि 15 अक्टूबर तक 2 करोड़ का लक्ष्य पूरा करने के लिये प्रतिदिन 8 लाख से अधिक सदस्य बनने जरूरी थे। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिये भाजपाई जिस स्तर तक गये हैं उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। गुजरात में कई शहरों में स्कूली बच्चों तक को सदस्यता दिला दी गई। अनेक लोगों को तो उनका केवल फोन नंबर लेकर ही बिना बताए उन्हें भाजपा का सदस्य बना दिया गया। यह रहस्य तब उजागर हुये जब अपनी सदस्यता से अनजान कई छात्रों व आम लोगों के मोबाइल पर भाजपा का सदस्य बनने से सम्बंधित 'बधाई संदेश' आने

लगे।

गुजरात में न केवल स्कूली बच्चों और उनके अभिभावकों तक को सदस्य बनाया गया बल्कि अस्पताल के मरीजों, नर्मदा में ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यकर्ता और भावनगर में 100 नए सदस्यों को नामांकित करने के लिए स्थानीय पार्टी नेताओं द्वारा 500 रुपये देने की योजना तक शामिल थी। खबरों के अनुसार जब एक महिला अपने पति के साथ रेबीज का इंजेक्शन लगवाने के लिए विसनगर के एक जन स्वास्थ्य केंद्र गयी तभी एक कर्मचारी ने उनका मोबाइल नंबर पूछा और फिर मोबाइल पर आया ओटीपी माँगा। और जैसे ही उन्होंने ओटीपी शेयर किया उसी समय मरीज को भाजपा का प्राथमिक सदस्य बनने के लिए बधाई संदेश मिला। हालांकि मरीज महिला के पति ने सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों द्वारा उन्हें चुपके से भाजपा सदस्य बनाने पर आपत्ति जताई। उन्होंने स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों और रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर (आरएमओ) से बात करते हुए अपने फोन पर एक वीडियो रिकॉर्ड किया कि उन्हें बिना बताए या उनकी सहमति के बिना उन्हें भाजपा सदस्य के रूप में क्यों नामांकित किया गया। रोगी के पति विकुंभ दरबार ने घटना के बाद स्थानीय मीडिया को बताया कि 'आज सुबह, मैं और मेरी पत्नी एंटी रेबीज इंजेक्शन के लिए विसनगर सिविल अस्पताल गए क्योंकि उन्हें कुत्ते ने काट लिया था। पहली बार, हमें इंजेक्शन पाने के लिए एक ओटीपी साझा करने के लिए कहा गया था। शुरू में, हमें रजिस्टर में चेक इन करने के लिए कहा गया था, और जब हम इंजेक्शन के लिए आगे बढ़े, तो अस्पताल के कर्मचारी ने एक ओटीपी मांगा। मैंने पूछा कि इसकी आवश्यकता क्यों है, इसपर उस ने जवाब दिया कि - 'यदि आप इंजेक्शन चाहते हैं, तो आपको ओटीपी प्रदान करना होगा।' जब मैंने इस नियम पर सवाल उठाया, तो उन्होंने दावा किया कि यह एक नया सिविल अस्पताल विनियमन है।

इसी तरह गुजरात में ही राजकोट के जूनागढ़ के रणछोड़ दास ट्रस्ट अस्पताल का एक बेहद गंभीर मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि राजकोट के इस अस्पताल में आंख के मोतियाबिंद का ऑपरेशन कराने गए 250 मरीजों को रात में नींद से उठाकर बीजेपी का सदस्य बना दिया गया। इसका खुलासा उस समय हुआ जबकि एक मरीज ने इस पूरी घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। कमलेश भाई ठुम्मर अपनी आंखों का ऑपरेशन कराने इसी अस्पताल में गए थे। जहां उनके साथ 250 से ज्यादा और भी मरीज भर्ती थे। कमलेश के मुताबिक आधी रात को एक व्यक्ति आया और अचानक सभी मरीजों को नींद से उठाकर उनसे ओटीपी मांगने लगा। मुझसे (कमलेश भाई) भी ओटीपी पूछा। जब मैंने ओटीपी भेज दिया तो फोन में मैसेज आया कि 'बधाई हो, आप बीजेपी के सदस्य बन गए हैं'। जब कमलेश ठुम्मर ने मैसेज देखकर उस व्यक्ति से पूछा कि क्या आप बीजेपी का सदस्य बना रहे हो? तब उसने जवाब दिया कि -'इसके बिना उद्धार नहीं'। यदि किसी मरीज को ओटीपी नहीं पता चलता था, तो वह कर्मचारी स्वयं मरीज का फोन अपने हाथ में ले लेता और उसे भाजपा का सदस्य बना देता। इस कर्मचारी ने वार्ड के 200 से 250 मरीजों को बीजेपी का सदस्य बना दिया। कहना गलत नहीं होगा कि इस जबरन भाजपा सदस्य बनाने के इस अभियान में अस्पताल की भी मिली भगत जरूर रही होगी।

इसी तरह मध्य प्रदेश में भी जोर जबरदस्ती से सदस्यता अभियान चलाये जाने की खबर है। यहाँ भी युवाओं को सदस्ता अभियान से जुड़ने और नये सदस्य बनाने के लिये 3000 से लेकर 5000 रुपए तक के ऑफर दिये जाने की खबर है। भारतीय जनता पार्टी सरकारी कर्मचारी, छात्र-छात्राएं, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, हितग्राही लाड़ली बहनें, मुफ़्त राशन प्राप्त करने वालों, सभी सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने वालों आदि सभी को जबरन या धोखे से पार्टी सदस्य बनाने पर तुली हुई है। हद तो यही है कि भाजपा अब आधी रात में सोते हुये मरीजों को भी चैन की नींद नहीं सोने दे रही है। यानी इलाज और ऑपरेशन बाद में भी होता रहेगा, आराम भी बाद में कर लेना, पहले अपने मोबाइल पर आया ओटीपी दे दीजिए। देश भर से मिलने वाली इस तरह की और भी खबरें इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये काफी हैं कि भाजपा का सदस्यता अभियान दरअसल झूठ की बुनियाद पर टिका हुआ है।

संपादकीय

नई करवट

भारत और चीन ने बदलते वैश्विक परिदृश्य में कुछ लचीला रु ख अपनाया है जिससे दोनों देशों के रिश्तों में पिछले चार साल से जमी बर्फ पिघलती दिखाई दे रहा है। दोनों देशों के बीच तनाव शैथिल्य और सीमा पर गशत को लेकर एक महत्त्वपूर्ण समझौता हुआ है। यदि नई दिल्ली और बीजिंग इस समझौते की भावना के अनुकूल विवादित क्षेत्र से अपने-अपने सैनिकों की वापसी की दिशा में ठोस कदम उठाते हैं तो इस समझौते से दोनों देशों के बीच कूटनीतिक और द्विपक्षीय संबंध पुनर्जीवित हो सकते हैं। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने सोमवार को ही समझौते की घोषणा की। इस समझौते से यह स्पष्ट हो गया है कि भारत और चीन के सेना के बीच डेमचोक और देपसांग की स्थिति को लेकर जो विवाद था उसका समाधान हो गया। अब यहां से सैनिकों की वापसी होगी और गशत फिर से शुरू होगी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कार्यक्रम में बताया कि भारत और चीन की सेना पुरानी स्थिति यानी अप्रैल 2020 की स्थिति में लौट जाएंगी। वास्तव में जुलाई 2024 में भारत-चीन संबंधों को लेकर कूटनीतिक जगत में काफी चर्चा हुई थी। विदेश मंत्री जयशंकर ने अपनी लाओस यात्रा के दौरान चीन के विदेश मंत्री वांग यी से विचार विमर्श किया था। यह संभव है कि इस बैठक में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग की शिखर वार्ता आयोजित करने पर चर्चा हुई हो। रूस के कजान में हो रही ब्रिक्स शिखर वार्ता में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति जिनपिंग के बीच द्विपक्षीय बैठक के लिए आवश्यक माहौल बनाने के सिलसिले में दोनों देशों ने सीमाओं से सैनिक हटाने का फैसला लिया हो। जाहिर है इससे शिखर वार्ता के पक्ष में जनमत अनुकूल रहेगा। यदि राष्ट्रपति जिनपिंग रणनीतिक सूझबूझ का परिचय देते हैं तो द्विपक्षीय संबंध वुहान और महाबलीपुरम की भावना को फिर से जागने का मौका हो सकता है। रूस की ओर से भारत-चीन संबंधों को सामान्य बनाने के लिए लगातार कोशिश होती रही है। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव रणनीतिक त्रिगुट रूस-भारत-चीन (रिक) प्रक्रिया के तहत तीनों देश पूर्व में विचार-विमर्श करते रहे हैं। गलवान घटनाक्रम के बाद यह प्रक्रिया बंद हो गई है। पुतिन यह चाहेंगे कि भारत, रूस और चीन के बीच रणनीतिक त्रिकोण की प्रक्रिया पुनर्जीवित हो। सीमा विवाद के बावजूद चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। भारत चीन से निवेश का इच्छुक है। इसे सरकार की नीति में बदलाव भी कहा जा सकता है।

चिंतन-मनन

भय को पहचानो

बहुत तरह के मानसिक भय हमें चारों तरफ से दबाए हुए हैं।उन्हें हमें पहचान लेना पड़ेगा।उन्हें हम बिना पहचाने छोड़ भी न सकेंगे।जिस भय को हम पहचान लेंगे, वह छूट जाएगा।लेकिन हम उन्हें पहचान नहीं पाते, नये-नये नाम दे देते हैं।और नाम धोखे के हैं।हम इतनी ज्यादा चालाकी में जिए हैं हजारों वर्षों में कि चीजों पर ठीक-ठीक नाम नहीं रहने दिये। हर डिब्बे पर नाम बदल दिया है। अंदर कुछ और है, ऊपर नाम कुछ और है।इसलिए खोज भी बहुत मुश्किल हो गई है कि कौन सी चीज कहां है। एक आदमी को हम कहते हैं- यह बहुत अच्छा आदमी है। और सौ अच्छे आदमियों में से अठानवे अच्छे आदमी अच्छे नहीं होते।सिर्फ डरे हुए लोग होते हैं और डर की वजह से अच्छे मालूम होते हैं। मैं कहता हूं, मैं कभी चोरी नहीं करता।लेकिन अगर थोड़ी जांच-पड़ताल करूं तो पता चलेगा कि चोरी तो मैं भी करना चाहता हूं, लेकिन भय मुझे रोक लेता है।तब मैं अच्छा आदमी नहीं हूं, भयभीत आदमी हूं।लेकिन हम लेबल बदल देंगे। हमें पता ही नहीं चलता।एक आदमी कहता है, मैं बिल्कुल ईमानदार आदमी हूं। उसे थोड़ी जांच-पड़ताल करनी चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह बेईमान है और भयभीत है। यानी बेईमान भय, ईमानदार आदमी हो गया।लेकिन क्या यह ईमानदार की परिभाषा हुई? अगर कल उसे पता चल जाए कि एक दिन के लिए सब कानून उठा लिए गये और सब पुलिसवालों को छुट्टी दे दी गई और एक दिन के लिए कोई अदालत नहीं है, तब उसकी सारी ईमानदारी चली गई।यानी वह अब ईमानदार नहीं है। अच्छा आदमी इसीलिए कमजोर है।अक्सर ऐसा होता है कि अच्छा आदमी कमजोरी की वजह से अच्छा आदमी होता है। और इससे उल्टा भी होता है कि बुरा आदमी अक्सर ताकत की वजह से बुरा हो जाता है।घर में एक बच्चा बिल्कुल गोबर गणोश हो तो मां-बाप कहेंगे-बहुत आज्ञाकारी है और दूसरा थोड़ा शक्तिशाली हो, तो कहेंगे- आज्ञा का उल्लंघन करता है, कहना मानता ही नहीं।लेकिन समझना जरूरी है कि गोबर-गणोश होना अच्छा होना नहीं है।हमने लेबल बदल कर लगाए हुए हैं। इसलिए जहां भय हैं वहां भी हम पकड़ नहीं पाते कि यह भय है।जहां हिंसा है, हिंसा पकड़ में नहीं आती।जहां घृणा है, घृणा पकड़ में नहीं आती।जहां प्रेम नहीं है, वहां पकड़ में नहीं आता।सब तरफ धोखा हो गया है।

अहोई अष्टमी : संतान की मंगलकामना का पर्व है अहोई अष्टमी

योगेश कुमार गोयल

भारत में हिन्दू समुदाय में करवा चौथ के चार दिन पश्चात् और दीवाली से ठीक एक सप्ताह पहले एक प्रमुख त्यौहार 'अहोई अष्टमी' मनाया जाता है, जो प्रायः वही स्त्रियां करती हैं, जिनके संतान होती है किन्तु अब यह व्रत निसंतान महिलाएं भी संतान की कामना के लिए करती हैं। 'अहोई अष्टमी' व्रत प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्ण अष्टमी को किया जाता है और इस वर्ष यह पर्व 24 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। स्त्रियां दिनभर व्रत रखती हैं। सायंकाल से दीवार पर आठ कोष्ठक की पुतली लिखी जाती है। उसी के पास सेई और सेई के बच्चों के चित्र भी बनाए जाते हैं। पृथ्वी पर चौक पूरकर कलश स्थापित किया जाता है। कलश पूजन के बाद दीवार पर लिखी अष्टमी का पूजन किया जाता है। फिर दूध-भात का भोग लगाकर कथा कही जाती है। आधुनिक युग में अब बहुत सी महिलाएं दीवारों पर चित्र बनाने के लिए बाजार से अहोई अष्टमी के रेडीमेड चित्र खरीदकर उन्हें पूजास्थल पर स्थापित कर उनका पूजन करती हैं। कार्तिक कृष्ण अष्टमी को महिलाएं अपनी संतान की दीर्घ आयु तथा उनके जीवन में समस्त संकटों या विघ्न-बाधाओं से उनकी रक्षा के लिए यह व्रत रखती हैं। कुछ स्थानों पर इस दिन धोबी मारन लीला का भी मंचन होता है, जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा कंस द्वारा भेजे गए धोबी का वध करते प्रदर्शन किया जाता है। अहोई माता के रूप में अपनी-अपनी पारिवारिक परम्परानुसार लोग माता पार्वती की पूजा करते हैं।

अहोई अष्टमी व्रत के संबंध में कुछ कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी ही एक कथानुसार प्राचीन काल में किसी नगर में एक साहूकार रहता था। उसके सात लड़के थे। दीपावली से पहले साहूकार की स्त्री घर की लीपा-पोती हेतु मिट्टी लेने खदान में गई और कुदाल से मिट्टी खोदने लगी। दैव योग से उसी जगह एक सेह की मांद थी। सहसा उस स्त्री के हाथ से कुदाल सेह के बच्चे को लग गई, जिससे सेह का बच्चा तत्काल मर गया। अपने हाथ से हुई हत्या को लेकर साहूकार की पत्नी को बहुत दुख हुआ परन्तु अब क्या हो सकता था? वह पश्चाताप करती हुई शोकाकुल अपने घर लौट आई। कुछ दिनों बाद उसके बेटे का निधन हो गया। फिर अकस्मात दूसरा, तीसरा और इस प्रकार वर्ष भर में उसके सभी बेटे मर गए। महिला अत्यंत व्यथित रहने लगी। एक दिन उसने अपने आस-पड़ोस की महिलाओं को विलाप करते हुए बताया कि उसने जानबूझकर कभी कोई पाप नहीं किया। हां, एक बार खदान में मिट्टी खोदते हुए अनजाने में उससे एक सेह के बच्चे की हत्या अवश्य हुई है और तत्पश्चात मेरे सातों बेटों की मृत्यु हो गई। यह सुनकर पास-पड़ोस की वृद्ध औरतों ने साहूकार की पत्नी को दिलासा देते हुए कहा कि यह बात बताकर तुमने जो पश्चाताप किया है, उससे तुम्हारा आधा पाप नष्ट हो गया है। तुम उसी अष्टमी को भगवती माता की शरण लेकर सेह और सेह के बच्चों का चित्र बनाकर उनकी आराधना करो और क्षमा-याचना करो। ईश्वर की कृपा से तुम्हारा पाप धुल जाएगा। साहूकार की पत्नी ने वृद्ध महिलाओं की बात मानकर कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी को उपवास व पूजा-याचना की। वह हर वर्ष नियमित रूप से ऐसा करने लगी। बाद में उसे सात पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई। तभी से अहोई व्रत की परम्परा प्रचलित हो गई।

अहोई व्रत के संबंध में एक और कथा प्रचलित है। बहुत समय पहले झांसी के निकट एक नगर में चन्द्रभान नामक साहूकार रहता था। उसकी पत्नी चन्द्रिका बहुत सुंदर, सर्वगुण सम्पन्न, सती साध्वी, शीलवन्त, चरित्रवान तथा बुद्धिमान थी। उसके कई पुत्र-पुत्रियां थे परन्तु वे सभी बाल अवस्था में ही परलोक सिधार चुके थे। दोनो पति-पत्नी संतान न रह जाने से बहुत व्यथित रहते थे। वे दोनों प्रतिदिन मन ही मन सोचते कि हमारे मर जाने के बाद इस अपार धन-सम्पदा को कौन संभालेगा? एक बार उन दोनों ने निश्चय किया कि वनवास लेकर शेष जीवन प्रभु-भक्ति में व्यतीत करें।

यही विचार कर दोनों अपना घर-बार त्यागकर वनों की ओर चल दिए। रास्ते में जब थक जाते तो रूककर थोड़ा विश्राम कर लेते और फिर चल पड़ते। इस प्रकार धीरे-धीरे वे बद्रिका आश्रम के निकट शीतल कुण्ड जा पहुंचे। वहां पहुंचकर दोनों ने निराहार रहकर प्राण त्यागने का निश्चय कर लिया। निराहार व निर्जल रहते हुए जब उन्हें सात दिन हो गए तो आकाशवाणी हुई कि तुम दोनों प्राणी अपने प्राण मत त्यागो। यह सब दुख तुम्हें तुम्हारे पूर्व पापों से भोगना पड़ा है। यदि तुम्हारी पत्नी कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली अहोई अष्टमी को अहोई माता का व्रत और पूजन करे तो अहोई देवी प्रसन्न होकर साक्षात दर्शन देंगी। तुम उनसे दीघार्यु पुत्रों का वरदान मांग लेना। व्रत के दिन तुम राधाकुण्ड में स्नान करना।

चन्द्रिका ने आकाशवाणी के बताए अनुसार विधि-विधान से अहोई अष्टमी को अहोई माता का व्रत और पूजा-अर्चना की और तत्पश्चात राधाकुण्ड में स्नान किया। जब वे स्नान इत्यादि के बाद घर पहुंचे तो उस दम्पत्ति को अहोई माता ने साक्षात दर्शन देकर वर मांगने को कहा।

साहूकार दम्पत्ति ने हाथ जोड़कर कहा, 'हमारे बच्चे कम आयु में ही परलोक सिधार जाते हैं। आप हमें बच्चों की दीघार्यु का वरदान दें।'

'तथास्तु!' कहकर अहोई माता अंतर्ध्यान हो गई। कुछ समय के बाद साहूकार दम्पत्ति को दीघार्यु पुत्रों की प्राप्ति हुई और वे सुखपूर्वक अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगे।

देवी पार्वती को अनहोनी को होनी बनाने वाली देवी माना गया हैं, इसलिए अहोई अष्टमी पर माता पर्वती की पूजा की जाती है और संतान की दीघार्यु एवं सुखमय जीवन की कामना की जाती है।

भारत की चुनौती : प्राकृतिक खेती और खाद्य सुरक्षा

डॉ. धीरज यादव

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (एनएमएनएफ) भारत में सतत कृषि को बढ़ावा देने की दिशा में एक साहसिक कदम है। यह हरित क्रांति-आधारित खेती से जुड़े कई पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान करता है, लेकिन भारत की बढ़ती आबादी को भोजन उपलब्ध कराने और छोटे किसानों के सामने आने वाली आर्थिक चुनौतियों के संदर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण सवाल भी खड़े करता है। 2050 तक भारत की आबादी 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में देश की कृषि पद्धतियों का न केवल पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ होना जरूरी है, बल्कि उन्हें बढ़ती आबादी की खाद्य सुरक्षा की आवश्यकताओं को भी पूरा करना चाहिए।

एनएमएनएफ के संदर्भ में एक प्रमुख सवाल यह है कि क्या प्राकृतिक खेती के तरीके हरित क्रांति के दौरान हासिल की गई उच्च पैदावार की बराबरी कर सकते हैं। हरित क्रांति ने, अपने पर्यावरणीय प्रभावों के बावजूद, भारत को खाद्यान्न की कमी से आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने में सहायता की। उच्च उत्पादकता वाली गेहूं और चावल की किस्मों के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग ने कृषि उत्पादकता में जबरदस्त वृद्धि की। इसके विपरीत, शून्य बजट प्राकृतिक खेती (जेडबीएनएफ) जो बाहरी इनपुट्स को न्यूनतम करने पर जोर देती है, अब तक बड़े पैमाने पर उतनी अधिक उत्पादकता नहीं दिखा पाई है। गुजरात में किए गए शोध के अनुसार, दक्षिण सौराष्ट्र जैसे क्षेत्रों में शून्य बजट प्राकृतिक खेती (जेडबीएनएफ) की पैदावार, हरित क्रांति-आधारित खेती की तुलना में कम पाई गई। कुछ मामलों में प्रतिकूल मौसम की स्थितियों में यह अंतर और बढ़ गया, जिससे यह सवाल उठने लगे कि प्राकृतिक खेती मौसम की अनिश्चितताओं को कितनी अच्छी तरह संभाल सकती है। उदाहरण के लिए, जहां प्राकृतिक खेती ने समय के साथ मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार किया, वहीं शुरू आती चरणों में पैदावार में गिरावट देखी गई। यह उन किसानों के लिए चिंताजनक हो सकता है जो अपनी आजीविका के लिए संतोषजनक और स्थिर फसल उत्पादन पर निर्भर हैं। प्राकृतिक खेती का बड़े पैमाने पर विस्तार एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न बना हुआ है। छोटे प्रयोगात्मक खेतों में प्राकृतिक खेती के उत्साहजनक परिणाम सामने आए हैं, लेकिन यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि इसे भारत की विशाल आबादी की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर लागू किया जा सकता है या नहीं। प्राकृतिक खेती की सफलता मुख्य रूप से स्थानीय जैव विविधता, जलवायु और मिट्टी की परिस्थितियों पर निर्भर करती है, जिससे इसे पूरे भारत के विविध कृषि परिदृश्यों में समान रूप से लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उदाहरण के लिए, उत्तरी भारत के वे क्षेत्र जो पानी-आधारित फसलों जैसे चावल और गेहूं पर अत्यधिक निर्भर हैं, वे प्राकृतिक खेती की पद्धतियों को अपनाने में कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं। छोटे किसानों के लिए आर्थिक व्यवहार्यता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। गुजरात के अध्ययनों से पता चला है कि प्राकृतिक खेती में इनपुट लागत कम होती है, लेकिन संक्रमण अवधि के दौरान संभावित पैदावार में कमी से किसानों की आय पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी और खाद्य असुरक्षा बढ़ने का खतरा है। यह आर्थिक बोझ विशेष रूप से छोटे किसानों के लिए चिंताजनक है, क्योंकि वे भारत की कृषि श्रमशक्ति का बड़ा हिस्सा हैं। खाद्य सुरक्षा भी एक प्रमुख मुद्दा है। भारत की कृषि को देश की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लगातार पर्याप्त उत्पादन बनाए रखना चाहिए, खासकर जब आबादी के बढ़ने की संभावना है। प्राकृतिक खेती, भले ही पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देती हो, लेकिन इसकी पैदावार क्षमता अभी भी हरित क्रांति-आधारित खेती की तुलना में स्पष्ट रूप से कम है। आलोचकों का मानना है कि प्राकृतिक खेती के तरीके, जो मुख्य रूप से कृषि पारिस्थितिकी तंत्र और घटे हुए इनपुट्स पर आधारित हैं, बढ़ती खाद्य मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकते। हरित क्रांति-आधारित खेती, जो रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भर करती है, से प्राकृतिक खेती की ओर परिवर्तन के लिए व्यापक शिक्षा, प्रशिक्षण और संसाधनों की आवश्यकता होगी।

हरित क्रांति की सफलता केवल उच्च उत्पादक फसलों की शुरू आत के कारण नहीं थी, बल्कि

सिंचाई, कीट प्रबंधन और फसल प्रजनन में तकनीकी प्रगति के कारण भी थी। एनएमएनएफ पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ कृषि का एक आशाजनक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, लेकिन कई महत्त्वपूर्ण सवाल अब भी अनुत्तरित हैं। पैदावार की तुलना, आर्थिक व्यवहार्यता, और खाद्य सुरक्षा ऐसे क्षेत्र हैं जहां प्राकृतिक खेती को बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत की बढ़ती जनसंख्या और बदलती कृषि आवश्यकताओं को देखते हुए स्थिरता और उत्पादकता के बीच संतुलन बनाना बहुत जरूरी है। प्राकृतिक खेती और हरित क्रांति-आधारित खेती के सर्वोत्तम तरीकों को एक साथ लाना, साथ ही आधुनिक तकनीकी नवाचारों का उपयोग करना, सबसे प्रभावी रास्ता हो सकता है।

एक नजर

एसडीपीओ तथा एसडीओ ने चेक नाका का किया औचक निरीक्षण

बरहरवा : मंगलवार की देर रात अनुमंडल पदाधिकारी राजमहल कपिल कुमार तथा एसडीपीओ बरहरवा नितिन खंडेलवाल ने चुनाव को लेकर संयुक्त रूप से बरहरवा फरक्का मुख पथ पर स्थित सभी चारों चेक नाका का औचक निरीक्षण किया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार रात करीब 12 से 1 के बीच दोनों पदाधिकारी एक एक चुनाव को लेकर फुटानी मोड़, बेहबतपुर, फरीदपुर,महतापुर, चेक नाका पर अचानक पहुंचे एवं वहां पर तैनात दंडाधिकारी तथा पुलिस पदाधिकारी से बंगाल से झारखंड क्षेत्र में प्रवेश करने वाले वाहनों की संघन तलाशी लेने तथा उसे संचिका में लीपी वध करने को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बताया जाता है कि दोनों पदाधिकारी ने चुनाव को लेकर लगाए गए बेरी ट्रेडिंग पर तैनात दंडाधिकारी तथा पुलिस पदाधिकारी के ठहराव वहां पर लगाए गए सीसी कैमरा आदि के बारे में भी आवश्यक जानकारियां ली। बता दे की पश्चिम बंगाल से सटे होने के कारण इन सीमावर्ती इलाकों में कोटालपोखर एवं बरहरवा थाना मिलकर कुल छह जगहो पर चुनाव को लेकर बेरी ट्रेडिंग किया गया है।

सांप काटने से 11 वर्षीय बालक हुआ मूर्छित

साहिबगंज : जिला के राजमहल प्रखंड क्षेत्र के दाहू टोला गांव में बुधवार को एक 11 वर्षीय बालक को सांप काटने से मूर्छित हो गया। जहां मिली जानकारी के अनुसार नूर इस्लाम के पुत्र नूर हसन घर से कुछ दूरी पर अपने साथियों के साथ ढाब में मछली मार रहा था। इस दौरान एक जहरीले सांप ने काट लिया जिससे वह मूर्छित हो गया। साथियों के द्वारा इसकी सूचना परिजनों को दिया गया। परिजनों के द्वारा आनन फानन में इलाज के लिए अनुमंडल अस्पताल राजमहल लाया गया। जहां चिकित्सकों के द्वारा इलाज किया गया।

कुएं में मिला युवक का शव

छतरपुर (पलामू) : छतरपुर थाना क्षेत्र के दिनादाग पंचायत अंतर्गत महुगाई गांव में बुधवार की सुबह कुएं से युवक का शव बरामद किया गया। जिसकी पहचान महुगाई गांव के ही चनारिक भुइयां पिता स्वर्गीय भोला भुइयां के रूप में हुई है। परिजनों ने बताया कि सोमवार की शाम चनारिक घर से थोड़ी दूर पर बंधे गाय को लाने गया था, उसके बाद से लापता था। परिजनों ने काफी खोजबीन की लेकिन कहीं पता नहीं चला। बुधवार की सुबह घर से कुछ दूरी पर स्थित कच्चे कुएं में एक शव देखा गया जो चनारिक भुइयां का था। जिसकी जानकारी छतरपुर थाना को दी गई छतरपुर थाना एसआई राहुल कुमार घटनास्थल पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु मेदिनीनगर भेज दिया। मृतक के परिजनों ने बताया कि चनारिक बाहर रहकर मजदूरी का काम करता था कुछ दिन पूर्व में ही घर में आया था।

बाइक, स्कूटी व कार रैली से मतदाताओं को किया जागरूक

चाईबासा : जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त कुलदीप चौधरी के निदेर्शानुसार स्वीप नोडल पदाधिकारी सह सहायक समाहर्ता अर्नव मिश्रा की निगरानी में स्वीप गतिविधि के तहत बुधवार को चाईबासा विधानसभा क्षेत्र जागरूकता अभियान चलाया गया। सदर अनुमंडल कार्यालय परिसर से ग्रामीण और शहरी मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से बृहद स्तर पर बाइक, स्कूटी और कार रैली का आयोजन किया गया। रैली अनुमंडल कार्यालय से प्रारंभ होकर शहर के विभिन्न चौक चौराहे से होते हुए गुजरी।

केंद्र में पूंजीपतियों की सरकार, झारखंड में आदिवासियों, गरीबों, जरूरतमंदों की सरकार : हेमंत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चाईबासा : चाईबासा विधानसभा में बुधवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रत्याशी सह कैबिनेट मंत्री दीपक बिरुवा ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। हालांकि नामांकन पर्चा भरने के दौरान हेमंत सोरेन मौजूद नहीं रहें। इसके बाद चाईबासा के बिहार क्लब स्थित मैदान में नामांकन सभा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार में सिर्फ पूंजीपति भरे हुए हैं। भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूंजीपतियों की सरकार है। लेकिन झारखंड मुक्ति की मोर्चा की सरकार आदिवासी गरीब की और जरूरतमंदों की सरकार है। लेकिन इस पर भी भारतीय जनता पार्टी की नजर है। जल, जंगल, जमीन की पहचान को खत्म करने की साजिश कर रही भाजपा उन्होंने कहा कि भाजपा ही एक ऐसा पार्टी है जो पूंजीपतियों को बढ़ावा देती है, गरीबों को खत्म करती है। झारखंडी की पहचान जल, जंगल, जमीन है। लेकिन इसको खत्म करने की साजिश भारतीय जनता पार्टी की ओर से की जाती है। लेकिन इस बार भी भाजपा को हार का सामना करना पड़ेगा। झारखंड में दोबारा झारखंड मुक्ति मोर्चा की सरकार बनेगी और यहां के स्थान को लाभ पहुंचाने में काम करेगी। उन्होंने कहा कि केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है, लेकिन बीजेपी की नजर हमारे जैसे आदिवासियों पर है। हमेशा तोड़ने का प्रयास करता है लेकिन हम लोग इतने एकजुट हैं कि हम लोग की टूट कभी नहीं होगी।

शहर को स्वच्छ बनाने में सभी का सहयोग जरूरी : सीजीएम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चाईबासा : सेल की किरीबुरु खदान प्रबंधन द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के तहत बैंक मोड़ क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया गया. इस दौरान सीजीएम कमलेश राय ने कहा कि स्वच्छता हर किसी की जीवन से जुड़ा अहम हिस्सा है. यह एक दिन का नहीं, बल्कि प्रतिदिन व सालों भर निरंतर चलने वाला अभियान है। उन्होंने कहा कि किरीबुरु प्रबंधन स्वच्छता के प्रति गंभीर है। हमारा सिविल विभाग प्रतिदिन ठेका से लोगों के घरों से कचरा उठाव व शहर की साफ-सफाई कराती है। आम जनता से उन्होंने अपील की कि अपने आसपास के परिवेश को साफ रखें। कचरा को एक स्थान पर संग्रह कर ठेला लेकर आने वाली टीम को दें। सभी के प्रयास से ही स्वच्छ शहर व वातावरण का निर्माण होगा। इस दौरान सीजीएम कमलेश राय के नेतृत्व में महाप्रबंधक राम सिंह, महाप्रबंधक एसआर स्वांय, महाप्रबंधक डीबी जयकर, उप महाप्रबंधक अमित विश्वास, सहायक महाप्रबंधक रमेश कुमार सिन्हा, कनीय प्रबंधक प्रवीण कुमार, बदन गिरि, दिलीप झा, विजय गुप्ता, जगन्नाथ दास, राजेन्द्र सिंद्रिया, सुनील पासवान, नमित मिश्रा आदि दर्जनों लोगों ने हाथों में झाड़ू पकड़ साफ-सफाई की। यह अभियान एक माह तक किरीबुरु क्षेत्र में निरंतर चलाया जाएगा।

विधानसभा चुनाव शांतिपूर्ण होने को लेकर पुलिस प्रशासन ने निकाला फ्लैग मार्च

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला के तालझारी थाना क्षेत्र अंतर्गत विधानसभा चुनाव को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने के लिए पुलिस और अर्धसैनिक बल के जवानों ने बुधवार को तालझारी थाना क्षेत्र में फ्लैग मार्च किया। इस दौरान पुलिस अधिकारियों और अर्धसैनिक बल की टुकड़ी ने आम नागरिकों से बेखौफ होकर मतदान करने की अपील की। फ्लैग मार्च की अगुवाई अंचल अधिकारी राम सुमन प्रसाद ने की। फ्लैग मार्च तालझारी थाना क्षेत्र के हरिनकोल बुथ संख्या 209,मोती झरना, डाक-बंगला, तालझारी बुथ संख्या 186,187,188 सहित विभिन्न गांव होते हुए तालझारी थाना पहुंचा। फ्लैग मार्च के दौरान अंचल अधिकारी राम सुमन प्रसाद एवं थाना प्रभारी अमर कुमार मिंज ने लोगों को बिना किसी डर भय के चुनाव प्रकिया में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। फ्लैग मार्च के दौरान आमजन से यह भी अपील की गई है कि मतदान के दौरान अगर कोई व्यक्ति उन्हें प्रभावित करे तो तुरंत उसकी सूचना पुलिस को दें, ताकि ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जा सके। अंचल अधिकारी राम सुमन प्रसाद ने बताया कि 20 नवंबर को विधानसभा चुनाव होगा। शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव संपन्न कराने के लिए पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवानों ने फ्लैग मार्च किया है। सभी मतदाता पूरी निडरता के साथ मतदान करें। संवेदनशील मतदान केंद्रों पर सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए हैं। उन्होंने बताया कि फ्लैग मार्च का उद्देश्य आमजन में सुरक्षा की भावना पैदा करना है, ताकि वे निर्भय होकर अपना मतदान कर सकें। मौके पर एएसआई मनोज आजाद, मनशा हजाम उपस्थित थे।

गांजा तस्करी में पुलिस ने छापामारी कर एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला के उधवा प्रखंड अंतर्गत राधानगर थाना क्षेत्र में 22 अक्टूबर 2024 की करीब 7:00 बजे संध्या में गुप्त सूचना मिली थी कि अमानत हाई मदरसा के पास गांजा का खरीद बिक्री हो रहा है। इस संबंध में बड़े पुलिस पदाधिकारी, अंचला अधिकारी उधवा को सूचना देकर ग्राम अमानत स्थित हाई मदरसा के पास आने का को कहा गया। जहां पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह साहिबगंज के द्वारा इस कार्य में संलिप्त अपराधकर्मियों को पकड़ने एवं आवश्यक कार्रवाई करने हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राजमहल के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। राधानगर थाना प्रभारी ने थाना के अन्य सहयोगी बल को लेकर ग्राम अमानत स्थित मदरसा के सभी पहुंचा। कुछ देर के बाद अंचलाधिकारी उधवा भी अमानत स्थित हाई मदरसा के पास पहुंच गया। वही प्राप्त सूचना के अनुसार एक वृद्ध व्यक्ति जिसका नाम सुलेमान शेख पिता स्वर्ग करीम शेख साकिन अमानत (नजर टोला) थाना राधानगर का विधिवत तलाशी लिया गया। उक्त व्यक्ति के पास एक प्लास्टिक के थैले में गांजा छिपाकर ले जाया जा रहा था, जिसे तलने पर कुल 1 किलो 1 सौ 44 ग्राम पाया गया। जहां पकड़े हुए व्यक्ति के पास से कोई कागजात नहीं मिलने पर उक्त गांजा को विधवा जप्त करते हुए गांजा की तस्करी करने के आरोप में अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में राधा नगर थाना कांड संख्या 192/24 दिनांक 22 अक्टूबर 2024 धारा 20(बी), बी/22 एनडीपीएस एक्ट के तहत दर्ज कर उन बिंदुओं पर अनुसंधान किया जा रहा है। वही गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया है। वही मौके पर छापा दल में जयंत तिवारी अंचलाधिकारी उधवा, पुअनि नितेश कुमार पांडे थाना प्रभारी राधानगर, पुअनि फुलेश्वर अकेला राधानगर थाना, सअनि हाकीम मुर्मू राधानगर थाना, हवलदार सोनाराम सोरेन राधानगर थाना रिजर्व गार्ड, आरक्षी 244 प्रशांत मरांडी राधानगर थाना रिजर्व गार्ड शामिल थे।

पुलिस ने अभिभावकों को पढ़ाया ट्रैफिक नियमों का पाठ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गोड्डा : गोड्डा नगर थाने की पुलिस ने सुबह-सुबह बच्चों को बाइक या स्कूटी से स्कूल पहुंचाने वाले अभिभावकों को ट्रैफिक नियमों का पाठ पढ़ाया। विशेष अभियान चलाकर उन्हें ट्रैफिक नियमों का पालन करने की अपील की। शहर के स्कूलों के बाहर पुलिस की टीमें पहले से मुस्तैद थीं। पुलिस ने बिना हेलमेट व ट्रिपल लोड बाइक चलाने वाले अभिभावकों को रोका और हिदायत दे कि बिना हेलमेट के बाइक-स्कूटी चलाने पर जुमार्ना वसूला जाएगा। बाइक पर पीछे दो बच्चों को बैठाने वाले अभिभावकों को रोककर समझाया कि बच्चों की जान को खतरे में नहीं डालें। अभियान में नगर थाना प्रभारी दिनेश कुमार महली, महिला थाना प्रभारी गुलाब किस्पोट्टा सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे। थाना प्रभारी ने बताया की ट्रैफिक नियमों का पालन कराने के लिए अभियान आगे भी जारी रहेगा।

विधानसभा सीट से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में सुखराम हेंब्रम ने दर्ज कराया नामांकन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : बुधवार को झारखंड आंदोलनकारी सह स्वच्छ चांडिल स्वस्थ्य चांडिल के संस्थापक सुखराम हेंब्रम निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में ईचागढ़ विधान सभा से नामांकन किया। इस दौरान गांगुडीह फुटबॉल मैदान में नामांकन सभा का आयोजन किया। इस नामांकन सभा में जनताओं का हुजूम देखने मिला। आपको बता दें कि सुखराम हेंब्रम पिछले कई वर्षों से राजनीति से जुड़े हुए है तथा समाजसेवी के रूप में ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र के जनताओं के बीच रहें। सभा को संबोधित करते हुए श्री हेंब्रम ने कहा कि मैंने राजनीति में सभी को सम्मान देने का काम किया ईचागढ़ विधानसभा में अब तक जितने भी विधायक हुए सब बाहरी ही हुए है उन लोगों को सिर्फ ईचागढ़ की जनताओं का वोट चाहिए,सभी चुनाव के समय वोट मांगने आयेगे और जीतने के बाद एसी कमरे से बाहर नहीं निकलेंगे, सभी ने ईचागढ़ वासियों को ठगने का काम किया है। उन्होंने इशारों इशारों में अपना दर्द बयान करते हुए कहा कि जिस पार्टी को मैने समर्पित भाव से इतने दिनों तक सेवा दिया उन्होंने अब तक मेरा सम्मान नहीं किया। जिस आशा ओर उद्देश्य के साथ अब तक उस पार्टी का साथ दिया वो संपूर्ण नहीं हुआ, ईचागढ़ के विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया गया, बहुत सारी समस्याएं जस की तस पड़ी हुई है जैसे चांडिल डैम विस्थापितों की समस्या, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और अभी नई समस्या ईको सेंसेटिव जोन के नाम पर आदिवासियों, ग्रामीणों को डराया जा रहा है। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि ईचागढ़ विधानसभा का संपूर्ण विकास एक स्थानीय ही कर सकता है। सभी से समर्थन मांगते हुए कहा कि एक बार मुझे आशीर्वाद देकर विधानसभा में पहुंचाए। मौके पर मंगल सिंह मुंडा, रामप्रसाद महतो, अश्विनी पांडेय,श्यामल मार्डी, लालू हजाम, देवेन मांझी, हाड़ीराम टुडू, गुलाब टुडू, राजू गोप समेत हजारों की संख्या में समर्थक मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

विमल बैठा ने पटमदा व बोड़ाम क्षेत्र में चलाया जनसंपर्क अभियान

पटमदा : भाजपा से नाराज होकर जेबीकेएसएस में शामिल युवा नेता विमल बैठा बुधवार को पटमदा प्रखंड के बेलटांड़ चौक व बोड़ाम बाजार में जनसंपर्क अभियान चलाया। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र के बूढ़े बुजुर्गों से आशीर्वाद प्राप्त किया एवं ग्रामीणों से मिलकर चुनाव में समर्थन मांगा। इसके पहले उन्होंने जलडहर स्थित एक होटल में सर्मथकों के साथ बैठक करते हुए 25 अक्टूबर को नामांकन रैली ने भारी संख्या में लोगों को शामिल कराने के लिए कार्यकताओं से आग्रह किया है। विमल ने बताया कि 25 अक्टूबर को जिला मुख्यालय में विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए नामांकन पत्र दाखिल करूंगा। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के ग्रामीण एवं समर्थकों का अपार समर्थन से मेरी जीत सुनिश्चित है। मौके पर विमल मंडल, कृष्णा महतो, आतिश मिश्रा, धनंजय महतो समेत अन्य कई लोग मौजूद थे।

अवैध शराब बेचने को लेकर पुलिस ने एक अरोपी को किया गिरफ्तार, भेजा जेल

साहिबगंज : तालझारी पुलिस ने अवैध शराब की बनवाकर बिक्री के विरुद्ध छापामारी करते हुए एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। थाना प्रभारी अमर कुमार मिंज के अनुसार सुकसेना पथरिया बाला पोखर में अवैध शराब के विरुद्ध छापामारी अभियान चलाया गया। छापेमारी के क्रम में महेश गुप्ता पिता स्वर्गीय शिवपूजन साह राजेंद्र भोक्ता को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने उसके घर में छापामारी कर के उसके पास से अंग्रेजी शराब मेक्कडोवेल नं.वन 27, इंपीरियल ब्लू 9, देसी शराब 42 बोतल सहित 5 लीटर महुआ शराब बरामद की। इसे लेकर तालझारी थाना में कांडा संख्या 68/24/मामला दर्ज किया गया। छापेमारी अभियान में थाना प्रभारी अमर कुमार मिंज,एस आई सीया राम पंडित, एएसआई अनिल कुमार सहित पुलिस बल के जवान शामिल थे।

406 ग्राम गांजा के साथ एक तस्कर गिरफ्तार

बरहरवा/साहिबगंज : लोकसभा चुनाव को लेकर जिले में गांजा तस्करों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है। इसी क्रम में बरहरवा थाना क्षेत्र में पुलिस ने 406 ग्राम गांजा के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी नितिन खंडेलवाल के अनुसार पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि बरहरवा थाना क्षेत्र के गोपालपुर में तैमूर अंसारी पिता स्वर्गीय खुर्शीद अंसारी के द्वारा अपने घर में बेचने हेतु गांजा का भंडारण किया जा रहा है। उक्त सूचना के आधार पर वरीय पदाधिकारी को अवगत कराते हुए पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह साहिबगंज के निदेर्शानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बरहरवा नितिन खंडेलवाल की अध्यक्षता में एक टीम का गठन किया गया। टीम गठित होने के पश्चात तैमूर अंसारी पिता स्वर्गीय खुर्शीद अंसारी ग्राम गोपालपुर ,थाना बरहरवा जिला साहिबगंज के घर पर तलाशी ली गयी। तलाशी के दौरान घर से लगभग 406 ग्राम गांजा बरामद किया गया। तस्कर के द्वारा गंजा से संबंधित कोई वैध कागजात प्रस्तुत नहीं करने पर उक्त बरामद गांजा को विधिवत जब्त कर तैमूर अंसारी को गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में थाना कांड संख्या 156/24, धारा 21/22 एनडीपीएस एक्ट दर्ज कर गिरफ्तार अभियुक्त तैमूर अंसारी को बुधवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। छापेमारी दल में नितिन खंडेलवाल अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बरहरवा,सुमित कुमार सिंह थाना प्रभारी बरहरवा, पुअनि जुमराती अंसारी, सअनि सिदाम रविदास, सअनि अल्फ्रेड रुडा, सअनि गुलनाज बेगम कोटालपोखर सहित अन्य पुलिस बल मौजूद थे।

आने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर आजसू ने गठित की बूथ कमेटी

बरहरवा : आने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर बुधवार को बरहरवा थाना क्षेत्र के तकरीबन 5 पंचायत में भाजपा समर्थित आजसू पार्टी के द्वारा बूथ कमेटी गठित की गई। जानकारी देते हुए पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता यादुल शेख ने बताया कि जिला अध्यक्ष चतुर आनंद पांडे के निर्देश अनुसार बरहरवा प्रखंड के कालू पंचायत के बूथ नंबर 66 तथा 67 एवं कोटालपोखर के बड़ा सोना कड़ एवं मयूर कोला पंचायत में बूथ कमेटी का गठन किया गया है। उन्होंने आगे बताया कि प्रत्येक पंचायत में लगभग 16 सदस्यी कमेटी का गठन किया गया है जो बूथ स्तर पर चुनाव के दौरान सभी कार्यों का देखरेख करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि कालू पंचायत के बूथ नंबर 66 के लिए रामलाल घोष को अध्यक्ष तथा रामू रजवाड़ को सचिव बनाया गया है। इसी तरह बूथ नंबर 67 के लिए वापी घोष को अध्यक्ष तथा सरबजीत घोष को सचिव, एवं ईशान रामानी, सूरज रामानी, रुपेश यादव, आदि को सदस्य बनाया गया है उन्होंने यह भी बताया कि कोटालपोखर तथा बरहरवा थाना क्षेत्र के सभी जगहो पर आयोजित बूथ कमेटी की बैठक में काफी संख्या में ग्रामीण लोग भी उपस्थित थे।

पिछले 9 दिनों में एयरलाइंस की 170 से अधिक उड़ानों को मिली बम की धमकी

- उड़ानों की रुकावट से कुल नुकसान लगभग 600 करोड़ रुपए

नई दिल्ली ।

पिछले 24 घंटों में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को लगभग 80 बम की धमकियां मिलीं, जो बाद में झूठी साबित हुईं लेकिन इसने हजारों यात्रियों और सुरक्षा एजेंसियों को चिंतित कर दिया। पिछले 9 दिनों में भारतीय एयरलाइंस द्वारा संचालित 170 से अधिक उड़ानों को बम धमकी मिल चुकी है, जिनमें से अधिकांश सोशल मीडिया के माध्यम से आईं, और इस कारण कुछ अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का मार्ग भी बदलना पड़ा। सूत्रों ने बताया कि मंगलवार को अकेले 50 उड़ानों को बम की धमकी मिली, जिनमें इंडिगो और एयर इंडिया की 13-13 उड़ानें शामिल थीं. आकासा एयर की 12 से अधिक उड़ानों और विस्तारा की 11 उड़ानों को भी धमकियां मिलीं। इसके अलावा, सोमवार रात इंडिगो, एयर इंडिया और विस्तारा की लगभग 30 उड़ानों को बम धमकी मिली थी। विमानन क्षेत्र के एक अधिकारी के अनुसार, घरेलू उड़ान में रुकावट से लगभग 1.5 करोड़ रुपये का नुकसान होता है, जबकि अंतरराष्ट्रीय उड़ान के लिए यह आंकड़ा 5-5.5 करोड़ रुपये तक जा सकता है। औसतन, घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में होने वाले रुकावट से 3.5 करोड़ रुपये प्रति उड़ान का नुकसान होता है और 170 से अधिक उड़ानों को देखते हुए कुल नुकसान लगभग 600 करोड़ रुपये के आसपास है। अधिकारी ने बताया कि यह अनुमान व्यापक है क्योंकि इसमें कई अन्य कारक शामिल हैं। इंडिगो के प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि मंगलवार को उसकी 13 उड़ानों को सुरक्षा संबंधी अलर्ट मिले। ये उड़ानें थीं 6ई196 (बेंगलुरु से लखनऊ), 6ई 433 (आइजोल से कोलकाता), 6ई 455 (कोलकाता से बेंगलुरु), 6ई 17 (मुंबई से इस्तांबुल), 6ई 394 (कोलकाता से जयपुर), 6ई 318 (कोलकाता से अहमदाबाद), 6ई 297 (हैदराबाद से जोधपुर), 6ई 399 (लखनऊ से गोवा), 6ई 381 (गोवा से अहमदाबाद), 6ई 403 (पुणे से देहरादून), 6ई 419 (सूरत से गोवा), 6ई 323 (बागडोगरा से चेन्नई) और 6ई 214 (मुंबई से श्रीनगर)। प्रवक्ता ने कहा कि सभी यात्रियों को गंतव्य हवाई अड्डों पर सुरक्षित रूप से उतार दिया गया। वहीं आकासा एयर और विस्तारा ने भी इन घटनाओं की पुष्टि की. आकासा ने बताया कि उनकी कुछ उड़ानों को भी मंगलवार को सुरक्षा अलर्ट मिले। एयरलाइंस ने कहा कि वे सुरक्षा नियमों का पालन कर रही हैं और संबंधित अधिकारियों के साथ सहयोग कर रही हैं। सरकारी सूत्रों ने बताया कि बम धमकी आकलन समिति के प्रोटोकॉल में बदलाव किए गए हैं, ताकि रैंडम इंटरनेट-आधारित धमकियों का बेहतर तरीके से सामना किया जा सके।

वारी एनर्जीज़ के आईपीओ को मिल रहा अच्छा रिस्पांस

जीएमपी से मिल रहा मजबूत लिस्टिंग का संकेत

नई दिल्ली ।

निवेशकों के पास सोलर मॉड्यूल बनाने वाली देश की सबसे बड़ी कंपनीः वारी एनर्जीज़ के आईपीओ में पैसा लगाने का बुधवार को आखिरी मौका है। इश्यू को दूसरे दिन आठ गुना से अधिक सब्सक्राइब किया गया था। यह मेनबोर्ड आईपीओ सोमवार, 21 अक्टूबर, 2024 को सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था और बुधवार को बंद हो जाएगा। वारी एनर्जीज़ ने बताया कि उसने पहले ही एंकर निवेशकों से 1,276.93 करोड़ रुपये जुटा लिए हैं। वारी एनर्जीज़ के 4,321 करोड़ रुपये के आईपीओ को निवेशकों से शानदार रिस्पॉस मिल रहा है। आईपीओ में बोली के दूसरे दिन, 22 अक्टूबर को मजबूत मांग देखी गई और ऑफर को 8.8 गुना अधिक सब्सक्राइब किया गया। बीएसई के आंकड़ों के अनुसार, क्यूआईबीएस (क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स) के लिए आरक्षित हिस्सा 1.73 गुना बुक हुआ, एनआईआईएस (नॉन-इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स) के लिए आरक्षित हिस्सा सबसे ज्यादा 24.38 गुना बुक हुआ और रिटेल निवेशकों के लिए आरक्षित हिस्सा 6.39 गुना बुक हुआ। कर्मचारियों के लिए आरक्षित हिस्सा 3.11 गुना बुक हुआ। आईपीओ को मंगलवार को 2,10,79,384 शेयरों के मुकाबले 18,58,11,795 शेयरों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। पहले दिन, आईपीओ को 3.47 गुना सब्सक्रिप्शन मिला था। वारी एनर्जीज़ की स्थापना 1989 में हुई थी और यह भारत का सबसे बड़ा सोलर मॉड्यूल निर्माता है, जिसकी 12 जीडब्यू क्षमता है। ग्रे मार्केट में भी इस आईपीओ में उल्लेखनीय रुचि देखी गई, जहां वारी एनर्जीज़ का जीएमपी 21 अक्टूबर को आईपीओ लॉन्च से पहले 100 प्रतिशत से अधिक बढ़ गया था। हालांकि बुधवार को जीएमपी में मामूली गिरावट देखी गई।

देशभर में पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतों में हुआ बदलाव

- क्रूड का भाव लगातार मामूली बढ़त के साथ 75.74 डॉलर प्रति बैरल

नई दिल्ली ।

इजरायल और ईरान के बीच टेंशन थोड़ी कम हुई तो वैश्विक बाजार में कच्चे तेल के भाव भी नीचे आ गए। इसका असर देशभर में पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतों पर भी दिख रहा है। बुधवार को सरकारी तेल कंपनियों की ओर से जारी तेल के खुदरा रेट में बदलाव दिख रहा है। उत्तराखंड के पहाड़ों से लेकर झारखंड और पश्चिम बंगाल के मैदानों तक सभी जगह तेल की कीमतों में बदलाव दिख रहा है। हालांकि, देश के चारों महानगरों में तेल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में पेट्रोल 12 पैसे महंगा होकर 93.32 रुपये लीटर बिक रहा है। डीजल भी 12 पैसे चढ़ा और 88.12 रुपये लीटर पहुंच गया है। पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में पेट्रोल 82 पैसे चढ़कर 106.44 रुपये लीटर हो गया तो डीजल 77 पैसे बढ़कर 93.15 रुपये लीटर बिक रहा है। झारखंड की राजधानी रांची में पेट्रोल 17 पैसे सस्ता हो गया और 97.81 रुपये लीटर बिक रहा, जबकि डीजल 18 पैसे टूटकर 92.56 रुपये लीटर हो गया है। कच्चे तेल की बात करें तो बीते 24 घंटे में इसकी कीमतों में भी बदलाव दिख रहा है। क्रूड का भाव लगातार मामूली बढ़त के साथ 75.74 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। डब्ल्यूटीआई का भाव भी थोड़ा चढ़कर 72.09 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। वहीं दिल्ली में पेट्रोल 96.65 रुपये और डीजल 89.82 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर है। नदिया में पेट्रोल 106.44 रुपये और डीजल 87.83 रुपये प्रति लीटर है। रांची में पेट्रोल 97.81 रुपये और डीजल 92.56 रुपये प्रति लीटर हो गया है। देहरादून में पेट्रोल 93.32 रुपये और डीजल 89.12 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

ओला कैब्स को देना होगा बैंक अकाउंट या कूपन चुनने का अधिकार

नई दिल्ली ।

ओला कैब्स कंपनी को अब रिफंड प्रक्रिया में ग्राहकों को बैंक अकाउंट या कूपन में से किसी एक विकल्प को चुनने का अधिकार देना होगा। सेंट्रल कंज्यूमर प्रोटेक्शन अथॉरिटी (सीसीपीए) ने यह आदेश जारी किया। इस प्रक्रिया को लेकर कंज्यूमर मिनिस्ट्री ने स्पष्ट किया है कि रिफंड के लिए विकल्प न देना कंज्यूमर राइट्स का उल्लंघन है। इस तरह की व्यवस्था से ग्राहक अगली राइड के लिए मजबूर होते हैं, जो उनके अधिकारों के खिलाफ है। सीसीपीए की चीफ कमिश्नर निधि खरे ने ओला को आदेश दिया है कि वह प्लेटफॉर्म पर बुक की गई सभी ऑटो राइड्स के लिए ग्राहकों को बिल, रसीद या इनवॉइस प्रदान करे। साथ ही, ऐप द्वारा ग्राहकों को चालान देने से मना करने की भी शिकायत आई है, जिसमें ऑटो सर्विस के नियमों में बदलाव का हवाला दिया गया है। इस वर्ष 9 अक्टूबर तक नेशनल कंज्यूमर हेल्पलाइन पर ओला के खिलाफ 2,061 शिकायतें दर्ज की गई थीं, जिनमें अधिकांश शिकायतें बुकिंग के समय से अधिक किराया और रिफंड न मिलने से संबंधित थीं।

पिछले सप्ताह सीसीपीए ने ओला इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को कंज्यूमर राइट्स के उल्लंघन, भ्रामक विज्ञापन और अनफेयर ट्रेड प्रैक्टिस के लिए कारण बताओ नोटिस भी जारी किया था। बता दें कि वर्तमान में, जब ग्राहक ओला ऐप पर रिफंड के लिए शिकायत करते हैं, तो कंपनी उन्हें केवल कूपन के रूप में रिफंड देती है, जिसे वह अगले राइड के लिए ही इस्तेमाल कर सकते हैं।

अडाणी ग्रुप की कंपनी को सेबी ने भेजा नोटिस

- कंपनी ने निवेशकों से क्या छुपाया, शेयर होल्डर्स ने लगाया ये बड़ा आरोप

नई दिल्ली ।

अडाणी ग्रुप की एक कंपनी को शेयर बाजार नियामक सेबी ने नोटिस भेजा है। यह नोटिस कंपनी के शेयरधारकों की शिकायत के बाद भेजा गया है। अडाणी समूह की कंपनी अडाणी एनर्जी सॉल्युशंस लिमिटेड ने इस बात की जानकारी दी है। दरअसल कंपनी के कुछ निवेशकों ने गलत तरीके से पब्लिक शेयरहोल्डिंग को कैटेगराइज्ड करने का आरोप लगाया है। कंपनी ने अपनी दूसरी तिमाही के नतीजों की टिप्पणी में विवरण दिए बिना कहा कि वह नियामक और वैधानिक अधिकारियों को इस मामले पर स्पष्टीकरण और जानकारी देगा। समूह की रिन्यूबल एनर्जी फर्म अडाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड को सेबी से कोई नया नोटिस नहीं मिला है। एईएसएल ने कहा` कि चालू तिमाही के दौरान कुछ पक्षों की शेयरधारिता को सार्वजनिक शेयरधारिता के रूप में गलत तरीके से वर्गीकृत करने का आरोप लगाते हुए कारण बताओ नोटिस मिला है। कंपनी ने कहा कि वह समय-समय पर जानकारी, प्रतिक्रिया, दस्तावेज या स्पष्टीकरण देकर विनियामक और वैधानिक प्राधिकरणों को जवाब देगी। सेबी के सूचीबद्धता नियम के अनुसार सूचीबद्ध कंपनी में कम से कम 25 प्रतिशत हिस्सेदारी सार्वजनिक निवेशकों के पास होनी चाहिए। अडाणी समूह की 10 सूचीबद्ध कंपनियों में से सात को 31 मार्च को समाप्त तिमाही में संबंद्ध पक्ष लेनदेन के कथित उल्लंघन और सूचीबद्धता नियमों का पालन न करने के लिए भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) से कारण बताओ नोटिस मिला था। अडाणी एनर्जी सॉल्युशंस के शेयरों ने निवेशकों को अच्छा रिटर्न नहीं दिया है। इस स्टॉक ने पिछले एक साल में शेयरधारकों का 35 फीसदी का रिटर्न दिया है। अक्टूबर 2023 में कंपनी के शेयरों का भाव 735 रुपये था और अब कीमत 1000 रुपये प्रति शेयर है।

जेपी मॉर्गन चेस बैंक इंडिया ने प्रणव चावड़ा को मुख्य कार्यपालक अधिकारी नियुक्त किया

मुंबई ।

जेपी मॉर्गन चेस बैंक इंडिया ने प्रणव चावड़ा को अपना मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) नियुक्त करने की बुधवार को घोषणा की। अमेरिकी बैंकिंग प्रमुख जेपी मॉर्गन की इकाई ने कहा कि उसे भारत में बैंकिंग इकाई के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) के रूप में चावड़ा की नियुक्ति के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की मंजूरी मिल गई है। आधिका रिक बयान के अनुसार चावड़ा 2019 में जेपी मॉर्गन में शामिल हुए और वाणिज्यिक बैंकिंग खंड का नेतृत्व किया। अब उनकी जिम्मेदारियों का विस्तार किया जा रहा है और वह कॉर्पोरेट बैंकिंग इकाई का भी नेतृत्व करेंगे। जेपी मॉर्गन के एशिया प्रशांत के उपाध्यक्ष कौस्तुभ कुलकर्णी का कहना है कि हमारी बैंकिंग इकाई के सीईओ के रूप में प्रणव का अनुभव तथा स्थानीय बाजार की गहरी समझ उन्हें कॉर्पोरेट बैंकिंग व्यवसाय को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम बनाएगी।

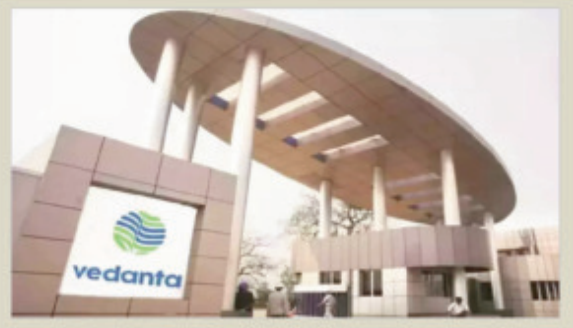

वेदांता रिसोर्सेज ने टैप इश्यू के उपयोग से जुटाए 30 करोड़ डॉलर

नई दिल्ली । मुंबई स्थित खनन समूह वेदांता लिमिटेड की मूल कंपनी वेदांता रिसोर्सेज ने मौजूदा बॉन्ड निर्गम पर टैप इश्यू का उपयोग कर 30 करोड़ अमेरिकी डॉलर जुटाए हैं। टैप इश्यू एक ऐसी प्रक्रिया है जो कंपनियों को पिछले निर्गम से बॉण्ड या अन्य अल्पकालिक ऋण उपकरण जारी करने की अनुमति देती है। वेदांता रिसोर्सेज लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी वेदांता रिसोर्सेज फाइनेंस-2 पीएलसी (वीआरएफ) ने सिंगापुर एक्सचेंज को दी गई सूचना में बताया कि उसने सितंबर में जारी होने वाले 90 करोड़ अमेरिकी डॉलर के बॉन्ड पर टैप इश्यू' विकल्प का इस्तेमाल किया है, जिससे 9.99 प्रतिशत की दर से 30 करोड़ अमेरिकी डॉलर और जुटाए जा सकेंगे। इस तरह उसने अपनी नगदी प्रबंधन प्रक्रिया जारी रखी है। वेदांता के एक अे धिकारी ने कहा कि कंपनी सितंबर 2024 में हमारे 90 करोड़ डॉलर के बॉण्ड जारी करने के तुरंत बाद अपनी टैप' पेशकश को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया से काफी खुश है। वेदांता रिसोर्सेज ने सितंबर में मौजूदा बॉन्ड का पूर्व भुगतान करने के लिए दो साल से अधिक समय में अपने पहले डॉलर बॉन्ड निर्गम में 90 करोड़ डालर जुटाए थे।

जिंदल पैंथर सीमेंट 2,160 करोड़ रुपए का निवेश करेगी

नई दिल्ली ।

नवीन जिंदल समूह की कंपनी जिंदल पैंथर सीमेंट ने अपनी उत्पादन क्षमता को 7 मिलियन टन प्रति वर्ष तक बढ़ाने के लिए 2,160 करोड़ रुपये का निवेश करने की घोषणा की। इस विस्तार के तहत कंपनी ओडिशा के अंगुल में 1.5 एमटीपीए की नई सीमेंट ग्राइंडिंग यूनिट स्थापित करेगी, जिससे उत्पादन की संभावनाओं में वृद्धि होगी। इस नई यूनिट में जिंदल स्टील एंड पावर के अंगुल स्थित प्लांट से 1 एमटीपीए ब्लास्ट फर्नेस स्लैग का उपयोग किया जाएगा। ब्लास्ट फर्नेस स्लैग स्टील निर्माण का उप-उत्पाद है और इसका उपयोग सीमेंट बनाने में किया जाता है। इस विस्तार को अगले चार वर्षों में पूरा करने की योजना है। जिंदल समूह के पास पहले से ही छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में 1 एमटीपीए की सीमेंट यूनिट है, जहां से जिंदल पैंथर ब्रांड के तहत सीमेंट बेचा जाता है। अंगुल और रायगढ़ में कुल मिलाकर 7 एमटीपीए की उत्पादन क्षमता का विस्तार कंपनी की सीमेंट उद्योग में उपस्थिति को और मजबूत करेगा और क्षेत्र की बुनियादी ढांचे की मांग को पूरा करने के लिए टिकाऊ निर्माण सामग्री प्रदान करेगा। जिंदल पैंथर सीमेंट के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि अंगुल ग्राइंडिंग यूनिट का चालू होना भविष्य की ओर एक बड़ा कदम है। हमारा कम-कार्बन सीमेंट और नया वितरण मॉडल पूर्वी भारत के बुनियादी ढांचे की वृद्धि में मदद करेगा और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देगा। इस बीच अदाणी परिवार के स्वामित्व वाली अंबुजा सीमेंट्स ने हाल ही में ओरिएंट सीमेंट लिमिटेड में 46.8 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदने के लिए 8,100 करोड़ रुपये के सौदे पर हस्ताक्षर किए हैं। यह सौदा सीमेंट उद्योग में अदाणी समूह की स्थिति को और मजबूत करेगा। जिंदल पैंथर सीमेंट का यह नया निवेश भारत के निर्माण क्षेत्र में विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

लगातार तीसरे दिन लाल हुआ बाजार

आईटी शेयरों ने बचाई लाज

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार में बुधवार को लगातार तीसरे दिन गिरावट दिखाई दी। विदेशी निवेशकों (एफपीआई) की ओर से जमकर शेयरों की बिकवाली, चीन की तरफ उनके झुकाव और मिडिल-ईस्ट तनाव के बीच सेंसेक्स और निफ्टी में गिरावट नहीं थम सकी। इसके अलावा, अमेरिका में आगामी 5 नवंबर को हो रहे राष्ट्रपति चुनाव को लेकर बनी अनिश्चितता से भी निवेशकों में घबराहट दिखाई दी। हालांकि, आईटी शेयरों ने बड़ी गिरावट से बचाने में कामयाबी हासिल की। बीएसई का बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स बुधवार को 138.74 अंक की गिरावट के साथ 80,081.98 के लेवल पर बंद हुआ। वहीं, एनएसई का बेंचमार्क इंडेक्स निफ्टी 50 36.60 अंक लुढ़ककर 24,435.50 के लेवल पर बंद हुआ। बुधवार को बाजार में निफ्टी आईटी एक मात्र ऐसा सेक्टर रहा जो 1 प्रतिशत से ज्यादा की उछाल दर्ज कर सका। चूंकि, भारतीय शेयर बाजार में आईटी और बैंकिंग शेयरों का वजन ज्यादा होता है, इसकारण अगर ये सेक्टर बढ़ते हैं,तब बाजार को मजबूती मिलती है।

इसके अलावा, निफ्टी एफएमसीजी (0.16 प्रतिशत), निफ्टी मीडिया (0.33प्रतिशत), निफ्टी पीएसयू बैंक (0.45 प्रतिशत), निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल्स (0.7प्रतिशत) और फाइनेंशियल सर्विसेज सेक्टर हरे निशान में बंद हुए। मगर खास बढ़त देखने को नहीं मिली। सबसे बड़ी गिरावट बुधवार को फार्मा सेक्टर में दिखाई दी। फार्मा सेक्टर के शेयर बुधवार को ओवरआल 1.56 प्रतिशत तक गिर गए। जबकि, अन्य सेक्टर्स में 1 प्रतिशत से कम की गिरावट देखने को मिली। बुधवार को 30 शेयरों वाले सेंसेक्स पर बजाज फाइनेंस के शेयर ने सबसे बड़ी, 4.95 प्रतिशत की उछाल दर्ज की। बजाज फाइनेंस का शेयर बुधवार को 7007.95 रुपये पर बंद हुए। गौरतलब है कि एनबीएफसी कंपनी ने 22 अक्टूबर को ही दूसरी तिमाही के नतीजे घोषित किए थे। इसके अलावा, टेक महिंद्रा, टीसीएस,एचडीएफसी बैंक, एचसीएल टेंक, बजाज फिनसर्व, इंफोसिस और कोटक बैंक के शेयर ही बढ़त के साथ बंद हुए। इसी तरह 50 शेयरों वाले निफ्टी-50 में सिर्फ 18 शेयर बढ़त बनाने में कामयाब रहे। निफ्टी-50 के टॉप गेनर स्टॉक्स में टॉप-5 में बजाज फाइनेंस, टेक महिंद्रा, टाटा कंज्यूमर, बजाज ऑटो और ,एचडीएफसी बैंक जगह बनाने में कामयाब रहे। वहीं सबसे बड़ी,

3.23 प्रतिशत की गिरावट, महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयरों में देखने को मिली। इसके अलावा, सनफार्मा, पावरग्रिड, एनटीपीसी, अदाणी पोर्ट्स, एलएंडटी, आईसीआईसीआई बैंक , टाइटन, एक्सिस बैंक, टाटा स्टील, जेएस डब्ल्यू स्टील, नेस्ले इंडिया के शेयर 1 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट के साथ बंद हुए।

ग्लोबल मार्केट

एशियाई बाजारों में सियोल, शंघाई और हांगकांग उच्च स्तर पर बंद हुए, जबकि टोक्यो में गिरावट दर्ज की गई। यूरोपीय बाजारों में मिलाजुला रुख देखने को मिला, जबकि मंगलवार को अमेरिकी बाजार सपाट बंद हुए। वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 0.97 प्रतिशत गिरकर 75.30 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

जीजेसी 'एक राष्ट्र एक स्वर्ण दर' लागू करने की दिशा में कर रही काम

- खुदरा विक्रेताओं को मनाने का किया जा रहा है प्रयास

नई दिल्ली । अखिल भारतीय रत्न एवं आभूषण घरेलू परिषद (जीजेसी) ने घोषणा की कि वह 'एक राष्ट्र एक स्वर्ण दर' को लागू करने की दिशा में काम कर रही है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य देश में सोने की कीमतों को मानकीकृत करना है, क्योंकि वर्तमान में ये कीमतें विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न हैं। जीजेसी के एक अधिकारी ने कहा कि हम एक ही दर पर सोना आयात करते हैं, लेकिन घरेलू खुदरा कीमतें एक शहर से दूसरे शहर में अलग होती हैं। हम चाहते हैं कि पूरे देश में एक समान दर लागू हो। यह बयान उन्होंने 22 अक्टूबर से 9 दिसंबर तक चलने वाले वार्षिक स्वर्ण महोत्सव 'लकी लक्ष्मी' के लॉन्च के मौके पर दिया। जीजेसी ने अपने सदस्यों के साथ पहले ही 50 से अधिक बैठकें आयोजित की हैं और इस पहल के लिए 8,000 सुनारों को एक साथ लाने में सफलता हासिल की है। इसके अलावा परिषद ने इस मुद्दे पर सरकार को सुझाव भी दिए हैं और उद्योग के हितधारकों को समझाने की कोशिशें जारी हैं।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 84.07 पर बंद हुआ रुपया

मुंबई । रुपया बुधवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 84.07 पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि घरेलू शेयर बाजारों में गिरावट के रुख और कच्चे तेल की कीमतों में तेजी ने भी भारतीय मुद्रा को प्रभावित किया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया एक पैस की बढ़त के साथ 84.07 प्रति डॉलर पर खुला और शुरुआती कारोबार में स्थिर रहा। रुपया मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 84.08 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत की बढ़त के साथ 103.97 पर रहा।

इस दिवाली गहनों की खरीदारी में कमी आने का अनुमान

- दिवाली के त्योहार से पहले ही सोने की कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाई पर

नई दिल्ली ।

इस साल दिवाली पर गहनों की खरीदारी को लेकर बाजार विशेषज्ञों का अनुमान है कि मांग में 10 से 12 फीसदी की कमी आएगी। धनतेरस के अवसर पर सोने और चांदी की बिक्री में गिरावट की संभावना को देखते हुए थोक और खुदरा विक्रेताओं ने भी इसी प्रकार की चिंताओं का इजहार किया है। विश्लेषकों का कहना है कि, भले ही सीमा शुल्क कम हुआ है, लेकिन दिवाली के त्योहार से पहले सोने की कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुँच गई हैं। वर्तमान में दिल्ली सराफा बाजार में सोने की कीमत लगभग 80,000 रुपये प्रति 10 ग्राम है, जबकि चांदी की कीमत एक लाख रुपये प्रति किलोग्राम को पार कर गई है। इतनी ऊंची कीमतों पर गहनों की खरीदारी करना ग्राहकों के लिए आसान नहीं होगा। सेनको गोल्ड एंड डायमंड्स के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी, सुवनकर सेन ने कहा, इस साल पिछले धनतेरस के मुकाबले मात्रा के लिहाज से बिक्री में 10-12 प्रतिशत की गिरावट की उम्मीद है। हालाँकि, मूल्य के आधार पर बिक्री में 12-15 प्रतिशत की वृद्धि संभव है। इस बार वैश्विक अनिश्चितताओं के चलते सोने की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं। बाजार के विश्लेषकों का कहना है कि बढ़ती

कीमतों के कारण उपभोक्ताओं की रुचि कम हो गई है। हालांकि, निवेशक समय के साथ ऊँची कीमतों के आदी हो जाते हैं और भविष्य में मांग फिर से बढ़ सकती है।

उद्योग पिछले साल के स्तर पर पहुँचने की उम्मीद कर रहा है। वहीं बताया जा रहा है कि दूसरी तिमाही के दौरान ग्राहकों की अच्छी संख्या को देखते हुए हम त्योहारों के दौरान बिक्री के लिए आशान्वित हैं। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी यह उल्लेख किया कि हालाँकि कीमतें उच्चतम स्तर पर पहुँच गई हैं, लेकिन त्योहारों के कारण सोने की खरीदारी में उछाल आने के संकेत मिल रहे हैं।

इस प्रकार इस दिवाली गहनों की बिक्री में गिरावट की उम्मीद के बावजूद, कुछ विक्रेता त्योहारों के दौरान सकारात्मक प्रतिक्रिया की आशा कर रहे हैं।

पेटीएम को नए यूपीआई यूजर्स जोड़ने के लिए एनपीसीआई से मंजूरी मिली

- पेटीएम ने बंबई स्टॉक एक्सचेंज को सूचित कर दिया है

नई दिल्ली । भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) ने पेटीएम को नए यूपीआई उपयोगकर्ताओं को जोड़ने की मंजूरी दे दी है। पेटीएम ने बंबई स्टॉक एक्सचेंज को बताया कि हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि 22 अक्टूबर 2024 के पत्र के माध्यम से, भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) ने सभी एनपीसीआई प्रक्रियात्मक दिशानिर्देशों और परिपत्रों के पालन के साथ कंपनी को नए यूपीआई उपयोगकर्ताओं को जोड़ने की मंजूरी दे दी है। कंपनी ने इसके साथ ही एनपीसीआई द्वारा जारी किया गया मंजूरी पत्र भी लगाया है। पत्र के अनुसार यह अनुमोदन एनपीसीआई द्वारा समय-समय पर जारी किए गए सभी प्रक्रियात्मक दिशानिर्देशों और परिपत्रों के पालन के अधीन है, जिसमें विशेष रूप से जोखिम प्रबंधन, ऐप और क्यूआर के लिए ब्रांड दिशानिर्देश, बहु-बैंक दिशानिर्देश, टीपीएपी बाजार हिस्सेदारी और ग्राहक डेटा पर जारी दिशानिर्देश और परिपत्र शामिल हैं।

रोहिंग्या-बांग्लादेशियों की चमचागिरी ना करें लालू और तेजस्वी

पटना। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की हिंदू स्वाभिमान यात्रा के कारण बिहार में खूब राजनीति हो रही है। 20 अक्टूबर को अररिया में यात्रा के दौरान बीजेपी सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने कहा कि 'अररिया में रहना है तो हिन्दू बनना होगा।' बीजेपी सांसद के बयान पर सियासत तेज है। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव कहा है कि 'अगर किसी ने भी मुसलमानों को बुरी नजर से देखा जो ईंट से ईंट बजा दूंगा।' लालू यादव ने भी कहा कि गिरिराज की यात्रा पर सवाल उठाया और कहा कि वो उल्टा पुल्टा बोलते रहते हैं। नीतीश और गिरिराज में कोई अंतर नहीं है। मेरे रहते बिहार में दंगा नहीं होगा। गिरिराज सिंह ने अब तेजस्वी और लालू यादव को चेतावनी दी है। गिरिराज सिंह ने कहा है कि बाप-बेटे आंख नहीं दिखाएं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि लालू और तेजस्वी रोहिंग्या और बांग्लादेशियों के

लिए चमचागिरी ना करें। नीतीश के राज में तो दंगा नहीं हुआ, लेकिन लालू राज में दंगा हुआ था और तेजस्वी अब बिहार में दंगा करवाना चाहते हैं। बीजेपी सांसद के बयान के बाद तेजस्वी यादव मंगलवार को फेसबुक लाइव पर आए। उन्होंने कहा कि 'कोई भी अल्पसंख्यक भाइयों को बुरी नजर से देखने का प्रयास करेगा, तो राष्ट्रीय जनता दल और तेजस्वी यादव चुप नहीं बैठेगा। ऐसे लोगों की हम ईंट से ईंट बजा देंगे। इस देश की मिट्टी में सबकी महक और आजादी में सबका योगदान है। मैं हर एक व्यक्ति को भरोसा दिलाता हूं कि जब तक मेरी सांस है मैं बिहार को सांप्रदायिकता की आग में झोंकने वाले हर एक व्यक्ति के सामने डटकर खड़ा रहूंगा और मुसलमानों की तरफ बुरी नजर से देखने वालों की ईंट से ईंट बजा दूंगा।'दंगा करवाने की कोशिश हो रही हैगिरिराज सिंह के यात्रा पर भी तेजस्वी ने तीखा हमला किया। उन्होंने कहा कि 'हिंदू और मुसलमान को इस यात्रा के जरिए लड़ाने का प्रयास किया जा रहा है। अररिया के सांसद ने जिस भाषा का प्रयोग किया है, मैं उसका कड़ा विरोध करता हूं। इस देश की आजादी में सभी लोगों का योगदान है। मुद्दे की बात होनी चाहिए पढ़ाई-लिखाई, सिंचाई और कमाई की बातें होनी चाहिए। सांप्रदायिक शक्ति जो आज तांडव कर रही है और दंगा करवाने का प्रयास किया जा रहा है, इसका विरोध होना चाहिए।' तेजस्वी ने आगे कहा कि 'यदि बिहार में दंगा होता है तो भाजपा, आरएसएस के लोगों के साथ-साथ नीतीश कुमार भी दोषी होंगे। हम सबको अपने भविष्य की चिंता करनी चाहिए, लेकिन BJP वाले उप चुनाव को लेकर दंगा भड़काने का काम कर रहे हैं। हार के डर से वो यह कोशिश कर रहे हैं,

CM नीतीश पर भी भड़के तेजस्वी यादव

अपने फेसबुक लाइव के दौरान तेजस्वी, उट नीतीश पर भी हमलावर दिखे। तेजस्वी ने कहा कि 'आज की तारीख में मुख्यमंत्री वैसे लोगों के साथ खड़े हैं, जो नफरत की भाषा बोल रहे हैं। ऐसे लोगों को श्रेणी की सुरक्षा नीतीश कुमार दे रहे हैं, जो लोग नफरत फैला रहे हैं।

भाजपा के एक सांसद ने बिहार में माहौल बिगाड़ने के लिए भड़काऊ बयान दिया और आज ही उस सांसद को नीतीश कुमार ने अतिरिक्त सुरक्षा मुहैया करा दी।'

लेकिन राष्ट्रीय जनता दल चुप बैठने वालों में से नहीं है।' CM नीतीश पर भी भड़के तेजस्वी यादव अपने फेसबुक लाइव के दौरान तेजस्वी, CM नीतीश पर भी हमलावर दिखे। तेजस्वी ने कहा कि 'आज की तारीख में मुख्यमंत्री वैसे लोगों के साथ खड़े हैं, जो नफरत की भाषा बोल रहे हैं। ऐसे लोगों को श्रेणी की सुरक्षा नीतीश कुमार दे रहे हैं, जो लोग नफरत फैला रहे हैं। भाजपा के एक सांसद ने बिहार में माहौल बिगाड़ने के लिए भड़काऊ बयान दिया और आज ही उस सांसद को नीतीश कुमार ने अतिरिक्त सुरक्षा मुहैया करा दी।आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव ने कहा है कि नीतीश और गिरिराज सिंह का राज में कोई अंतर नहीं है। गिरिराज से आदतन ऐसा बयान देते रहे हैं। हम लोगों के रहते कोई बिहार में दंगा कैसे करा लेगा। मुसलमानों को केवल वोटिंग टूल बनाया भाजपा प्रवक्ता नीरज कुमार ने कहा कि 'राजद और इनका पूरा कुनबा शुरू से ही तुष्टिकरण की राजनीति करता है।

संक्षिप्त डायरी

भोजपुर में ट्रेन से कटकर बुजुर्ग की मौत

भोजपुर। आरा-सासाराम रेलखंड पर हसन बाजार थाना क्षेत्र के हसन बाजार हॉल्ट के समीप मंगलवार को ट्रेन की चपेट में आने से शौच करने गए दिव्यांग युवक की मौत हो गई। मृतक हसन बाजार थाना क्षेत्र के कतार गांव निवासी शरफुद्दीन रंगसाज का 42 वर्षीय बेटे इलियास रंगसाज उर्फ लांगर है। पेशे से वो कबाड़ी का काम करता था। मृतक के पड़ोसी मो.लड्डन हुसैन ने कहा कि दिव्यांग थे। प्रतिदिन की तरह वह शौच करने के लिए हसन बाजार हॉल्ट के समीप रेलवे लाइन के किनारे गए थे। इसी दौरान वह ट्रेन की चपेट में आ गए। अन्य ग्रामीण वहां शौच के लिए पहुंचे तो उन्होंने रेलवे ट्रैक के पास मृत अवस्था में पड़ा देखा। परिजनों को सूचना दी।परिजनों ने मामले की सूचना स्थानीय थाने को दी। सूचना पाकर स्थानीय थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा। बताया जाता है कि मृतक अपने पांच भाई व तीन बहनों में चौथे स्थान पर था। उसके परिवार में मां नूरजहां खातून है। उसकी शादी 20 वर्ष पूर्व हुई थी, लेकिन शादी के 4 वर्ष बाद ही उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई।

भोजपुर में अज्ञात वाहन ने मजदूर को रौंदा, मौत

भोजपुर। शहर के टाउन थाना क्षेत्र के धरहरा के समीप मंगलवार को अज्ञात वाहन ने सड़क किनारे जा रहे युवक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में उसकी मौत हो गई। इलाज के दौरान सदर अस्पताल में उसने दम तोड़ दिया। मृतक टाउन थाना क्षेत्र के धनुपरा वार्ड नंबर-34 निवासी मसूदन मुसहर का 38 वर्षीय पुत्र राम बाबू मुसहर है, जो पेशे से मजदूर था।बताया जा रहा कि मंगलवार को वह मजदूरी करने के लिए सड़क किनारे बस स्टैंड की ओर जा रहा था। इसी दौरान धरहरा के समीप किसी अज्ञात वाहन ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। परिजन इलाज के लिए सदर अस्पताल ले गए। जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। सूचना सदर अस्पताल में पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी को दी गई। चिकित्सक ने बताया कि युवक के सिर और हाथ में काफी गंभीर रूप से चोट आई है। पटना रेफर किया था। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम कराया।

मेरे पापा बेकसूर थे, उन्हें क्यों मारी गई गोली

हाजीपुर। चीखकर कश्मीर के आतंकी हमले में मारे गए फहीमुन नासीर की बेटी जिकरा फहीम ने कही। मंगलवार की सुबह फहीमुन नासीर का शव वैशाली के अब्बाकरपुर गांव पहुंचा था। घर शव पहुंचते ही परिजनों में कोहराम मच गया। सभी परिवार के सदस्य, गांव वाले रोने बिलखने लगा। बेटी जिकरा ने कहा कि मैं IAS ऑफिसर बनना चाहती थी। पापा का सपना पूरा करना चाहती थी। पापा चाहते थे कि मै कअर ऑफिसर बनूं। बेटी ने सरकार से पढ़ाई का सारा

खर्चा उठाने की मांग की है।पीड़ित परिजनों के मुताबिक फहीमुन 7 नवम्बर को आने वाले थे। उनकी भतीजी की शादी है। बहनोई शकील अहमद काजमी ने कहा कि यह एक बड़ा हादसा है। वह अपने बच्चों के लिए कश्मीर में जाकर कमा रहे थे। घर की परवरिश करते थे। उन्होंने कहा कि यह घटना पूरे हिंदुस्तान और बिहार के लिए बहुत अफसोसजनक है। जो व्यक्ति अपने परिवार के लिए काम करने गया था, अब उसका शव आया है बहुत ही दुखद घटना है।वहीं, शव के घर पर आते ही सैकड़ों लोगों की भीड़ जुट गई थी। सैकड़ों लोग नमाजे जनाजे में शामिल हुए और उनकी आत्मा की शांति के लिए दुआ मांगी गई। फिर उनको खाके सपुर्द कर दिया गया।

शराब से मौत, पत्नी ने आला लगाकर चेक किया धड़कन

मुजफ्फरपुर। में एक युवक की इलाज के दौरान संदिग्ध मौत हो गई है। मृतक की पहचान हथौड़ी थाना क्षेत्र के डीहजिवर गांव निवासी श्याम साहनी के रूप में हुई है। श्याम की पत्नी रेणु देवी ने कहा कि मेरे पति को शराब पिलाई गई है। सोमवार देर रात विरोधी साहनी और मुकेश साहनी उन्हें ले गए थे। तीनों ने शराब पी थी। रात में मेरे पति घर आए। बच्चों को प्यार किया। दो-तीन बार उल्टी की और सो गए। सुबह उठाकर नहाया और खाना खाया। फिर कहने लगे मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा, वे बेचैन हो गए। मुझे और बच्चों को खोजने लगे। ग्रामीण उन्हें ले गए। इलाज के दौरान डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। मुझे उनकी बात पर भरोसा नहीं हुआ। मैंने डॉक्टर से आला लिया और पति की धड़कन सुनी, हाथ का नस भी चेक किया। उनकी मौत हो गई।

मेरे पति दोनों बच्चों को डॉक्टर बनाने चाहते थे, क्योंकि मैं शादी से पहले नर्स की तैयारी करती थी। वे कहते थे कि तुम तो बनी नहीं, लेकिन हम अपने बच्चों को डॉक्टर बनाएंगे। ग्रामीण अशोक राम का कहना है कि शराब पीने के बाद श्याम की तबीयत बिगड़ी थी। सोमवार की रात उसने शराब पी और मंगलवार को उसकी आंखों की रोशनी जाने लगी। उसके बाद श्याम को एसकेएमसीएच भर्ती कराया गया।

जिस दोस्त संग फेसबुक पर फोटो डाली उसी ने मारा

पटना। में केदारनाथ ट्रिप से लौटने के बाद दोस्तों के बीच पैसे को लेकर विवाद हुआ। इस दौरान सन्नी कुमार ने अपने दोस्त मनीष कुमार की जान ले ली और परिवार सहित गांव से फरार हो गया। आरोप है कि ट्रिप के पैसों को लेकर दोनों में झगड़ा हुआ। सन्नी ने मनीष को बुलाकर दोस्तों के साथ पीटा। मारपीट में उसकी हालत खराब हो गई। अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसने दम तोड़ दिया। घटना बिहटा थाना क्षेत्र के विशनपुरा गांव की है। मंगलवार की देर रात गांव के ठाकुरबाड़ी के पास दोस्तों के बीच पैसों को लेकर विवाद में मनीष कुमार की जान चली गई। मृतक की पहचान बक्सर जिले के बड़का गांव के सिमरिया निवासी स्व. गोपाल मिश्रा के बेटे मनीष कुमार मिश्रा के रूप में हुई है। वो बचपन से बिशनपुरा अपने नानी के घर रहता था। घटना से 13 दिन पहले 10 अक्टूबर को मनीष ने फेसबुक पर आरोपी सन्नी कुमार और दोस्तों के साथ फोटो पोस्ट करते हुए लिखा था कि 'पिछले साल इन्ही रास्तों में कोई अपना साथ था, आज सारे अजनबी...क्योंकि मैं जिसको मांगता हूं वो उसी को छीन लेता है,लगता है मेरे भगवान को प्यार वैसा पसंद नहीं।' मनीष बिहटा बाजार में चाऊमीन की दुकान चलता था। वहीं सन्नी कुमार की बिहटा चौक पर मोबाइल दुकान है।

सुपौल के निर्मली पहुंचे ऊर्जा मंत्री बिजेंद्र प्रसाद

सुपौल। के कोसी निरीक्षण भवन निर्मली पहुंचे बिहार सरकार के ऊर्जा मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव ने मंगलवार को एनडीए कार्यकताओं से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र में चल रहे विकास कार्य और जन समस्याओं के बारे में कार्यकताओं से जानकारी ली।

मौके पर सुपौल सांसद दिलेश्वर कामैत, निर्मली विधायक अनिरुद्ध प्रसाद यादव, पूर्व जिला पार्षद सह वरिष्ठ नेता जीवनेश्वर साह, रामचंद्र प्रसाद यादव व अन्य भी मौजूद थे।

इससे पूर्व पटना से सुपौल जाने के दौरान जदयू कार्यकताओं ने निर्मली आगमन पर कोसी निरीक्षण भवन में ऊर्जा मंत्री, सुपौल सांसद एवं निर्मली विधायक का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। कोसी निरीक्षण भवन में मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के कार्यकाल में बिहार के ग्रामीण और शहरी इलाके के गली-मोहल्ले तक तेजी से विकास का काम हो रहा है। लोगों की समस्याओं

के त्वरित समाधान को लेकर विभिन्न विभागों के द्वारा अलग-अलग हेल्पलाइन व काउंटर खोले गए हैं। नियमित बिजली आपूर्ति के मामले में भी बिहार आगे है। बिजली तार नहीं पहुंचने वाले कोसी दियारा इलाके में भी सौरऊर्जा संचालित बिजली कनेक्शन से लोग लाभान्वित हो रहे हैं। हर गांव-टोले व मोहल्ले को शहरों से जोड़ने के लिए पक्की सड़कें बनाई गई है। जिन जगहों पर सड़कों की स्थित जर्जर है, उसकी मॉनिटरिंग भी सरकार कर रही है। उन जगहों पर भी सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है।उन्होंने निर्मली में आरओबी निर्माण को लेकर कहा कि आमजनों की सुविधा को देखते हुए बेहतर पहल किए जाएंगे। आवश्यकतानुसार पुल-पुलिया व ओवरब्रिज का निर्माण किया जाएगा। वहीं, सासंद दिलेश्वर कामैत ने कहा कि निर्मली-मरौना मेन रोड से जोड़ने वाली पथ में रेलवे अंडरपास होकर बड़ी वाहनों के आवाजाही में परेशानी होने जैसी शिकायतें मिल रही है। संसद में यह मुद्दा उठाया जाएगा।मौके पर जदयू के प्रखंड अध्यक्ष नथुनी मंडल, नगर अध्यक्ष गोपाल कुमार, किसोरी साह, देवनारायण साह, गोपाल साह, गुरुदयाल भ्रमर, सीता राम चौधरी, निशांत बोथरा, मनोज राम, अरविंद कुमार सहित अन्य भी मौजूद थे।

पुलिस हिरासत में युवक ने हाथ-गले की काटी नस

हाजीपुर। औद्योगिक थाना में पुलिस हिरासत में एक युवक ने गले की नस काट कर खुदकुशी करने की कोशिश की है। युवक को नस काटते देख पुलिस पदाधिकारी आनन-फानन में उसे लेकर इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचे। पुलिस अभिरक्षा में उसका इलाज किया गया लेकिन युवक स्थिति को नाजुक देखते हुए बेहतर इलाज के लिए पीएमसीएच रेफर कर दिया है। पुलिस हिरासत में काटी नस बताया गया कि मंगलवार की सुबह औद्योगिक थाना की पुलिस सिविल कोर्ट के वारंटी लक्ष्मीनगर गांव निवासी रवि प्रकाश को गिरफ्तार कर थाना लाई थी। थाना में पूछताछ के बाद दिव्यांग होने के कारण सिरिस्ता में बैठाया गया था। इसी दौरान आरोपी रवि प्रकाश ने टेबल पर पड़े ब्लेड से अपने हाथ की और गले पर कई जगह नस काट ली। ज्यादा खून बहता देख थाना में तैनात पुलिस पदाधिकारी लोग उसे अस्पताल ले गए।थानाध्यक्ष राजेश रंजन ने बताया कि एक मामले में काफी समय से फरार चल रहे आरोपित वारंटी को गिरफ्तार कर लाया गया था। इसके खिलाफ डकैती जैसे कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। आरोपी का भाई पूर्व में सदर थाना क्षेत्र में चोरी करते रंगे हाथ पकड़े जाने पर जेल भी जा चुका है।

रास्ते के लिए परिवार के 5 सदस्यों की पिटाई

भोजपुर। जिले के नवादा थाना क्षेत्र के कृष्ण नगर मोहल्ले में मंगलवार को रास्ते के विवाद को लेकर एक ही परिवार के तीन बच्चों समेत पांच लोगों की पिटाई कर दी। इस दौरान पति-पत्नी को पाटीदारों ने लाठी-डंडे से मारकर सिर फोड़ दिया। इसके बाद अन्य लोगों की मदद से मामले को शांत कराया गया। इसके बाद जख्मियों को इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जहां इलाज कराया जा रहा है। जख्मियों में नवादा थाना क्षेत्र की कृष्णा नगर गांव निवासी स्वर्गीय राज नारायण सिंह के 40 वर्षीय बेटे रत्नेश कुमार सिंह, पप्पू सिंह और उनकी 32 वर्षीय पत्नी खुशबू देवी, दो बेटियां 14 वर्षीय जूसी, 13 वर्षीय जिज्ञासा और 9 वर्षीय रुद्र प्रताप सिंह शामिल है। इधर जख्मी रत्नेश कुमार सिंह ने बताया कि उनके भाइयों के बीच बंटवारा हो गया है। पिछले 4 माह से रास्ते को लेकर विवाद चला आ रहा है। रत्नेश ने कहा कि हम अपने एक हिस्से में परिवार और दूसरे हिस्से में किराएदार रहते है। हमने अपने आने-जाने के लिए रास्ता का विकल्प तैयार कर दिया है, लेकिन किराएदारों के लिए एक ही रास्ता है। जिसे मेरे बड़े भाइयों ने कब्जा कर किराएदारों को आने-जाने से रोक दिया है। इसी बात को लेकर जब मेरी पत्नी खुशबू देवी बोलने के लिए गई तभी उनलोगों ने हमला कर दिया। हमलोग पहुंचे तो हमारे साथ भी मारपीट की।अन्य लोगों के बीच-बचाव के बाद मामले को शांत कराया गया। सभी को इलाज के लिए आरा अस्पताल लाया गया। पाटीदारों ने जान से मारने की धमकी भी दी।

क्लास में रेप की कोशिश अब 2 लाख का ऑफर

डर से बच्ची ने स्कूल जाना छोड़ा, पूरे परिवार के साथ आरोपी सरकारी शिक्षक फरार

मुजफ्फरपुर। में 5वीं की छात्रा से सरकारी स्कूल के हेडमास्टर ने रेप की कोशिश की। छात्रा ने स्कूल जाने से मना किया तो पूछताछ के बाद खुलासा हुआ। बवाल होने के बाद आरोपी शिक्षक मोहम्मद मजहूर निशान स्कूल से गायब हो गए हैं। बीमारी का बहाना बना कर गांव से ही फरार हैं। पत्नी और बेटी भी गांव में नहीं है। मुजफ्फरपुर के सकरा थाना इलाके का मामला है। 17 अक्टूबर को रेप की कोशिश की गई थी। मामले का खुलासा होने के बाद बड़ी संख्या में ग्रामीण स्कूल पहुंच गए थे। आरोपी की तस्वीर पर कालिख पोत दी। पीड़िता (13) की मां ने थाने में केस दर्ज कराया है।पीड़िता बच्ची ने बताया, 'मैं स्कूल में खेल रही थी। तभी सर बोले जाकर खिड़की बंद कर दो। इसके

बाद मैंने खिड़की जैसे ही बंद की, सर ने क्लास का गेट बंद कर दिया। उन्होंने मेरा कपड़ा खोल दिया। तभी हम रोने और चिल्लाने लगे। इसके बाद मौके पर दो महिला आईं और हमें बचा लिया।' स्कूल की शिक्षिका गुलअसगरी ने बताया कि 'हम लोगों को 20 अक्टूबर को मामले की जानकारी मिली थी। रसोइया बताई थी। उसने बताया कि सर को नीचे देखे थे। इसके बाद पूरी बात बताई। घटना गुरुवार की है, हम लोगों को शनिवार को पता चला। क्योंकि शुक्रवार को स्कूल बंद रहता है। वहीं, आरोपी शिक्षक के बारे में बताया

कि पता नहीं सर कहां हैं। 21 तारीख को छुट्टी का आवेदन आया है।करते हैं। फिर उनको बुलाएंगे। शाम 7 बजे से लेकर 12 बजे तक लगातार फोन किया गया। लेकिन, वो नहीं आए। इसके बाद प्रशासन का सहारा लिया गया। पंचायती में भी आरोपी नहीं आया पीड़िता के पड़ोसी ने कहा कि 'इस मामले में पंचायत भी हुई थी। सभी लोग बैठे। मेरे और उसके गांव के भी। लेकिन, आरोपी शिक्षक नहीं पहुंचे। फोन करने पर पांच से दस मिनट का बहाना बनाते रहे। पंचायत के मुखिया से बातचीत की तो उन्होंने एफआईआर करने को कहा। पैसा लेकर मामला खत्म करने की बात पंचायत में नहीं हुई। 20 अक्टूबर की रात में सुनने में आया है कि पैसा लेकर मामला खत्म करने की बात हुई तो लड़की के परिजन राजी नहीं हुए। आरोपी शिक्षक का ही कोई आदमी कहने आया था। नाम नहीं खुला है। लेकिन, वही भेजे थे। 2 लाख दिया जा रहा था। घरवालों ने पैसा लेने के बजाय कानूनी तौर से जाना ही उचित समझा।' वहीं, प्रत्यक्षदर्शी महिला स्कूल में रसोइया का काम करती है। उसने बताया कि 'सर बोले खाना बना कर बच्चों को खिला दो। मैंने वो काम खत्म कर लिया। इसके बाद घर से खबर आई कि मुझे बुलाया गया है। वहां जाकर करीब 50KG गेहूं की सफाई की। इसके बाद सूखने को रख दिए।

'सन सिटी' जोधपुर

थार के प्रवेश द्वार राजस्थान की राजधानी जयपुर के बाद सर्वाधिक चहल-पहल वाला शहर है जोधपुर। यह शहर जयपुर के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा रेगिस्तान शहर है। अपनी अनूठी विशेषता के कारण इस शहर को दो उपनाम-'सन सिटी' और 'ब्लू सिटी' मिले हैं। 'सन सिटी' नाम जोधपुर के चमकीले धूप के मौसम के कारण दिया गया है, जबकि 'ब्लू सिटी' का नाम मेहरानगढ़ किले के आसपास स्थित नीले रंग के घरों के कारण दिया गया है। जोधपुर को 'थार के प्रवेश द्वार' के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यह शहर थार रेगिस्तान की सीमा पर स्थित है। जोधपुर शहर को 1459 में राजपूतों के राठौड़ राव जोधा ने स्थापित किया था। इससे पहले इस शहर को 'मारवाड़' नाम से जाना जाता था, किन्तु वर्तमान नाम शहर के संस्थापक राव जोधा के नाम पर है। इस किलेनुमा शहर को पत्थर की एक ऊंची दीवार संरक्षण प्रदान करती है। यह दीवार करीब 10 किलोमीटर लंबी है तथा विभिन्न दिशाओं में इसके 8 प्रवेश द्वार हैं। विशाल किले के अलावा अपने जमाने के खूबसूरत महलों, मंदिरों तथा उत्कृष्ट संग्रहालयों के कारण यह शहर पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। तो आइए, क्यों न चलें उन स्थलों की ओर-

जसवंत थांडा : मेहरानगढ़ किले के नजदीक सफेद संगमरमर की बनी महाराजा जसवंत सिंह की समाधि दर्शनीय है। इसका निर्माण 1899 में किया गया था। यहां के विभिन्न चित्रों और समाधियों में उस युग की शाही वंशावली सुरक्षित है। 4 समाधियां संगमरमर की बनी हैं।

मेहरानगढ़ किला : यह भव्य किला 120 मीटर ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। सामरिक कारणों से 1459 में राव जोधा ने अपनी राजधानी मंडौर से यहां बदल ली थी। इस खूबसूरत किले के अंदर मोती महल, फूल महल और शीश महल आदि मौजूद हैं। ये सभी भवन शिल्पकला व भवननिर्माण कला के अद्भुत नमूने हैं। शाही परिवार की महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने वाली मेहराबदार खिड़कियां, आगे खूबसूरत डिजाइन में निकले छज्जे, बलुई पत्थर पर की गयी सुंदर व बारीक नक्काशी, पत्थर के खुदे हुए लुक आदि काबिलेतारीफ है। इस किले को देखकर मन रोमांचित हो जाता हैं। घूमते समय यहां की अद्भुत कलाएं मोहित कर लेती हैं।

उमैद भवन : इस उत्कृष्ट भवन का निर्माण महाराजा उमैद सिंह ने 1829-42 में करवाया था। उस समय इस खर्चीले भवन के निर्माण में 15 लाख रुपये खर्च हुए थे। यह अकालग्रस्त लोगों की सहायता के लिए महाराजा उमैद सिंह द्वारा किया गया एक सार्थक उपाय था। इसके 347 कमरों को बहुत ही सुरुचिपूर्ण ढंग से संवारा गया था। वर्तमान समय में महल का एक भाग कुछ भूतपूर्व शासकों का निवास स्थान है। वाकी भाग को एक बड़े होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। महल के अंदर खूबसूरत जोधपुर उमैद भवन बाग भी है। महल के कुछ भाग ही पर्यटकों के लिए खुले हैं।

कालियाना झील : यह शहर से 11 किलोमीटर दूर जैसलमेर मार्ग पर कृत्रिम झील के किनारे का क्षेत्र एक खूबसूरत पिकनिक स्थल है। पर्यटक यहां से खूबसूरत सूर्यास्त का आनंद जरूर लेते हैं। यहां का दृश्य ऐसा प्रतीत होता है, जैसे आसमान के कैनवास पर किसी ने अनगिनत रोमांटिक रंग छिड़क दिए हों। यहां का खूबसूरत दिलकश नजारे को पर्यटक दिलों में बसा लेते हैं।

बलसमंद लेक व पैलेस : शहर से 7 किलोमीटर दूर यह एक मनोहारी पर्य टक स्थल है। जहां आम, अमरूद, पपीते के अलावा अन्य घने वृक्षों की खूबसूरती तो देखते बनती ही है, साथ में इन वृक्षों से आती ठंडी हवाएं पर्यटकों का मन मोह लेती हैं। यहां की कृत्रिम झील के किनारे शांत वातावरण में पर्यटक अद्भुत शांति महसूस करते हैं। इस झील का निर्माण 1159 में बालक राव परिहार ने किया था।

जोधपुर में कई मंदिर दर्शनीय हैं - महामंदिर मंदिर, रसिक बिहारी मंदिर, गणोश मंदिर, बाबा रामदेव मंदिर, संतोषी माता मंदिर, चामुंडा माता मंदिर और अचलनाथ शिवालय लोकप्रिय मंदिरों में हैं।

मंडौर बाग : शहर से 9 किलोमीटर दूर स्थित मंडौर मरवाड़ की पुरानी राजधानी रही है, जिसे सामरिक कारणों से बदलना पड़ा। आज भी इसके भग्नावशेष मौजूद हैं। अब यह खूबसूरत घने बागों के बीच स्थित पिकनिक स्थल बन गया है। यहां भी पर्यटकों को भरपूर सुकून मिलता है और आनंद की अनुभूति होती है।

कब जाएं

इस क्षेत्र में वर्षभर गर्म और शुष्क जलवायु बनी रहती है। ग्रीष्मकाल, मानसून और सर्दियां यहां के प्रमुख मौसम हैं। इसलिए साल के किसी भी महीने में जोधपुर का कार्यक्रम बना सकते हैं। वैसे सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च तक है।

कैसे जाएं

जोधपुर शहर का अपना हवाई अड्डा और रे लवे स्टेशन है। प्रमुख शहरों से उड़ानें और रेल सुविधाएं हैं। सड़क मार्ग से भी प्राय- सभी बड़े शहरों से पंहुच सकते हैं।

गंगा के किनारे बसी बाबा विश्वनाथ की काशी

लोक, कला और पर्यटन के मामले में वाराणसी बेहद समृद्ध है। यहां देश-विदेश से पर्यटक आते हैं। यहां गंगा के घाट सदियों पुराना इतिहास समेटे हुए हैं। भगवान शिव का प्रसिद्ध तीर्थस्थल होने के कारण भी यहां साल भर पर्यटक खिंचे चले आते हैं। यह शिव की काशी नगरी है। साक्षात् विराजमान हैं महादेव यहां। वाराणसी की यात्रा एक तरह से शिव से मुलाकात है। मन का मैल धोना हो, मन का बोझ उतारना हो था फिर चाहिए मुक्ति तो एक बार काशी चले आइए और गंगा तट पर स्नान कर महादेव से साक्षात्कार कीजिए।

ये काशी ही है जो पूरी दुनिया को बुलाती है- आओ मुझसे मिलो। यहां के घाट, मैरी चर्च, भारत कला म्यूजियम, राम नगर दुर्ग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय व नंदेश्वर कोढी दर्शनीय हैं। इन सबके अलावा यहां का काशी विश्वनाथ मंदिर विश्वविख्यात है। इसके अलावा तुलसी मनस मंदिर, भारत माता मंदिर और दुर्गा मंदिर बेहतरीन मंदिरों में से एक है।

वाराणसी के आसपास भी पर्यटक स्थल हैं, जहां आप भ्रमण कर सकते हैं जैसे चुनार, सारनाथ और जौनपुर। चंद्रप्रभा वाइल्ड लाइफ सैंक्चुरी और कैमूर वाइल्ड लाइफ सैंक्चुरी एडवेंचर प्रेमियों के लिए बेहतरीन टूरिस्ट स्पॉट हैं। वाराणसी में साल भर मेले और त्योहार पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने रहते हैं। इनमें से कुछ त्योहार प्रमुख माने जाते हैं जैसे कार्तिक पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, गंगा महोत्सव, रामलीला, हनुमान जयंती, पंच कोशी परिक्रमा और महाशिवरात्रि।

वाराणसी के मंदिर श्रद्धालुओं के लिए मुख्य आकर्षण माने जाते हैं। यहां के मंदिर देखने दूर-दूर से पर्यटक आते हैं। बनारस के ज्यादातर मंदिर पुराने शहर के रास्ते में हैं। सबसे मुख्य मंदिरों में काशी विश्वनाथ मंदिर हैं, जहां भगवान शिव स्वयं विराजमान हैं। पूरे साल यहां भगवान शिव के भक्तों का तांता लगा रहता है। इस मंदिर में शाम की आरती बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इसे देखने श्रद्धालु उमड़ पड़ते हैं।

बनारस शहर की पवित्रता यहां की बहती नदी गंगा के साथ भी जुड़ी है। बनारस स्थित गंगा घाट पर पर्यटकों और वहां के स्थानीय लोगों की भीड़ लगी रहती हैं। दश्वमेघ घाट, अस्सी घाट, बहना संगम, पंचगंगा और मणि कर्णिका, यहां के मुख्य घाटों में से हैं। इन घाटों के पीछे कई किवदंतियां हैं। सुबह इन घाटों पर लोगों की भीड़ रहती है, जो गंगा नदी में डुबकी लगाकर उगते सूरज की आराधना करते हैं।

वाराणसी से नजदीक हैं सारनाथ, जहां भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था प्रबोधन पाने के बाद। सम्राट अशोक ने बाद में यहां स्तूप भी बनवाया था। सारनाथ में कई सारे बौध स्मारक बने। बुद्ध पूर्णिमा का त्योहार यहां उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

वाराणसी आप कभी भी जा सकते हैं। दिल्ली से सीधी ट्रेन वाराणसी जाती है। कोलकाता राजधानी एक्सप्रेस, शिव गंगा एक्सप्रेस और काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से पर्यटक काशी पहुंच सकते हैं। यहां कभी भी घूमने जाया जा सकता है। मगर फरवरी से लेकर अप्रैल तक का समय अच्छा रहता है।

घूमने बिहार जाएँ तो इन दस ठिकानों को न भूल जाएँ!

पर्यटन के हिसाब से बिहार समृद्ध है। यहां देखने के लिए बहुत कुछ हैं। बिहार के नाम विहारा से बनाया गया। मतलब भ्रमण करने की जगह। विश्व का पहला विश्वविद्यालय स्थापित करने का गौरव बिहार को ही हासिल है। विभिन्न धर्मों के स्मारक भी यही देखने को मिलते हैं। बिहार में ऐसी दस मुख्य जगह हैं, जहां आप घूम सकते हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय- पांचवीं शताब्दी में बना यह विश्वविद्यालय विश्व का पहला रेसिडेंसियल यूनिवर्सिटी है। यहां ज्ञान की रोशनी सभी को अलोकित करती है। किसी समय लगभग 2000 शिक्षक देश-विदेश से आए दस हजार छात्रों को पढ़ाते थे। यहां बुद्ध ने भी एक शिक्षक की भूमिका निभाई। महान विद्वान और चीनी पर्यटक ह्यून सेंग भी यहां के छात्र रहे थे। यह विश्वविद्यालय कुशान वास्तुकला का बेहतरीन नमूना हैं। बरसों बंद रहने के बाद आज यह विश्वविद्यालय आंशिक रूप से फिर से शुरू हो गया है।

बोधि वृक्ष- पटना से सौ किलोमीटर दूर गया में बोधि वृक्ष बौद्धों का महत्वपूर्ण तीर्थस्थल हैं। पूरे विश्व से बौद्ध समुदाय के लोग इस वृक्ष के सामने नतमस्तक होते हैं। कहते हैं भगवान बुद्ध की ज्ञान इसी वृक्ष के नीचे प्राप्त हुआ था। वृक्ष के पास ही महा बोधि मंदिर है, जो बौद्ध धर्म अपनाने वालों के लिए पवित्र स्थल हैं।

मचालिंडा झील- मचालिंडा झील के शेषनाग के नाम पर पड़ा है। दरअसल, सांपों के राजा मचालिंडा ने भगवान बुद्ध को इसी झील के पास उनके छठे हफ्ते के ध्यान के समय भयंकर आंधी और लहरों से बचाया था। इस वजह से यह जगह मचालिंडा के नाम से जाना जाता हैं। बोध गया में इस जगह के आस-पास की हरियाली इसे बेहतरीन पर्यटक स्थल बनाती हैं।

गिद्धहकुटा पीक- यह पीक वल्चर पीक के नाम से जाना जाता हैं। राजगीर स्थित यह पीक बिल्कुल एक गिद्ध की तरह हैं। महात्मा बुद्ध ने इस पीक पर अपने कुछ प्रसिद्ध उपदेश दिए थे और तब से यह बौधों के लिए पवित्र स्थल बन गया।

राजगीर का गर्म कुंड- राजगीर का हॉट स्प्रिंग्स पर्यटकों के लिए खास जगह हैं। वैभव पहाड़ियों के नीचे इस गर्म कुंड में नहाने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं। इस कुंड में पानी सप्तधारा से आता हैं। यह धारा सप्तपर्णी गुफा के पीछे से बहती हैं। कहते हैं यह कुंड अपने आप में औषधीय गुण समेटे हुए है। ब्रहमकुंड यहां का सबसे गर्म कुंड माना जाता है। इसका तापमान लगभग 450 डिग्री सेल्सियस होता हैं। कहा जाता है भगवान बुद्ध और महावीर ने भी इस कुंड में स्नान किया था।

बक्सर फोर्ट- गंगा नदी के तट के साथ बसे बक्सर के प्राचीन किले को 1054 में बनाया गया था। इस किले की बनावट बेहद उत्कृष्ट हैं। यह किला अंदर से भी बेहद आकर्षक हैं। अगर आप बक्सर जाएं तो इस किले का भ्रमण करना न भूलें। साथ ही यहां का गौरी शंकर मंदिर और नाथ बाबा मंदिर भी दर्शनीय है।

नवलखा पैलेस- मधुबनी जिले के राजनगर में इस पैलेस का निर्माण 17वीं शताब्दी में हुआ था। दरभंगा के महाराजा रामेश्वर सिंह ने इसका निर्माण कराया था। 1934 में आए भूकम्प के कारण इस पैलेस को काफी क्षति पहुंची थी। उसके बाद इसका निर्माण नहीं हो पाया। इसके अलावा कमला नदी के पास मां काली मंदिर और मां दुर्गा को समर्पित राजनगर पैलेस यहां का मुख्य पर्यटक स्थल हैं।

हेन सैंग मेमोरियल हॉल- प्रसिद्ध चीनी विद्वान ह्यून सेंग की याद में बनाया गया यह हॉल अद्भुत शिल्पकला का उदाहरण हैं। कहते हैं उन्होंने भारत में अपने बारह साल यहीं गुजारे थे। आचार्य शील भ्रद की छत्रछाया में उन्होंने यहां योग सीखा।

जलमंदिर- झील के बीचोंबीच कमल के फूल से घिरा है। यह जलमंदिर। ऐसा कहा जाता है। भगवान महावीर के बड़े भाई राजा नंदीवर्धन ने इसे बनाया था। यह मंदिर विमान के आकार में है। 600 फीट लंबा पुल इस मंदिर को किनारे से जोड़ता हैं। इसी जगह भगवान महावीर ने महाप्रयाण किया था।

पटना म्यूजिक- 1917 में बना म्यूजिक पर्यटकों के लिए खास आकर्षण केंद्र हैं। राजपूत और मुगल वास्तुकला से समृद्ध इस म्यूजियम में पेटिंग्स, पौराणिक चीजें और अन्य प्रतिरूप रखे जाए हैं। यहां हिंदू और बौध धर्म की वस्तुओं का विशेष संग्रह हैं। 20 करोड़ साल पुराने पेड़ का अवशेष भी यहां रखा हैं।

संस्कृति के हिसाब से बिहार में देखने के लिए बहुत कुछ हैं। इन पर्यटन स्थलों को देखने के लिए आप भी रेलमार्ग या वायुमार्ग से यहां आ सकते हैं।

न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में वापसी के लिए उतरेगी टीम इंडिया

पुणे (एजेंसी)। पहले टेस्ट मैच में अप्रत्याशित हार से आहत भारतीय टीम को न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला में वापसी करने के लिए गुरुवार से यहां शुरू हो रहे दूसरे टेस्ट मैच में संतुलित टीम चयन करना होगा। पहले टेस्ट में भारत की पहली पारी महज 46 रन पर सिमट गई, जबकि दूसरी पारी में सुधार के बावजूद टीम को आठ विकेट से हार का सामना करना पड़ा।

इस हार के कारण भारत को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की तालिका में कुछ अंक गंवाने पड़े हैं, और आगामी ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले टीम की प्राथमिकता न्यूजीलैंड के खिलाफ अगले दो मैचों में अच्छा प्रदर्शन करना होगा। पुणे के एमसीए स्टेडियम की पिच को भारतीय परिस्थितियों के अनुसार तैयार किया गया है, जिसमें घास नहीं है और यह काली मिट्टी से बनी है, जिससे न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजों को बेंगलुरु जैसी उछाल नहीं मिलेगी।

पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजों विलियम ओरूर्के, मैट हेनरी और टिम साउदी ने भारतीय बल्लेबाजों को परेशान किया। भारत टर्निंग विकेट तैयार कर सकता है, लेकिन इस पर ध्यान देना जरूरी है, क्योंकि अतीत में ऐसा दांव उल्टा भी पड़ चुका है। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया ने आठ साल पहले इसी पिच पर भारत को 333 रन से हराया था।

टीम में कुछ बदलाव की उम्मीद है। शुभमन गिल वापसी के लिए तैयार हैं, और केएल राहुल या सरफराज खान में से किसी एक को उनके लिए जगह बनानी होगी। मुख्य कोच गौतम गंभीर राहुल को अधिक मौके देने के पक्ष में हैं, जबकि सरफराज ने बेंगलुरु में 150 रन बनाकर अपनी स्थिति मजबूत की है। भारतीय टीम को सीनियर बल्लेबाजों रोहित शर्मा और विराट कोहली से बड़ी पारी की उम्मीद है। कोहली ने 2019-20 के सत्र में यहां 254 रन की नाबाद पारी खेली थी और वह उस प्रदर्शन से प्रेरणा लेना चाहेंगे।

भारत की गेंदबाजी भी चिंता का विषय है, खासकर तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज के निरंतर खराब प्रदर्शन के कारण। टीम प्रबंधन आकाशदीप को मौका देने पर विचार कर सकता

है। दूसरी तरफ, अगर पिच से स्पिन गेंदबाजों को मदद मिलती है, तो रविचंद्रन अश्विन और रविंद्र जडेजा इसका पूरा फायदा उठाने के लिए तैयार रहेंगे। न्यूजीलैंड की टीम भी पहले टेस्ट में रचिन रविंद्र के शतक के बाद अन्य बल्लेबाजों से उपयोगी योगदान की उम्मीद कर रही है। भारतीय टीम को वापसी करने के लिए इस मैच में अपनी पूरी ताकत लगानी होगी।

टीम

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), जसप्रीत बुमराह (उप-कप्तान), यशस्वी जयसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, केएल राहुल, सरफराज खान, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रविचंद्रन अश्विन, रविंद्र जड़ेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, आकाश दीप, वाशिंगटन सुंदर।

न्यूजीलैंड : टॉम लैथम (कप्तान), डेवोन कॉनवे, केन विलियमसन, मार्क चैपमैन, विल यंग, डेरिल मिशेल, ग्लेन फिलिप्स, माइकल ब्रेसवेल, मिशेल सेंटनर, रचिन रवींद्र, टॉम ब्लंडेल (विकेटकीपर), अजाज पटेल, मैट हेनरी, टिम साउदी,, विलियम ओरूर्के, जैकब डफी।

एमएस धोनी आईपीएल 2025 में खेलेंगे या नहीं? सस्पेंस बरकरार, मेगा ऑक्शन से पहले करेंगे सीएसके के साथ मीटिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व कप्तान और दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज एमएस धोनी आईपीएल 2025 में खेलेंगे या नहीं, फिलहाल अभी ये कंफर्म नहीं हुआ है। धोनी रिटेंशन डेडलाइन से पहले चेन्नई सुपर किंग्स के साथ मीटिंग करेंगे। जिसके बाद फ्रेंचाइजी कोई फैसला करेगी। फिलहाल, धोनी की कप्तान में सीएसके ने पांच आईपीएल ट्रॉफी जीती है। लेकिन आईपीएल 2024 में उन्होंने कप्तानी छोड़ दी थी जिसके बाद ऋतुराज गायकवाड़ को कप्तानी मिली।

स्पोर्ट्स तक ने सीएसके के एक करीबी सूत्र के हवाले से बताया कि सीएसके मैनेजमेंट ने 43वर्षीय धोनी से संपर्क किया, जिसके बाद पता चला कि वह 28 अक्टूबर तक उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में धोनी के सीएसके अधिकारियों से 29 या 30 अक्टूबर तक मिलने की उम्मीद है और फिर रिटेंशन को अंतिम रूप दिया जाएगा। सभी फ्रेंचाइजियों को 31 अक्टूबर तक रिटेंसन लिस्ट जारी करनी है। वहीं एक टीम पांच खिलाड़ियों को रिटेन कर सकती है। जबकि एक खिलाड़ी के लिए ऑक्शन में आरटीएम यानी राइट टू मैच कार्ड इस्तेमाल किया जा सकता है।

एक फ्रेंचाइजी के पास ज्यादा से ज्यादा 6 खिलाड़ियों को रिटेन करने का मौका है। टीम ज्यादा से ज्यादा 4 कैप्ड और 2 अनकैप्ड प्लेयर को रिटेन कर सकती है। जिन भारतीय खिलाड़ियों ने कम से कम पांच कैलेंडर वर्ष में कोई इंटरनेशनल मैच नहीं खेला है उन्हें अनकैप्ड माना जाएगा।

आईसीसी रैंकिंग : टेस्ट में विराट कोहली से आगे निकले ऋषभ पंत

दुबई (एजेंसी)। ऋषभ पंत बुधवार को जारी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की बल्लेबाजों के लिए टेस्ट रैंकिंग में अपने सुपरस्टार भारतीय साथी विराट कोहली को पीछे छोड़कर छठे स्थान पर पहुंच गए। पंत ने न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी में 99 रन बनाए थे जिससे उन्हें रैंकिंग में तीन स्थान का फायदा हुआ। दूसरी तरफ कोहली 70 रन बनाने के बावजूद एक पायदान नीचे आठवें स्थान पर खिसक गए हैं।

सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल चौथे स्थान पर भारत के सर्वोच्च रैंकिंग वाले बल्लेबाज बने हुए हैं। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा दो पायदान नीचे गिरकर श्रीलंका के दिमुथ करुणारत्ने के साथ संयुक्त 15वें स्थान पर हैं। इंग्लैंड के स्टार बल्लेबाज जो रूट बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। न्यूजीलैंड के रचिन रवींद्र (36 पायदान ऊपर 18वें स्थान पर) और डेवोन कॉनवे (12 पायदान ऊपर 36वें स्थान पर) ने बल्लेबाजी रैंकिंग में लंबी छलांग लगाई जबकि उनके साथी मैट हेनरी (दो पायदान ऊपर नौवें स्थान पर) गेंदबाजों की रैंकिंग में शीर्ष 10 में पहुंच गए हैं।

महिला एक दिवसीय: भारत और न्यूजीलैंड आज आमने-सामने

-वनडे विश्व कप की तैयारी शुरू करने उतरेगी भारतीय महिला टीम

अहमदाबाद (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम अब न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों की श्रृंखला से अगले साल होने वाले वनडे विश्व कप की तैयारी कर रही है। तीन मैचों की श्रृंखला का पहला मुकाबला 24 अक्टूबर को होगा, दूसरा 27 और तीसरा 29 को खेला जाएगा। तीनों मुकाबले अहमदाबाद में ही खेले जाएंगे। इसमें टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर की कप्तानी भी दांव पर लगी हुई है।

हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित टी20 विश्व कप में भारतीय टीम का प्रदर्शन निराशाजनक रहा था, जहां वे ग्रुप चरण से ही बाहर हो गई थीं। हरमनप्रीत ने इस टूर्नामेंट में भारतीय टीम के लिए सर्वाधिक रन बनाए, फिर भी उनकी कप्तानी की आलोचना की गई। ऐसे में इस श्रृंखला में उनके प्रदर्शन और नेतृत्व की परीक्षा होगी। हरमनप्रीत के लिए यह श्रृंखला इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें अपने खेल और टीम को एक नई दिशा देने की आवश्यकता है। टीम के सामने चुनौती यह होगी कि वे न्यूजीलैंड जैसी मजबूत टीम के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन कर सकें। कीवी टीम ने हाल ही में टी20 विश्व कप जीतकर आत्मविश्वास हासिल किया है, और वे अपने विजय अभियान को जारी रखना चाहेंगी। इस श्रृंखला में भारतीय टीम को विकेटकीपर बल्लेबाज रिचा घोष की सेवाएं नहीं मिलेंगी, जो अपनी 12वीं की परीक्षा के कारण अनुपस्थित रहेंगी। इसके अलावा, अनुभवी ऑलराउंडर आशा सोबना भी चोटिल होने के कारण चयन के लिए उपलब्ध नहीं हैं, और तेज गेंदबाज पूजा वस्त्राकर भी पिछले टूर्नामेंट में चोटिल होने के कारण इस श्रृंखला से बाहर हैं।

भारतीय टीम में नए चेहरों के तौर पर तेजल हसब्निस, साइमा ठाकोर, और प्रिया मिश्रा को शामिल किया गया है, जो युवा प्रतिभाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। टीम की सफलता काफी हद तक सलामी बल्लेबाजों शेफाली वर्मा और स्मृति मंधाना के प्रदर्शन पर निर्भर करेगी। ये दोनों बल्लेबाज पिछले विश्व कप में निरंतरता नहीं दिखा पाईं, लेकिन इस बार उनके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारी होगी। कप्तान हरमनप्रीत और जेमिमा रोड्रिग्स को मध्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, विशेषकर तब जब टीम को रिचा घोष की कमी खलेगी। यह श्रृंखला नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेली जाएगी, और सभी खिलाड़ियों की नजरें एक सफल अभियान पर होंगी।

टीम इस प्रकार हैं

भारत : हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), शेफाली वर्मा, डी हेमलता, दीप्ति शर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर), उमा छेत्री (विकेटकीपर), सयाली सतगरे, अरुंधति रेड्डी, रेणुका सिंह ठाकुर, तेजल हसब्निस, साइमा ठाकोर, प्रिया मिश्रा, राधा यादव, श्रेयंका पाटिल।

न्यूजीलैंड: सोफी डिवाइन (कप्तान), सुजी बेट्स, एडेन कार्सन, लॉरेन डाउन, इज़ी गेज़ (विकेटकीपर), मैडी ग्रीन, ब्रुक हॉलिडे, पॉली इंगलिस (विकेटकीपर), फ्रान जोनास, जेस केर, मेली केर, मौली पेनफोल्ड, जॉर्जिया प्लिमर, हन्ना रोवे, ली ताहुहु।

रोहित शर्मा का रिकॉर्ड टूटा, सिकंदर रजा ने 33 गेंदों पर ठोका टी20 का सबसे तेज शतक

खेल डैस्क ।सिकंदर रजा ने बुधवार को गाम्बिया के खिलाफ टी20 मैच में रिकॉर्डतोड़ शतक जड़कर इतिहास रच दिया। जिम्बाब्वे के ऑलराउंडर ने आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप सब रीजनल अफ्रीका क्वालीफायर ग्रुप बी मैच में 33 गेंदों में शतक बनाया, जो टेस्ट खेलने वाले देश के किसी खिलाड़ी द्वारा बनाया गया सबसे तेज शतक है। कप्तान रजा ने आगे बढ़कर अपनी टीम का नेतृत्व किया और अपनी नाबाद 133 रन की पारी के दौरान पार्क के चारों ओर गाम्बिया के गेंदबाजों की धुनाई की। उन्होंने 43 गेंदों की पारी में 7 चौके और 15 छक्के लगाए।

भारत एक मजबूत टीम, जो किसी के सामने झुकना नहीं चाहती : ब्रेट ली

सिडनी । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली ने भारतीय टीम को एक ऐसी 'मजबूत टीम' बताया है जो किसी के सामने झुकना नहीं चाहती। उन्होंने साथ ही अपने हमवतन खिलाड़ियों को आगाह किया जो आगामी पांच मैचों की टेस्ट श्रृंखला में टीम इंडिया से भिड़ेंगे। बेंगलुरू में पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत की आठ विकेट की हार के बाद ली की यह प्रतिक्रिया आई है। भारत की नजरें लगातार तीसरी बार विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करने पर टिकी हैं और टीम बोर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में अपने खिताब की रक्षा के लिए अगले महीने ऑस्ट्रेलिया का दौरा करेगी। ली ने कहा, 'आज के दिन और पीढ़ी में भारत शक्तिशाली टीम है जो किसी के सामने झुकना नहीं चाहती। उन्हें पता है कि कैसे जीत दर्ज करनी है और उन्हें पता है कि वे ऑस्ट्रेलिया को कैसे हरा सकते हैं। उन्हें पता है कि वे न्यूजीलैंड को कैसे हरा सकते हैं। उन्हें पता है कि वे किसी भी दिन किसी भी टीम को हरा सकते हैं।' बेंगलुरू टेस्ट में न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत के प्रदर्शन पर ली ने कहा कि उन्हें लगता है कि वे शायद 'बैजबॉल' (बेहद आक्रामक होकर खेलने की रणनीति) से प्रभावित हो गए थे जिसके कारण कुछ खराब शॉट खेले। ली ने कहा, 'भारत रक्षात्मक होकर नहीं खेलना चाहता। शायद बैजबॉल दुनिया भर के अन्य क्रिकेटरों को भी प्रभावित कर रहा है।' उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि भारत जिस तरह खेला उस पर उन्हें गर्व नहीं होगा। उन्होंने कुछ बेहद ढीले शॉट खेले।'

पेनल्टी कॉर्नर बना कमजोर कड़ी, युवा जर्मन टीम से हारी भारतीय हॉकी टीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। आठ पेनल्टी कॉर्नर और एक पेनल्टी स्ट्रोक मिलने के बावजूद गोल नहीं कर सकी भारतीय हॉकी टीम को दिल्ली में एक दशक बाद हो रहे अंतरराष्ट्रीय हॉकी मैच में जर्मनी की युवा टीम ने बुधवार को 2.0 से हरा दिया।

मेजर ध्यानचंद स्टेडियम पर 11 साल बाद हो रहे इस मुकाबले में जर्मनी का पलड़ा पहले से आखिरी मिनट तक भारी रहा जिसने भारतीय टीम को पूरे समय दबाव में रखा। पेरिस ओलंपिक में दस गोल करने वाले कप्तान हरमनप्रीत सिंह सीनियर स्तर पर इस मैदान पर अपने पहले मैच में पेनल्टी स्ट्रोक पर गोल नहीं कर सके जबकि सर्कल के भीतर स्ट्राइकर किसी मूव को अंजाम तक नहीं पहुंचा पाए।

जर्मनी के लिए हेनरिक मर्टजेंस (तीसरा मिनट) और कप्तान लुकास विंडफेडर (30वां) ने गोल दागे। जर्मन गोलकीपर जोशुआ एन ओयेकबू ने भारत के हर वार को नाकाम किया और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ड्रैग फ्लिकरों में शुमार हरमनप्रीत को भी खामोश रखा। दिल्ली में बरसों बाद मैच देखने के लिये सप्ताह के बीच और दिन में खेल होने के बावजूद मैदान पर जमा छह से सात हजार

दर्शकों को भारत के प्रदर्शन से निराशा हाथ लगी।

विश्व कप और राष्ट्रमंडल खेल 2010 के अलावा एशियाई खेल 1982 के कई शानदार मुकाबलों के गवाह रहे इस स्टेडियम पर यह बिल्कुल ही एकतरफा मैच था। आधे से ज्यादा युवा खिलाड़ियों के साथ आई जर्मन टीम ने तीसरे ही मिनट में हेनरिक मर्टजेंस के गोल के दम पर बढ़त बना ली। इसके चार मिनट बाद जर्मनी को पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन भारत के रेफरल पर उसे खारिज कर दिया गया।

भारत को आठवें मिनट में मैच का पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन सुखजीत सिंह गोल करने में नाकाम रहे। पहले क्वार्टर में जर्मनी ने एक गोल से बढ़त बना ली थी। दूसरे क्वार्टर में भारत को चार पेनल्टी कॉर्नर और एक पेनल्टी स्ट्रोक मिला लेकिन गोल नहीं हो सका। क्वार्टर के छठे मिनट में मनप्रीत सिंह ने संजय को अच्छा पास दिया जिसने दिलप्रीत सिंह को गेंद सौंपी लेकिन उनका शॉट बाहर से निकल गया। अगले मिनट भारत को पेनल्टी कॉर्नर मिला लेकिन संजय गोल नहीं कर सके।

भारत को 25वें मिनट में मिले पेनल्टी कॉर्नर पर अनुभवी अमित रोहिदास चूके तो 26वें मिनट में मिले दो पेनल्टी कॉर्नर हरमनप्रीत ने गंवाए। भारत को 27वें मिनट में मिले पेनल्टी कॉर्नर पर दिलप्रीत ने रिबाउंड पर गोल कर दिया था लेकिन जर्मनी ने रेफरल लिया जिसके बाद भारत को पेनल्टी स्ट्रोक मिला। हरमनप्रीत के सीधे शॉट को जब जर्मन गोलकीपर ने रोका तो दर्शकों को विश्वास ही नहीं हुआ। जर्मनी को दूसरे क्वार्टर के आखिरी मिनट में मिले पेनल्टी कॉर्नर को लुकास ने गोल में बदला।

हाफटाइम तक जर्मनी के पास दो गोल की बढ़त थी। तीसरे क्वार्टर में भी भारतीय फॉरवर्ड पंक्ति गेंद को फिनिशिंग तक पहुंचाने में नाकाम रही। भारत को मिडफील्ड में हार्दिक सिंह की कमी बहुत खली जो चोट के कारण बाहर हैं। भारतीय टीम को 40वें मिनट में फिर दो पेनल्टी कॉर्नर मिले लेकिन जर्मनी की टीम पूरी तैयारी के साथ आई थी और मेजबान को कामयाबी हाथ नहीं लगने दी। इस बीच अगले मिनट में पलटवार पर जर्मनी ने पेनल्टी कॉर्नर बनाया लेकिन कृशन बहादुर सिंह ने उसे बचा लिया। भारत और जर्मनी कल दूसरा और आखिरी मैच यहीं खेलेंगे।

बॉर्डर-गावस्कर श्रृंखला को लेकर मैं काफी उत्साहित हूं : पैट कमिंस

पर्थ ।ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने कहा है कि उनकी टीम भारत के खिलाफ होने वाली बॉर्डर गावस्कर श्रृंखला में अपनी गलतियों को सुधारने के लिए तैयार है। यह श्रृंखला 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होगी, जिसमें दोनों टीमों के बीच पांच टेस्ट मैच खेले जाएंगे। कमिंस ने इस बात पर जोर दिया कि ऑस्ट्रेलिया को एक दशक बाद ट्रॉफी अपने नाम करने का लक्ष्य है, खासकर जब से भारत ने ऑस्ट्रेलिया में पिछली दो श्रृंखलाएं जीती हैं। कमिंस ने कहा, हमने एक ब्रेक लिया था और अब इस श्रृंखला को लेकर मैं काफी उत्साहित हूं। भारत के खिलाफ पिछली कुछ टेस्ट श्रृंखलाओं में हमें किस्मत का साथ नहीं मिला, लेकिन ऑस्ट्रेलिया में खेलना हमारे लिए हमेशा गर्व की बात है। उन्होंने याद दिलाया कि भारत ने 2020-21 में बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी जीती थी, जब ऋषभ पंत ने गाबा में शानदार 89 रन बनाकर टीम को जीत दिलाई थी। उस श्रृंखला में भारतीय टीम पहले टेस्ट में केवल 36 रन पर आउट हुई थी। कमिंस ने कहा, पिछली दो श्रृंखलाएं काफी पहले खेली गई थीं, इसलिए हमें उन्हें भुलाना होगा। ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलने के दौरान प्रशंसकों और मीडिया की अपेक्षाएं बहुत अधिक होती हैं। पिछले मैच कठिन थे, खासकर गाबा में आखिरी सत्र में। हम जीत नहीं सके, लेकिन इस बार हम अपनी गलतियों को सुधारने पर ध्यान देंगे। उन्होंने ऋषभ पंत को भारत का एक्स फैक्टर कहा, यह कहते हुए कि उनका फोकस अपनी टीम की गलतियों को सुधारने पर है। कमिंस ने कहा, ऋषभ ने पिछली बार शानदार प्रदर्शन किया था। वह मध्यक्रम में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं और विकेट के पीछे वह हमेशा बोलते रहते हैं, जो हमारे लिए हंसी का कारण बनता है। जब शुभमन गिल और यशस्वी जायसवाल के बारे में पूछा गया, तो कमिंस ने कहा, मैंने शुभमन के खिलाफ खेला है, लेकिन जायसवाल को ज्यादा खेलते नहीं देखा। दोनों युवा खिलाड़ी हैं और विभिन्न प्रारूपों में अच्छी पारी खेल चुके हैं। अभी श्रृंखला में समय है, इसलिए मैं अभी रणनीति के बारे में कुछ नहीं कह सकता। कमिंस का यह बयान आगामी श्रृंखला के प्रति उनकी तैयारियों और रणनीतियों की दिशा में संकेत करता है, जिससे क्रिकेट प्रशंसकों में उत्साह बढ़ गया है।

मुश्फिकुर रहीम ने बनाए बांग्लादेश के लिए ऐतिहासिक रिकॉर्ड

ढाका । विकेटकीपर-बल्लेबाज मुश्फिकुर रहीम ने बांग्लादेश की राष्ट्रीय टीम से खेलते हुए 24 साल पूरे कर लिए हैं, और इस दौरान उन्होंने क्रिकेट में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। दिलचस्प बात यह है कि इतने ही साल भारतीय दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने भी खेला था। वर्तमान में, मुश्फिकुर ने 93 टेस्ट मैच खेले हैं और हाल ही में ढाका के मैदान पर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट के दौरान एक नया मील का पत्थर हासिल किया है। मुश्फिकुर रहीम टेस्ट क्रिकेट में 6,000 रन तक पहुंचने वाले बांग्लादेश के पहले खिलाड़ी बन गए हैं। यह उपलब्धि उनके करियर का एक महत्वपूर्ण क्षण है और यह दर्शाता है कि उन्होंने बांग्लादेश क्रिकेट में कितना बड़ा योगदान दिया है। बांग्लादेश के दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज तमीम इकबाल हैं, जिन्होंने 70 टेस्ट (134 पारियों) में 5,134 रन बनाए हैं। वहीं, शाकिब अल हसन और मोमिनुल हक क्रमशः 4,609 और 4,269 रन के साथ दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। मुश्फिकुर रहीम ने 2005 में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया था और तब से वह इस प्रारूप में बांग्लादेश के लिए एक मजबूत स्तंभ बने रहे हैं। उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की बात करें, तो यह श्रीलंका के खिलाफ आया है, जहाँ उन्होंने 17 टेस्ट मैचों (30 पारियों) में 1,346 रन बनाए हैं, जिसमें 3 शतक भी शामिल हैं। इसके अलावा, मुश्फिकुर ने भारत, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज और जिम्बाब्वे के खिलाफ भी 500 से अधिक रन बनाए हैं, जो उनकी बल्लेबाजी कौशल का एक और प्रमाण है। मुश्फिकुर की यह उपलब्धि बांग्लादेश क्रिकेट के लिए एक गर्व का क्षण है, और उनकी यात्रा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। उनकी मेहनत और समर्पण ने उन्हें बांग्लादेश क्रिकेट का एक प्रमुख चेहरा बना दिया है।

संजू सैमसन के साथ इन खिलाड़ियों को रिटेन करेगा राजस्थान रॉयल्स, युजवेंद्र चहल के लिए बनाई गई ये योजना

नई दिल्ली। आईपीएल 2025 से पहले खिलाड़ियों के रिटेंशन को लेकर चारों तरफ काफी चर्चा चल रही है। कहा जा रहा है कि अगले महीने आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन का आयोजन होगा। वहीं 31 अक्टूबर तक सभी फ्रेंचाइजियों को रिटेंशन लिस्ट बीसीसीआई को सौंपनी है। इसी कड़ी में राजस्थान रॉयल्स ने भी अपनी रिटेंशन लिस्ट तैयार कर ली है। जिसमें टीम के कप्तान संजू सैमसन ओपनर यशस्वी जायसवाल और ऑलराउंडर रियान पराग को रिटेन किया जा सकता है। राजस्थान ने एक बार फिर से राहुल द्रविड़ को टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया है। साथ ही माना जा रहा है कि उनके आने के बाद इस टीम में कई बदलाव देखने को मिल सकते हैं। द्रविड़ के आने के बाद राजस्थान को उम्मीद है कि उनकी देखरेख में ये टीम दोबारा आईपीएल विजेता बनेगी। वहीं इंडिया टुडे के अनुसार, इस सीजन के लिए राजस्थान संजू, यशस्वी और रियान पराग को पक्का रिटेन कर सकती है। इस पर सहमति भी बन चुकी है। इन तीनों खिलाड़ियों ने इस टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है और तीनों टीम इंडिया का भी हिस्सा हैं।

आमिर खान की दंगल ने 2,000 करोड़ कमाए, लेकिन मेरे परिवार को केवल 1 करोड़ मिले : बबीता फोगट

नई दिल्ली (एजेंसी)। बबीता फोगट ने हाल ही में ब्लॉकबस्टर फिल्म 'दंगल' से अपने परिवार को मिली कमाई के बारे में एक चौंकाने वाला खुलासा किया। फोगट परिवार की वास्तविक जीवन की कहानी पर आधारित इस फिल्म ने दुनिया भर में लगभग 2,000 करोड़ रुपए कमाए। हालांकि, बबीता ने खुलासा किया कि उनके परिवार को मुआवजे के तौर पर केवल 1 करोड़ रुपए मिले।

एक साक्षात्कार में बबीता ने यह चौंकाने वाली जानकारी साझा की जिससे एंकर हैरान रह गए। बातचीत के दौरान, एंकर ने यह पूछकर राशि की पुष्टि की, 'दंगल से कमाए गए 2,000 करोड़ रुपये में से, फोगट परिवार को केवल 1 करोड़ रुपए मिले?' पहलवान से राजनेता बनीं बबीता ने सिर हिलाकर और दृढ़ता से 'हां' कहकर इसकी पुष्टि की। इसके अलावा, जब उनसे पूछा गया कि क्या इससे उन्हें निराशा हुई, तो बबीता ने अपने पिता महावीर फोगट द्वारा सिखाए गए मूल्यों को दर्शाते हुए एक शालीन जवाब दिया। उन्होंने कहा, 'नहीं, पापा ने एक चीज कहीं थी कि लोगों का प्यार और सम्मान चाहिए।'

23 दिसंबर, 2016 को रिलीज हुई दंगल का निर्देशन नितेश तिवारी ने किया था जिसमें आमिर खान ने न केवल महावीर फोगट की मुख्य भूमिका निभाई थी, बल्कि फिल्म के सह-निर्माता भी थे। इसमें महावीर फोगट की यात्रा को दर्शाया गया है, जो एक पूर्व पहलवान हैं जिन्होंने अपनी बेटियों गीता और बबीता फोगट को विश्व स्तरीय पहलवान बनने के लिए प्रशिक्षित किया।

बबीता फोगट का कुश्ती करियर शानदार रहा है। उन्होंने 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता और 2014 में स्वर्ण पदक जीता। 2012 में उन्होंने विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता जिससे खेल में उनका नाम और मजबूत हुआ। उन्होंने 2016 के रियो ओलंपिक में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया, हालांकि वह पोडियम पर जगह बनाने में विफल रहीं। 2019 में बबीता ने पेशेवर कुश्ती से संन्यास ले लिया और राजनीति में कदम रखा जिससे उनकी सार्वजनिक सेवा की यात्रा जारी रही।

750 कारतूस के साथ पैसेंजर ट्रेन में पकड़ी गई युवती

बलिया । राजकीय रेलवे पुलिस ने बुधवार को वाराणसी से बिहार के छपरा जा रही एक पैसेंजर ट्रेन से मिर्जापुर की एक महिला को साढ़े सात सौ कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने यह जानकारी दी है। राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) के बलिया थाना के प्रभारी सुभाष चंद्र यादव ने बताया कि राजकीय रेलवे पुलिस ने बुधवार पूर्वाह्न वाराणसी से बिहार के छपरा जा रही पैसेंजर ट्रेन (नंबर 05446) से बलिया रेलवे स्टेशन से मनिता सिंह (20) को साढ़े सात सौ कारतूस (315 बोर) के साथ गिरफ्तार किया और कारतूस ट्रॉली बैग में रखा हुआ था। थाना प्रभारी ने बताया कि मनिता सिंह ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि वह कारतूस बिहार के छपरा लेकर जा रही थी। पुलिस के अनुसार गाजीपुर जिले के करीमुद्दीनपुर थाना क्षेत्र के अंकित कुमार पाण्डेय एवं रोशन यादव ने उसे इसकी आपूर्ति करने को कहा था। यह महिला मिर्जापुर के राजगढ़ थाना क्षेत्र के नदीहार गांव की है। यादव ने बताया कि पुलिस विधिक कार्रवाई कर रही है तथा दो अन्य वांछितों को गिरफ्तार करने का प्रयास कर रही है। बलिया रेलवे स्टेशन से एक माह के अंदर कारतूस बरामदगी की यह दूसरी घटना है। राजकीय रेलवे पुलिस ने 28 सितंबर को बलिया रेलवे स्टेशन से 825 अवैध कारतूस एवं देशी तमंचे बरामद किए थे।

सरदार पटेल की 150वीं जयंती को राष्ट्रव्यापी समारोह के रूप में दो साल तक मनाएगा केंद्र

नई दिल्ली। केंद्र सरकार देश के प्रथम गृहमंत्री एवं उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के महान योगदान के सम्मान स्वरूप उनकी 150वीं जयंती को 2024 से 2026 तक राष्ट्रव्यापी समारोह के रूप में मनाएगी। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने बुधवार को एक्स पोस्ट में इस फैसले की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे मजबूत लोकतंत्रों में से एक भारत के लोकतंत्र की स्थापना के पीछे एक विजनरी के रूप में सरदार पटेल की स्थायी विरासत और कश्मीर से लक्षद्वीप तक भारत के एकीकरण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका अमिट है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार सरदार पटेल के महान योगदान के सम्मान स्वरूप उनकी 150वीं जयंती को 2024 से 2026 तक राष्ट्रव्यापी समारोह के रूप में मनाएगी। यह समारोह सरदार पटेल की उल्लेखनीय उपलब्धियों और एकता की भावना के प्रतीक का साक्षी होगा। उल्लेखनीय है कि सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नाडियाड में हुआ था। मोदी सरकार 2014 से 31 अक्टूबर को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाती आ रही है। पटेल को 550 से अधिक रियासतों को भारत संघ में विलय करने का श्रेय दिया जाता है।

पत्नी से विश्वासघात करना कानूनी अपराध : हाईकोर्ट

कोच्ची । केरल हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति ए बदरुद्दीन की एकल पीठ ने एक महत्वपूर्ण फैसला दिया है। पति ने अपनी पत्नी की सहमति के बिना पत्नी का सोना ज्वैलर के पास गिरवी रख दिया। पत्नी ने इसकी शिकायत की। केरल हाईकोर्ट ने इसे धारा 406 के तहत एक अपराध माना है। पत्नी की बिना सहमति से पति को यह अधिकार नहीं मिलता है, कि वह पत्नी की ज्वैलरी को गिरवी रख सके। अदालत ने विश्वासघात का दोषी मानते हुए पति को राहत देने से इनकार कर दिया है। पत्नी का आरोप था, उसने अपने जेवर पति को लाकर में रखने के लिए दिए थे। लेकिन पति ने पत्नी के जेवर एक निजी कंपनी में गिरवी रख दिए। पत्नी से ना तो सहमति ली ना ही इसकी जानकारी दी। पति ने जेवर गिरवी रखकर जो राशि हासिल की थी। उसका उपयोग अपने निजी कार्यों में किया। हाईकोर्ट ने पति को विश्वासघात करने का आरोपी माना है ।

वायु प्रदूषण से हर साल हो रहीं कोरोना से भी ज्यादा मौतें, लोग हैं अंजान

-एम्स दिल्ली के पूर्व डायरेक्टर डॉक्टर रणदीप गुलेरिया ने दी चेतावनी

नई दिल्ली। एम्स दिल्ली के पूर्व डायरेक्टर डॉक्टर रणदीप गुलेरिया ने चेतावनी दी है। यह चेतावनी उन्होंने प्रदूषण को लेकर दी है। ये कितना खतरनाक है, इसको लेकर गुलेरिया ने कहा है कि कोरोना महामारी की वजह से जितनी मौतें हुई, उससे कहीं ज्यादा हर साल सिर्फ प्रदूषण से हो रही हैं। उन्होंने कहा कि हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट में 2021 में कहा गया है कि दुनिया में करीब 80 लाख लोगों की वायु प्रदूषण से मौत हुई है। यह कोविड-19 के कारण मरने वाले लोगों की संख्या से कहीं ज्यादा है। हम वायु प्रदूषण के बारे में चिंतित नहीं हैं। वायु प्रदूषण कितना खतरनाक है, इसको लेकर उन्होंने कहा कि भारत के हालिया डेटा से पता चलता है कि पीएम 2.5 में केवल 10 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर की वृद्धि मौत की दर को काफी ज्यादा बढ़ा देती है। यह सांस और हृदय संबंधी समस्याओं के कारण होता है। वायु प्रदूषण फेफड़ों में सूजन पैदा करता है। सांस संबंधी समस्या होती है। मरीज कई बार आईसीयू या वेंटिलेटर पर पहुंच जाता है और इससे मृत्यु दर बढ़ जाती है।

गुलेरिया ने कहा कि जो लोग हृदय रोगी है...यह प्रदूषण हृदय की वाहिकाओं में सूजन का कारण बनता है और इससे दिल का दौरा पड़ने की आशंका बढ़ जाती है। सिर्फ हृदय और फेफड़ों की ही बात नहीं है, वायु प्रदूषण शरीर के किसी भी हिस्से को प्रभावित कर सकता है क्योंकि वायु प्रदूषकों के ये सूक्ष्म कण 2.5 माइक्रोन से कम होते हैं। जब ये रसायन फेफड़ों से शरीर में जाते हैं, तो कई अंगों में जा सकते हैं, जिससे दीर्घकालिक प्रभाव वाली बीमारियां हो सकती हैं, जैसे डिमेंशिया, तंत्रिका संबंधी समस्याएं, मधुमेह, मेटाबोलिक सिंड्रोम, ये सभी वायु प्रदूषण से जुड़े हुए हैं। गुलेरिया की ये चेतावनी ऐसे समय दी है जब मानसून की विदाई के साथ ही देश में प्रदूषण वाला मौसम दस्तक दे चुका है। दिल्ली में तो एयर क्वॉलिटी इंडेक्स 400 पार जा चुका है। इसका सीधा मतलब है कि हवा इतनी जहरीली हो गई है कि उसमें सांस लेना स्वास्थ्य के लिए बहुत ही खतरनाक है।

चीन के साथ समझौते को लेकर देश को विश्वास में ले सरकार: कांग्रेस

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गश्त को लेकर चीन के साथ एक समझौता होने की घोषणा का हवाला देते हुए बुधवार को कहा कि इस विषय पर सरकार को देश को विश्वास में लेना चाहिए। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह दावा भी किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार के दृष्टिकोण के कारण इस मामले के समाधान में अवरोध पैदा हुआ। भारत ने सोमवार को घोषणा की थी कि भारतीय और चीनी वार्ताकार पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गश्त के लिए एक समझौते पर सहमत हुए हैं।

रमेश ने एक बयान में कहा, ''मोदी सरकार की इस घोषणा को लेकर कई सवाल बने हुए हैं कि एलएसी पर गश्ती की व्यवस्था को लेकर चीन के साथ समझौता हो गया है। विदेश सचिव ने कहा है कि इस समझौते से सैनिकों की वापसी हो रही है और इन क्षेत्रों में 2020 में पैदा हुए गतिरोध का अंततः समाधान हो रहा है।'' उन्होंने कहा, ''हम आशा करते हैं कि दशकों में भारत की विदेश नीति को लगे इस झटके का सम्मानजनक ढंग से हल निकाला जा रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि सैनिकों की वापसी से पहले वही स्थिति बहाल होगी, जैसी मार्च 2020 में थी।''

रमेश ने दावा किया, ''यह दुखद गाथा पूरी तरह से चीन के संबंध में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नासमझी और भोलेपन का नतीजा है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में मोदी जी की चीन ने तीन बार भव्य मेजबानी की थी। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने चीन की पांच आधिकारिक यात्राएं कीं और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ 18 बैठकें कीं। इसमें उनके 64वें जन्मदिन पर साबरमती के तट पर बेहद

दोस्ताने अंदाज में झूला झूलना भी शामिल है।'' उन्होंने यह भी कहा कि भारत का पक्ष 19 जून, 2020 को तब सबसे अधिक कमजोर हुआ जब प्रधानमंत्री ने चीन को 'क्लीन चिट' देते हुए कहा था, ''ना कोई हमारी सीमा में घुस आया है, न ही कोई घुसा हुआ है।''

रमेश ने दावा किया, ''यह बयान गलवान में हुई झड़प के चार दिन बाद ही दिया गया था, जिसमें हमारे 20 बहादुर सैनिकों ने सर्वोच्च बलिदान दिया था। उनका यह बयान न सिर्फ हमारे शहीद सैनिकों का घोर अपमान था बल्कि इसने चीन की आक्रामकता को भी वैध ठहरा दिया। इसके कारण ही एलएसी पर गतिरोध के समय समाधान में बाधा उत्पन्न हुई।'' उन्होंने आरोप लगाया कि पूरे संकट पर मोदी सरकार के दृष्टिकोण को 'डीडीएलजे' यानी ''डिनाय' (इंकार करो), 'डिस्ट्रैक्ट' (ध्यान भटकाओ), 'लाय' (झूठ बोलो) और 'जस्टीफाई' (न्यायोचित ठहराओ) के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

रमेश ने यह भी कहा कि संसद को सीमा की चुनौतियों से निपटने के लिए सामूहिक संकल्प को प्रतिबिंबित करने के लिए चर्चा करने का कोई अवसर नहीं दिया गया, जबकि पिछली सरकारों में इस तरह के गंभीर मुद्दों पर चर्चा और बहस की परंपरा रही है। उन्होंने कहा, ''अब जब चीन के साथ यह समझौता हुआ है तब सरकार को भारत के लोगों को विश्वास में लेना चाहिए और महत्वपूर्ण सवालों के जवाब देने चाहिए।''

रमेश ने सवाल किया, ''क्या भारतीय सैनिक डेपसांग में हमारी दावे वाली लाइन से लेकर 'बॉटलनेक जंक्शन' से आगे के पांच गश्ती बिंदुओं तक गश्त करने में सक्षम होंगे जैसा कि वे पहले करने में सक्षम थे? क्या हमारे सैनिक डेमचोक में उन तीन गश्ती बिंदु तक जा पाएंगे जो चार साल से अधिक समय से हमारे दायरे से बाहर हैं?'' उन्होंने यह भी पूछा, ''क्या हमारे सैनिक पैंगोंग त्सो में फिंगर तीन तक ही सीमित रहेंगे जबकि पहले वे फिंगर आठ तक जा सकते थे? क्या हमारे गश्ती दल को गोगरा-हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र में उन तीन गश्ती बिंदु तक जाने की छूट है, जहां वे पहले जा सकते थे?'' कांग्रेस नेता ने कहा, ''क्या भारतीय चरवाहों को एक बार फिर चुशुल में हेलमेट टॉप, मुक्पा रे, रेजांग ला, रिनचेन ला, टेबल टॉप और गुरुंग हिल में पारंपरिक चरागाहों तक जाने का अधिकार दिया जाएगा? क्या वे 'बफर जोन' जिन्हें हमारी सरकार ने चीनियों को सौंप दिए थे, जिसमें रेजांग ला में युद्ध नायक और मरणोपरांत परमवीर चक्र विजेता मेजर शैतान सिंह का स्मारक स्थल भी शामिल था, अब अतीत की बात हो गए हैं?''

रक्षा मंत्री अगले माह जाएंगे रूस, पहले स्टेल्थ फिगेट तुशील को करेंगे कमीशन

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह इस साल के अंत में दिसंबर महीने में रूस की यात्रा करेंगे। इसका उद्देश्य उनके द्वारा रूस के केलिंग्राद स्थित यानतर शिपयार्ड में भारतीय नौसेना के लिए बनाए जा रहे दो में से पहले स्टेल्थ फ्रिगेट आईएनएस तुशील को बल के जंगी बेड़े में कमीशन कराना है। दोनों देशों के बीच ऐसे कुल चार युद्धपोतों को लेकर करीब 2.5 बिलियन डॉलर का एक अंतर सरकारी समझौता हुआ था। इनमें से दो रूस में और दो भारत के गोवा शिपयार्ड में बनाए जा रहे हैं। मालूम हो कि रक्षा मंत्री की यह रूस यात्रा पीएम मोदी की रूस यात्रा के बाद होगी। सरकारी सूत्रों ने बताया कि पहले रक्षा मंत्री की रूस यात्रा नवंबर महीने में होनी थी। लेकिन मास्को के अनुरोध पर यात्रा कार्यक्रम को पुनर्निर्धारित किया गया है। अपनी रूस यात्रा के दौरान रक्षा मंत्री दोनों देशों के रक्षा संबंधों के मामले पर भी चर्चा करेंगे।

देरी से हो रही डिलीवरी

रूस के साथ 2018 में हुए समझौते के तहत दोनों युद्धपोतों को रूस द्वारा पहले भारत को वर्ष-2022 के अंत तक सौंपना था। लेकिन इसमें कोरोना महामारी और बाद में यूक्रेन युद्ध की वजह से पेमेंट सिस्टम की वजह से देरी हुई है। इस श्रेणी के दूसरे पोत तमाल की रूस द्वारा भारत को अगले साल की शुरुआत में डिलीवरी कर दी जाएगी। युद्ध के चलते एस-400 सिस्टम की आपूर्ति में भी देरी हो रही है। चार में से दो युद्धपोत रूस में और दो भारत के गोवा शिपयार्ड में मास्को के तकनीकी सहयोग से बनाए जा रहे हैं।

सांप्रदायिकता के खिलाफ मैं डटकर खड़ा रहूंगा: लालू प्रसाद यादव

-देश की मिट्टी में सबकी महक और आजादी में सबका योगदान

पटना (एजेंसी)। इस देश की मिट्टी में सबकी महक और आजादी में सबका योगदान है। मैं प्रत्येक व्यक्ति को भरोसा दिलाता हूं कि जब तक मेरी सांस है, मैं बिहार को सांप्रदायिकता की आग में झोंकने वाले हर व्यक्ति के सामने डट कर खड़ा रहूंगा। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने बुधवार को कही। उल्लेखनीय है कि हाल ही में अररिया के सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने एक कार्यक्रम में कहा था कि अगर अररिया में रहना है तो हिन्दू बनना होगा। हिन्दू स्वाभिमान यात्रा के तहत कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने भी शिरकत की थी। इस बयान का एक वीडियो अब वायरल हो रहा है। पत्रकारों द्वारा केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह की हिन्दू स्वाभिमान यात्रा और सांसद प्रदीप कुमार सिंह के एक बयान से जुड़े प्रश्न के जवाब में राजद अध्यक्ष लालू यादव ने कहा कि गिरिराज सिंह के राज में और नीतीश कुमार के राज में कोई अंतर नहीं है। उन्होंने कहा, गिरिराज सिंह की आदत है, इसी तरह की बात बोलते रहता है। हिंदू-मुस्लिम सब रहेगा। दंगा फसाद कराने से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर में पूर्व केंद्रीय मंत्री लालू यादव ने सवालिया लहजे में कहा कि हम लोगों के रहते दंगा-फसाद कैसे करा देगा? तेजस्वी यादव कह रहे हैं अगर कुछ भी हुआ तो इसके जिम्मेदारी सीएम नीतीश कुमार हैं। इस पर लालू यादव ने कहा कि वह ठीक बोले हैं। इससे पहले बिहार में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने सांसद प्रदीप सिंह के बयान को लेकर कहा था कि भाजपा के एक सांसद ने बिहार में माहौल बिगाड़ने के लिए भड़काऊ बयान दिया और आज ही उस सांसद को नीतीश कुमार ने अतिरिक्त सुरक्षा मुहैया करा दी।

सुप्रीम कोर्ट आज तय करेगा- चुनाव में किसकी होगी घड़ी

मुंबई (एजेंसी)। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी यानी एनसीपी अब दो गुटों में बंटी है। एक का नेतृत्व शरद पवार कर रहे हैं और दूसरे का उनके भतीजे अजीत पवार। दोनों नेताओं के बीच विवाद के चलते चुनाव आयोग ने आयोग ने एनसीपी का 'घड़ी' चुनाव चिह्न भी अजित पवार नीत गुट को आवंटित कर दिया था। 19 मार्च को शीर्ष अदालत ने शरद पवार गुट को अपने नाम के रूप में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) का इस्तेमाल करने की अनुमति दी थी और उसे चुनाव चिह्न 'तुरहा बजाता व्यक्ति' आवंटित किया था। इसके बाद उच्चतम न्यायालय ने शरद पवार गुट की उस याचिका पर एक आदेश पारित किया था, जिसमें अजित पवार गुट को चुनाव में 'घड़ी' चिह्न का इस्तेमाल करने से रोकने का अनुरोध किया गया था। शीर्ष अदालत ने कहा था कि अजित पवार गुट राजनीतिक लाभ के लिए शरद पवार के नाम और तस्वीर का इस्तेमाल नहीं कर सकेगा। अब एक बार फिर यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा है। याचिका में कहा गया है कि दोनों दलों को घड़ी चुनाव चिन्ह आवंटित नहीं किया जाना

चाहिए। इस सुनवाई कर 24 अक्टूबर को होगी।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि वह शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी की उस याचिका पर 24 अक्टूबर को सुनवाई करेगी, जिसमें महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजित पवार की अगुवाई वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के 'घड़ी' चुनाव चिह्न का इस्तेमाल करने पर आपत्ति जताई गई है। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्ज्वल भुइयां की पीठ के समक्ष इस मामले की तत्काल सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया गया। मंगलवार को शरद पवार गुट की ओर से पेश वकील ने पीठ को सूचित किया कि मामला 22 अक्तूबर को ही सूचीबद्ध किया जाना था, लेकिन वाद-सूची में इसका जिक्र नहीं है। इसके बाद पीठ ने इसे 24 अक्तूबर को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया।

पर्चा दाखिल कर चुके

अजित पवार गुट की पैरवी कर रहे वकील ने कहा कि पार्टी के कुछ उम्मीदवार विधानसभा चुनाव के लिए पर्चा दाखिल कर चुके हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रतिद्वंद्वी गुट ने 'घड़ी' चुनाव चिह्न पर कब्जा करने के लिए यह याचिका दायर की है। पीठ ने कहा कि वह इस मामले पर 24 अक्टूबर को सुनवाई करेगी। पीठ ने अजित गुट से तब तक जवाब देने को कहा है। दरअसल, शरद पवार ने निर्वाचन आयोग के 6 फरवरी के उस आदेश के खिलाफ शीर्ष अदालत का रुख किया है, जिसके तहत अजित पवार के नेतृत्व वाले गुट को असली एनसीपी के रूप में मान्यता दी गई थी।

सपा प्रमुख अखिलेश के जन्मदिन पर लगे पोस्ट से यूपी की राजनीति में हलचल

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव का 23 अक्टूबर को अपना जन्म दिन मना रहे हैं। इस अवसरस पर लगे लखनऊ स्थित सपा कार्यालय के बाहर एक पोस्टर से राजनीति में हलचल मच गई है। यह पोस्टर संत कबीर नगर के सपा नेता जयराम पांडे द्वारा लगाया गया है, जिसमें अखिलेश यादव को 2027 में सत्ताईस का सत्ताधीश बताया गया है। पोस्टर में लिखा है- 2024 में बरसा जनता का आशीष, दीवारों पर लिखा है, कौन होगा सत्ताईस का सत्ताधीश। पोस्टर में अखिलेश यादव को संस्कृत में शुभकामनाएं दी गई है लिखा है-तुम 100 साल जियो, तुम्हारा जीवन उद्देश्यपूर्ण और खुशियों से भरा रहे। यह पोस्टर सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है और राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बना गया है। यह पहली बार नहीं है जब सपा आफिस के बाहर लगे पोस्टर सुर्खियों में आए हैं। इससे पहले भी अखिलेश को देश का भावी पीएम और उनकी पत्नी डिंपल यादव को यूपी का मुख्यमंत्री बताने वाले पोस्टर लगाए जा चुके हैं। जयराम पांडे मेहंदावल विधानसभा सीट से सपा की टिकट के दावेदार हैं और उन्होंने यह पोस्टर अखिलेश यादव के समर्थन में लगवाया है, जो आगामी चुनावों में सपा की आकांक्षाओं को दर्शाता है।

संसद में वायनाड का एक नहीं, दो सांसद होंगे: राहुल गांधी

वायनाड (केरल), (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बुधवार को कहा कि वायनाड से उनकी बहन प्रियंका गांधी वाद्रा के निर्वाचन के बाद यह देश का इकलौता ऐसा निर्वाचन क्षेत्र होगा जिसके संसद में एक नहीं, बल्कि दो सांसद होंगे।

उत्तर प्रदेश के रायबरेली से लोकसभा सदस्य ने कहा कि वह वायनाड के अनौपचारिक रूप से सांसद बने रहेंगे। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि प्रियंका गांधी वायनाड से आधिकारिक सांसद होंगी, जबकि वह अनौपचारिक रूप से सांसद होंगे। प्रियंका गांधी के नामांकन के मद्देनजर निकाले गए रोड शो के बाद कलपेट्टा में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''एक संसद का आधिकारिक सदस्य है और दूसरा संसद का अनौपचारिक सदस्य है। दोनों वायनाड के लोगों की रक्षा के लिए मिलकर काम करेंगे।''

वर्ष 2019 से 2024 तक वायनाड लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले राहुल गांधी का कहना था कि जैसे जिले के लोगों ने उनकी रक्षा की और उनका खयाल रखा, जब उन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी, वैसे ही उन्हें उनकी बहन का भी खयाल रखना चाहिए। उन्होंने कहा, ''मेरे हाथ में जो राखी है, वह मेरी बहन ने पहनाई है। जब तक वह टूट न जाए, मैं उसे नहीं उतारता। यह एक भाई द्वारा अपनी बहन की रक्षा करने का प्रतीक है। इसलिए मैं वायनाड के लोगों से मेरी बहन का खयाल रखने और रक्षा करने का अनुरोध करता हूं। वह अपनी पूरी ऊर्जा वायनाड की

समस्याओं में और आपकी रक्षा में लगा देंगी।''उन्होंने आगे कहा कि वायनाड से ''अनौपचारिक सांसद'' होने के नाते वह यहां आते रहेंगे और लोगों को हो रही समस्याओं के समाधान को लेकर हस्तक्षेप करेंगे। राहुल गांधी ने आगे कहा कि वह अपनी बहन को एक या दो वाक्यों में परिभाषित कर सकते हैं।

काले हिरण को मारने के दोषी ठहराए गए सलमान बार बार कह रहे हैं मैंने नहीं मारा

मुंबई (एजेंसी)। फिल्म अभिनेता सलमान खान का एक वीडियो वायरल हो रहा है। जिसमें वे बार बार कह रहे हैं कि मैंने हिरण को नहीं मारा। जबकि इस मामले में सलमान खान को गिरफ्तार किया गया, लेकिन उन्हें जल्दी ही जमानत मिल गई। सुनवाई के दौरान सलमान को दोषी ठहराया गया, जिसके बाद उन्होंने फिर से जमानत हासिल की। इस मामले के बाद से लॉरेंस बिश्नोई गैंग सलमान खान के लिए एक गंभीर खतरा बन गया है। अभिनेता को लगातार जान से मारने की धमकियां मिल रही हैं, जिसके चलते उनकी सुरक्षा को बढ़ा दिया गया है। खासकर बाबा सिद्दिकी की हत्या के बाद सलमान की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

वायरल वीडियो के बाद, नेटिजन्स ने सलमान खान के काले हिरण मामले में शामिल होने की सच्चाई पर चर्चा शुरू कर दी है। कई फैंस अभिनेता का बचाव करते हुए उन्हें निर्दोष बताते हैं और इस मामले की पुनर्विचार की मांग कर रहे हैं। सलमान खान का यह मामला 26 सालों से चल रहा है, और अब तक इसे लेकर कोई अंतिम निर्णय नहीं आया है। इस लंबी कानूनी लड़ाई ने न केवल सलमान के जीवन को प्रभावित किया है, बल्कि उनके करियर पर भी असर डाला है। हालांकि, सलमान खान का यह कहना कि उन्होंने काले हिरण को नहीं मारा, उनके फैंस के लिए उम्मीद की किरण बना हुआ है। उनके समर्थक मानते हैं कि सच्चाई अंततः सामने आएगी, और अभिनेता को न्याय मिलेगा। यह वीडियो साल 2008 का है और हाल ही में रेडिट पर साझा किया गया है। इस क्लिप में सलमान स्पष्ट रूप से कहते हैं, यह एक लंबी कहानी है और मैंने काले हिरण को नहीं मारा। सलमान खान के पिता, सलीम खान, ने भी हाल ही में इस मामले पर अपनी राय दी थी। उन्होंने कहा, वह एक कॉकरोच नहीं मार सकता, तो काला हिरण कैसे मार सकता है? उनका यह बयान इस बात पर जोर देता है कि अगर सलमान ने कुछ गलत नहीं किया है, तो माफी मांगने का कोई कारण नहीं है।

जनसंख्या नियंत्रण को लेकर उत्तर-दक्षिण भारत में अपना-अपना राग

-उत्तर भारतीय कर रहे कानून की मांग तो दक्षिणी राज्यों के मुख्यमंत्री जनसंख्या बढ़ाने पर दे रहे जोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में जनसंख्या नियंत्रण को लेकर उत्तर-दक्षिण भारत में अलग-अलग राग अलाप रहे हैं। एक ओर जहां उत्तर भारतीय जनसंख्या नियंत्रण कानून लाये जाने की मांग कर रहे हैं तो दूसरी ओर दक्षिण भारत के दो राज्यों के मुख्यमंत्री अपनी जनता को ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने की सलाह दे रहे हैं। बता दें कि आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने राज्य की बुजुर्ग होती आबादी को देखते हुए पिछले हफ्ते कहा था कि लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा था कि उनकी सरकार इसे प्रोत्साहित करने के लिए कानून लाने की योजना भी बना रही है। इसके बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने एक पुराने आशीर्वाद का जिक्र करते हुए लोगों को 16 बच्चे पैदा करने की सलाह और शुभकामना दे डाली। दरअसल दोनों मुख्यमंत्री यह सलाह इसलिए दे रहे हैं क्योंकि जल्द ही देश में संसदीय सीटों का नये सिरे से परिसीमन होना है। इस परिसीमन के मुताबिक दस लाख लोगों की आबादी पर एक सांसद होगा।

राष्ट्रीय राजनीति उत्तर भारत पर केंद्रित होने का सता रहा डर

दक्षिणी राज्यों के नेताओं को परिसीमन के बाद राष्ट्रीय राजनीति पूरी तरह से उत्तर भारत पर केन्द्रित होने का डर सता रहा है। इसका कारण है कि दक्षिणी राज्यों ने जनसंख्या नियंत्रण के मामले में तो बेहतरीन प्रदर्शन कर दिया लेकिन अब इसकी वजह से वहां प्रजनन दर कम हो गयी है जिससे उन्हें डर है कि यदि आबादी के लिहाज से संसदीय सीटों का निर्धारण हुआ तो देश की राष्ट्रीय राजनीति पूरी तरह उत्तर भारत केंद्रित हो जायेगी। दक्षिणी राज्यों की चिंता का बड़ा कारण जल्द ही होने वाला लोकसभा सीटों का परिसीमन भी है। यह कार्य जनगणना के तुरंत बाद होगा। हम आपको बता दें कि देश में वर्तमान में निर्वाचन क्षेत्र की सीमाएँ जनसंख्या के अनुसार तय की जाती हैं। यदि जन्म दर स्थिर रहती है तो आंध्र प्रदेश में संसद सीटों की संख्या 25 से घटकर 20, कर्नाटक में 28 से 26, केरल में 20 से 14, तमिलनाडु में 39 से 30 और तेलंगाना में 17 से 15 तक हो जाने की उम्मीद है। वहीं दूसरी ओर, उत्तर के राज्यों की जनसंख्या अधिक होने से उनके निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या में वृद्धि होगी, जिससे उन्हें संसद में बड़ी आवाज मिलेगी। इसके अलावा यदि संसद की सीटें बढ़ाने का फैसला होता है तो भी उत्तरी राज्यों को ही ज्यादा फायदा होगा क्योंकि दक्षिण में जनसंख्या अनुपात के हिसाब से कम सीटें आएंगी।

दो से ज्यादा बच्चे वाला व्यक्ति ही स्थानीय निकाय चुनाव लड़ पायेगा

जहां तक मुख्यमंत्रियों के बयान की बात है तो आपको बता दें कि चंद्रबाबू नायडू ने तो यहां तक कह दिया है कि दो से ज्यादा बच्चे वाला व्यक्ति ही स्थानीय निकाय चुनाव लड़ पायेगा। बताया जा रहा है कि पड़ोसी राज्य तेलंगाना में भी ऐसा कानून लाने की मांग हो रही है ताकि लोग ज्यादा बच्चे पैदा करें।

दक्षिण भारत में बुजुर्ग आबादी बढ़ेगी

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज (आईआईपीएस) द्वारा तैयार इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 के अनुसार, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना में बुजुर्गों की आबादी अधिक है। रिपोर्ट कहती है कि 2021 और 2036 के बीच इन राज्यों में बुजुर्गों की दर में बहुत अधिक तेजी से वृद्धि होगी। माना जा रहा है कि केरल की जनसंख्या में बुजुर्गों की हिस्सेदारी 2021 की 16.5 फीसदी से बढ़कर 2036 में 22.8 फीसदी हो जाएगी। तमिलनाडु में 13.7 फीसदी से बढ़कर 2036 में 20.8 फीसदी हो जाएगी, आंध्र प्रदेश में 2021 के 12.3 फीसदी से बढ़कर 2036 में 19 फीसदी हो जाएगी, कर्नाटक में बुजुर्गों की आबादी

11.5 फीसदी से बढ़कर 2036 में 17.2 फीसदी हो जाएगी और तेलंगाना में 2021 के 11 फीसदी से बढ़कर 2036 में 17.1 फीसदी हो जाएगी। 15 साल की इस अवधि में जनसंख्या में बुजुर्गों का अनुपात दक्षिण में 6-7 फीसदी बढ़ जाएगा जबकि उत्तर में यह लगभग 3-4 फीसदी होगा।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**